दैनिक
सत्ता सुधार
जनता के साथ जनता की आवाज
सागर ■ मंगलवार 19 नवंबर 2024 ■ वर्ष -02 ■ अंक-22 ■ पृष्ठ-16 ■ मूल्य-₹03

सुविचार

अच्छे लोगों का हमारे जीवन में आना हमारी किस्मत है और उन्हें संभाल के रखना हमारा हुनर है।

अयोध्या में रामलला का तिलकोत्सव

उत्सव में चंपत राय ने निभाई महाराजा दशरथ की भूमिका

सत्ता सुधार ■ अयोध्या

अयोध्या के रामसेवकपुरम में आयोजित भगवान श्रीराम का तिलकोत्सव समारोह वैदिक मंत्रोच्चार के बीच सम्पन्न कराया गया। उत्सव में वर पक्ष से अयोध्या के मेयर और वधू पक्ष से जनकपुर से नेपाल के मधेश राज्य के

वैदिक रीति रिवाज से सम्पन्न हुआ समारोह

शामिल हुए नेपाल राज्य के मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री सतीश कुमार सिंह अपने छह कैबिनेट मंत्रियों के साथ शामिल हुए। वैदिक रीति रिवाज के साथ तिलकोत्सव सम्पन्न हुआ। इस दौरान लग्न पत्रिका सौंपी गई। उत्सव में राम मंदिर ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने महाराजा दशरथ की भूमिका निभाई। इस दौरान महिलाओं ने तिलकोत्सव का गीत गाया।

राम मंदिर के शिखर की आठ लेयर तैयार

प्रथम तल का काम पूरा, दरवाजे भी तैयार

प्रबंधन बोला-161 फीट ऊंचा होगा शिखर

इधर, यूपी के अयोध्या में दीपावली व छठ पर्व के दौरान छुट्टी पर गए मजदूरों के लौटने के बाद राम मंदिर निर्माण कार्य की गति तेज हो गई है। राम मंदिर के शिखर का काम दिन-रात चल रहा है। शिखर की आठवीं लेयर का काम पूरा हो चुका है। राम मंदिर का शिखर 161 फीट ऊंचा होगा, शिखर कुल 29 लेयर में तैयार होगा। राम मंदिर निर्माण में इस समय दो हजार से अधिक कारीगर जुटे हैं। शिखर निर्माण में अलग से 200 कुशल कारीगरों को लगाया गया है। प्रथम तल पर रामदरबार को आकार देने का काम भी पूरा हो चुका है। प्रथम तल पर अब कोई काम शेष नहीं रहा। प्रथम तल के सभी दरवाजों का भी निर्माण हो गया है। प्रथम तल पर 14 दरवाजों लगाए जाएंगे। दरवाजों की फिटिंग का काम दिसंबर में किया जाएगा।

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव: सीएम डॉ. मोहन यादव बोले

कहा- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बदल रहा पूरा देश

जब हम बोलते हैं जय श्रीराम तो जल जाती है दुश्मनों की छाती

हमने लाड़ली बहना की बात की तो मध्यप्रदेश में भी कांग्रेसियों ने जनता में भ्रम फैलाया

सत्ता सुधार ■ भोपाल

मध्यप्रदेश के सीएम डॉ. मोहन यादव ने सोमवार को महाराष्ट्र में महायुति के समर्थन में पांच रोड शो और जनसभाओं में चुनावी हुंकार भरी। मुंबई में कलिना विधानसभा क्षेत्र में महायुति प्रत्याशी अमरजीत के समर्थन में जनसभा को संबोधित करते हुए सीएम ने कहा कि यह केवल अमरजीत का चुनाव नहीं है, बल्कि हर कार्यकर्ता को अमरजीत बनकर काम करना होगा, तभी हमारी जीत सुनिश्चित होगी। मुख्यमंत्री ने जय श्री राम के नारे से सभा का उत्साह बढ़ाते हुए विपक्ष पर तंज कसा। उन्होंने कहा कि जैसे ही हम जय श्री राम बोलते हैं, दुश्मनों की छाती जल जाती है। उनके भीतर का भ्रम टूटने लगता है। ऐसा लगता है कि उनके अंतर्मन में उठने वाले भाव के ऊपर एकदम से हथौड़ा पड़ता है। हम चाहते हैं कि यह और जोर से हो। मोहन यादव ने महाराष्ट्र की धरती को छत्रपति शिवाजी महाराज की जन्मस्थली और बालासाहेब ठाकरे की कर्मस्थली बताते हुए कहा कि यह वही मुंबई है, जिसका शरीर महाराष्ट्र का और आत्मा उत्तर भारतीयों की है। यही समय है, सही समय है, जब हमें अपने संकल्प को पूरा करना है। सीएम ने कहा कि आज के इस बदलते दौर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पूरा देश बदल रहा है। मुझे इस बात का गर्व है। इस बदलते दौर में हम मुंबई को भूले नहीं है। इनके समय में ताज होटल में यहां गोलियां चल रही थी, आतंकवादी हमले हो रहे थे और पाकिस्तान में दिवाली मन रही थी। लेकिन आज हम सशक्त और मजबूती के साथ जवाब देने के लिए तैयार रहते हैं। मोदी के नेतृत्व में मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ पूरा देश झूम रहा है कमल के फूल के साथ तो महाराष्ट्र कैसे पीछे रह सकता है।

न थकने न रुकने वाली मुंबई नगरी

सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा कि ये छत्रपति शिवाजी महाराज की जन्मस्थली और हिंदुत्व के नायक बालासाहेब ठाकरे की कर्मस्थली है। ये कभी ना थकने और कभी न रुकने वाली मुंबई नगरी है। जब मैं इन सारे चिन्हों को देखता हूं तो उत्साह से भर जाता हूं। इन चारों चिन्हों में हमारी गौरवशाली विरासत छिपी हुई है।

लाड़ली बहना योजना पर फैलाया भ्रम

हमने मध्यप्रदेश में अभी लाड़ली बहनाओं को 1250 ही दिए आप तो और आगे बढ़ गए 1500 पहले ही दे दिए। अब तो 2100 रुपए देने वाले हैं। माता-बहनों के हाथ में पैसा आए तो उस रुपए का एक-एक पैसा सदुपयोग होता है। लाड़ली बहनाओं के माध्यम से माता-बहनों के नारी सशक्तिकरण की सबसे बड़ी योजना है। हमने जब लाड़ली बहना की बात की तो मध्यप्रदेश में वहां भी ये कांग्रेस और इनके सहयोगी भ्रम फैलाने में आगे थे।

जो राम के नहीं वो काम के नहीं...

सीएम ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि कांग्रेस अब डूबता जहाज है। मेरे अपने कई लोग गलती से कांग्रेस में चले गए। अब आज वो सर फोड़ रहे हैं कि गलती से हम कहां फंस गए। भगवान राम के मामले में भी कांग्रेस की पोल खुल चुकी है। सनातन का विरोध कांग्रेस के चरित्र में रहा है। इनके लिए हम एक ही नारा लगाते हैं जो राम के नहीं वो काम के नहीं। विपक्ष के नेता राहुल गांधी महाराष्ट्र में घूम रहे हैं, लेकिन आज तक अयोध्या में भगवान राम के दर्शन करने तक नहीं गए। प्रभु श्री राम से इतनी घृणा क्यों है कांग्रेस को इसका जवाब तो देना पड़ेगा।

ब्रीफ न्यूज

कंगना की फिल्म इमरजेंसी 17 जनवरी को होगी रिलीज

नई दिल्ली। अभिनेत्री व भाजपा सांसद कंगना रनौत ने सोमवार को अपनी बहुप्रतीक्षित फिल्म इमरजेंसी के 17 जनवरी को सिनेमाघरों में रिलीज होने की घोषणा की। अभिनेत्री व फिल्म निर्माता ने एक महीने पहले कहा था कि फिल्म को सीबीएफसी से सेंसर प्रमाण पत्र मिल गया है।

लॉरेंस का भाई अनमोल अमेरिका में गिरफ्तार

नई दिल्ली। गैंगस्टर लॉरेंस के भाई अनमोल की अमेरिका में गिरफ्तारी हो गई है। कैलिफोर्निया में उसे गिरफ्तार किया गया है। अनमोल पर सलमान खान के घर फायरिंग कराने का आरोप है। सिंगर सिद्धू मूसेवाला के मर्डर में भी अनमोल का नाम आया था। दिल्ली और मुंबई पुलिस ने अभी तक गिरफ्तारी की पुष्टि नहीं की है।

पाथेर पांचली की उमा दासगुप्ता का हुआ निधन

नई दिल्ली। मनोरंजन जगत से इस वक्त एक दिल तोड़ने वाली खबर सामने आई। फिल्मी दुनिया के दिग्गज निर्देशक रहे सत्यजीत रे की कल्ट मूवी पाथेर पंचाली की एक्ट्रेस उमा दास गुप्ता ने 84 साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कह दिया है। उमा ने 69 साल पहले आई इस मूवी में दुर्गा रॉय का किरदार निभाकर रातोंरात शोहरत हासिल की थी।

दिल्ली-एनसीआर में शामिल राज्य सरकार बंद करें 12वीं तक स्कूल

- प्रदूषण पर सुप्रीम सख्ती: बंद करने पर तत्काल लें फैसला
- अदालत की दो टूक-हमसे पूछे बिना प्रतिबंध मत हटाना
- पांचवें दिन प्रदूषण का स्तर खतरनाक कैटेगरी में रिकॉर्ड

एजेंसी ■ नई दिल्ली

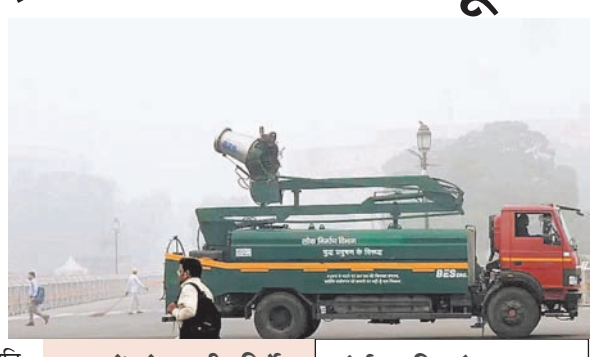

सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को दिल्ली-एनसीआर रीजन में सरकारों को निर्देश दिया है कि प्रदूषण की गंभीर स्थिति देखते हुए 12वीं तक के स्कूल बंद करने पर फैसला लें। एक्यूआई का स्तर नीचे लाने के लिए ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान स्टेज 3 और स्टेज 4 के सभी जरूरी प्रतिबंधों को लागू किया जाए। इसी मुद्दे पर सोमवार सुबह जस्टिस अभय एस ओका और जस्टिस ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की बेंच ने केंद्र सरकार से पूछा कि स्टेज 3 की पाबंदियां लागू करने में आपने देरी क्यों की। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि आप हमारी इजाजत के बगैर ग्रेप स्टेज 4 से नीचे नहीं आएंगे। भले ही एक्यूआई 300 से नीचे ही क्यों ना आ जाए। कोर्ट ने 12वीं तक के फिजिकल क्लासेस बंद करने पर भी जल्द फैसला लेने को कहा।

सरकारों को 5 सुप्रीम निर्देश

- दिल्ली, हरियाणा और यूपी राज्य सरकारें स्टेज 4 के प्रतिबंध तुरंत लगाएं।
- ये राज्य एक टीम बनाई जाए जो स्टेज 4 के लागू होने पर नजर रखे।
- अगर किसी प्रतिबंध का उल्लंघन किया जाता है, तो मैकेनिज्म बनाया जाए।
- जब तक हम अगला आदेश नहीं देते, तब तक स्टेज 4 लागू रहना चाहिए।
- 10वीं-12वीं की क्लास अभी लग रही है, स्कूल बंद करने पर फैसला लें।

कोर्ट रूम किसने क्या कहा

- **जस्टिस एएस ओका**-हम यह देखना चाहते हैं कि दिल्ली सरकार स्टेज 3 कैसे लागू कर रही है।
- **केंद्र सरकार**- जब एक्यूआई 300 से 400 के बीच होता है तो स्टेज 3 लागू कर दी जाती है।
- **कोर्ट**-जब यह इस रेंज में पहुंच गया तो स्टेज 3 लागू कर दिया जाता है। आप 3 दिन की देरी कैसे कर सकते हैं।
- **सुप्रीम कोर्ट**-स्टेज 2 कब लागू की गई थी। यह 300 के पार कब पहुंचा।
- **केंद्र सरकार**- 300 के पार 12 नवंबर को गया।
- **सुप्रीम कोर्ट**-तो आपने तीन दिन इंतजार किया।
- **केंद्र**-मौसम विभाग ने बताया था कि नीचे आएगा।
- **सुप्रीम कोर्ट**-ऐसी गंभीर परिस्थितियों में कोई मौसम विभाग पर भरोसा कर सकता है। आप 3 दिन देरी कैसे कर सकते हैं।

नागरिकों को चाहिए प्रदूषण-मुक्त वातावरण

सुप्रीम कोर्ट ने राज्य और केंद्र सरकारों को अनुपालन रिपोर्ट दाखिल करने का भी निर्देश दिया गया है। कोर्ट ने कहा है कि यह सरकारों का संवैधानिक दायित्व है कि नागरिक प्रदूषण-मुक्त वातावरण में रहें। शीर्ष न्यायालय ने ग्रेप-3 और ग्रेप-4 के सभी प्रावधानों के अलावा सरकार को निर्देश दिया है कि स्थिति सामान्य करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जाएं।

गैस चैंबर बनी दिल्ली

दिल्ली में खतरनाक प्रदूषण ने स्वास्थ्य की इमरजेंसी लगा दी है। लोग जहरीली हवा में सांस ले रहे हैं। सोमवार को एक्यूआई 494 दर्ज किया, जोकि अति गंभीर श्रेणी में है।

छिंदवाड़ा, शहडोल-सिंगरौली एसपी को हटाया

दस आईपीएस का तबादला: शुक्ला नर्मदापुरम आईजी, इरशाद पुलिस महानिरीक्षक विसबल

सत्ता सुधार ■ भोपाल

मध्यप्रदेश के पुलिस महकमे में बड़ा फेरबदल हुआ है। सरकार ने 10 आईपीएस पुलिस अफसरों का तबादला कर दिया है। आदेश के अनुसार तीन जिलों के एसपी भी हटाए गए हैं। नर्मदापुरम आईजी का भी ट्रांसफर कर दिया गया है। गृह विभाग की ओर से इसे लेकर आदेश जारी कर दिया है। राज्य सरकार ने प्रदेश के शहडोल, सिंगरौली और छिंदवाड़ा में नए पुलिस कप्तानों को तैनात किया गया है। इनमें मनीष खत्री को सिंगरौली एसपी, रामजी श्रीवास्तव शहडोल एसपी और अजय पांडेय को छिंदवाड़ा का एसपी बनाया है। जबकि नर्मदा पुरम संभाग के आईजी इरशाद वली खान को पुलिस मुख्यालय में बतौर आईजी विसबल तैनात किया गया हैं। साथ ही पीएचक्यू में पदस्थ एडीजीपी मीनाक्षी शर्मा को एडीजीपी सामुदायिक पुलिसिंग एवं आरटीआई पीएचक्यू भोपाल भेजा गया है। आईजी एसएएफ ग्वालियर मिथिलेश कुमार शुक्ला को आईजी नर्मदापुरम बनाया है। डीआईजी जबलपुर तुषारकांत विद्यार्थी को डीआईजी पुलिस मुख्यालय भोपाल पदस्थ किया है। डीआईजी एसएएफ जबलपुर अतुल सिंह को डीआईजी जबलपुर रेंज भेजा है। साथ में डीआईजी एसएएफ का अतिरिक्त चार्ज भी सौंपा है। गृह विभाग के आईपीएस अधिकारियों के अलावा राज्य पुलिस सेवा के दो अधिकारियों को भी इधर से उधर किया है। इसमें पीएचक्यू में पदस्थ एआईजी संदीप भूरिया को एडिशनल एसपी नरसिंहपुर में और कार्यवाहक एसडीओपी खजुराहो जिला छतरपुर डॉ. सलील शर्मा को डिप्टी कमांडेंट 9वीं बटालियन रीवा पदस्थ किया गया है।

जी-20 मीटिंग में शामिल होने पीएम मोदी पहुंचे ब्राजील

नई दिल्ली। ब्राजील में सोमवार से 19वीं जी-20 समिट शुरू हो गई है। इसमें शामिल होने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रियो डि जेनेरियो पहुंचे। यहां भारतीय समुदाय के लोगों ने संस्कृत मंत्रों से उनका स्वागत किया। समिट दो दिन 18 और 19 नवंबर तक चलेगी। इस इकोनॉमिक संगठन में 19 देश और दो संगठन शामिल हैं। पिछली बार जी20 समिट का आयोजन भारत में हुआ था। इससे पहले मोदी दो दिन के लिए नाइजीरिया दौरे पर थे। समिट के लिए चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग भी रियो पहुंचे। यहां दोनों नेताओं की द्विपक्षीय बातचीत होने की संभावना है।

संस्कृत मंत्रों से स्वागत हुआ, जिनपिंग से होगी मुलाकात

श्रीलंका की तीसरी महिला प्रधानमंत्री बनीं अमरसूर्या

राजनीति में आने के 5 साल बाद ही देश की बनीं पीएम

कोलंबो। हरिनी अमरसूर्या श्रीलंका की नई प्रधानमंत्री बनाई गई हैं। इस पद पर पहुंचने वाली वह श्रीलंका की तीसरी महिला नेता हैं। वे दो महीने पहले श्रीलंका में बनी अंतरिम सरकार में भी पीएम रह चुकी हैं। पीएम बनाई गईं हरिनी अमरसूर्या की पढ़ाई 1991 से 1994 तक दिल्ली यूनिवर्सिटी के हिंदू कॉलेज से हुई है। उन्होंने 5 साल पहले ही राजनीति में एंट्री ली थी। श्रीलंका में 14 नवंबर को संसदीय चुनाव हुए थे। इसमें राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसानायके के गठबंधन एनपीपी जीत मिली थी। सोमवार को सरकार के नए कैबिनेट का गठन किया गया। राष्ट्रपति अनुरा कुमार दिसानायके ने कैबिनेट के सदस्यों को राष्ट्रपति सचिवालय में शपथ दिलाई। इस कैबिनेट में राष्ट्रपति समेत 22 सदस्य हैं। कैबिनेट में 2 महिलाओं और 2 तमिल सांसद भी शामिल किए गए हैं। डिप्टी मिनिस्टर के नाम बाद में घोषित किए जाएंगे।

हरिनी अमरसूर्या 2020 में पहली बार सांसद बनी थीं

रिपोर्ट में दावा भारत रहेगा रोग मुक्त...पर अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, इटली, स्पेन, ब्रिटेन और जापान होंगे प्रभावित

दुनिया में 2033 तक लाइलाज पार्किंसन के 3.15 मिलियन होंगे मरीज

एजेंसी ■ नई दिल्ली

आने वाले सालों में पार्किंसंस बीमारी के मामलों में तेज वृद्धि देखने को मिल सकती है। 2023 में 2.64 मिलियन मामलों से यह संख्या 2033 तक 3.15 मिलियन तक पहुंचने का अनुमान है। इस दौरान, रोगियों की संख्या में वार्षिक वृद्धि दर 1.94 प्रतिशत रहने की संभावना है। ग्लोबल डाटा की रिपोर्ट के मुताबिक, यह वृद्धि विशेष रूप से सात प्रमुख देशों-अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, इटली, स्पेन, ब्रिटेन और जापान में देखने को मिलेगी। इस बीमारी के मामलों में वृद्ध वयस्कों का हिस्सा प्रमुख रहेगा। आने वाले दशक में यह बीमारी अधिक वृद्ध आबादी वाले देशों के लिए चुनौती बन सकती है।

पार्किंसन के बढ़ते मामले

ग्लोबल डाटा के वरिष्ठ महामारी वैज्ञानिक राहुल एन रवि के अनुसार, पार्किंसन रोग मुख्य रूप से बुजुर्गों को प्रभावित करता है। रिपोर्ट में यह बताया गया है कि 2023 में 60 वर्ष और उससे अधिक आयु के वयस्कों में पार्किंसन के मामलों का 90 प्रतिशत से अधिक हिस्सा होगा। वहीं, 18-39 वर्ष के वयस्कों में केवल एक प्रतिशत से भी कम मामले होंगे।

महिलाओं से ज्यादा पुरुष प्रभावित

रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि पार्किंसन बीमारी के मामलों में पुरुषों की संख्या महिलाओं की तुलना में थोड़ी अधिक होगी। यह अंतर लिंग गुणसूत्रों से संबंधित हो सकता है। इस पर अधिक शोध की आवश्यकता है।

पार्किंसन बीमारी

पार्किंसन एक लाइलाज न्यूरोडीजेनेरेटिव बीमारी है, जिसे चिकित्सा दृष्टि से एक आंदोलन विकार के रूप में वर्गीकृत किया गया है। यह बीमारी अल्जाइमर के बाद बुजुर्गों में होने वाला दूसरा सबसे सामान्य क्रॉनिक न्यूरोडीजेनेरेटिव रोग है।

पार्किंसन के लक्षण

इस बीमारी के प्रमुख लक्षणों में कंपन, मांसपेशियों में कठोरता और शारीरिक संतुलन की समस्या शामिल हैं। वर्तमान में इस बीमारी का कोई स्थायी इलाज नहीं है, और इलाज केवल इसके लक्षणों से राहत प्रदान करता है।

बुजुर्गों के लिए चुनौतियां

पार्किंसन बुजुर्ग आबादी को प्रभावित करने वाले सबसे आम क्रोनिक, प्रगतिशील न्यूरोडीजेनेरेटिव विकारों में से एक है। चूंकि पीडी मुख्य रूप से वृद्ध वयस्कों को प्रभावित करता है, इसलिए बढ़ती उम्रदराज आबादी वाले देशों को पार्किंसन से पीड़ित व्यक्तियों की स्वास्थ्य देखभाल जरूरतों को पूरा करने के लिए रणनीति विकसित करनी चाहिए।

महाराष्ट्र-झारखंड में चुनाव से पहले 1000 करोड़ की जब्ती

दोनों राज्यों में वर्ष 2019 की तुलना में सात गुना ज्यादा

अधिकारी अगले दो दिनों तक प्रलोभनों पर रखेंगे नजर

एजेंसी ■ नई दिल्ली

महाराष्ट्र और झारखंड में 20 नवंबर को मतदान है। 14 अन्य राज्यों की कई विस सीटों पर उपचुनाव भी हुए हैं। इस दौरान आयोग ने जानकारी दी है कि प्रवर्तन एजेंसियों ने 1000 करोड़ से अधिक की नकदी, शराब, ड्रग्स और मुफ्त उपहार जब्त किए हैं। महाराष्ट्र-झारखंड में 858 करोड़ रुपए की जब्ती की गई है। यह आंकड़ा 2019 विस चुनाव की तुलना में सात गुना अधिक है। 2019 में चुनाव के वक्त महाराष्ट्र में 103.61 और झारखंड में 18.76 करोड़ की जब्ती की गई थी। मुख्य चुनाव आयुक्त ने सभी एजेंसियों को चुनावों में धनबल की भूमिका पर अंकुश लगाने का निर्देश दिया।

sattasudharbpl@gmail.com | satta_sudhar | facebook.com/satta.sudhar.7 | www.sattasudhar.in
पांच राज्यों से एक साथ प्रकाशित

ब्रीफ न्यूज

शासकीय सेवकों के वेतन वृद्धि स्वीकृत के आदेश जारी

भोपाल। राज्य शासन ने शासकीय सेवकों न्यायालयीन निर्णयों के आधार पर 30 जून अथवा 31 दिसम्बर को सेवानिवृत्त के पश्चात आगामी तिथि पर वेतन वृद्धि स्वीकृत संबंधी आदेश जारी कर दिया है। इसमें सेवा निवृत्त हुए शासकीय सेवकों को 1 जुलाई अथवा 1 जनवरी की स्थिति में उनकी पात्रता के अनुसार काल्पनिक वेतन वृद्धि स्वीकृत की जाकर पेंशन के निर्धारण एवं पुनरीक्षण हेतु स्वीकृत आदेश जारी करने के संबंध में प्रशासकीय विभाग को अधिकृत किया गया है। विभागों को जारी संशोधित दिशा-निर्देश संबंधी आदेश संग्लन है।

नुकसान को कम करने राजस्व संग्रहण बढ़ाएं: मंडलोई

भोपाल। अपर मुख्य सचिव ऊर्जा नीरज मंडलोई ने सोमवार को मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के कार्यो की समीक्षा की। उन्होंने सकल तकनीकी एवं वाणिज्यिक हानियों को कम करने के साथ ही राजस्व संग्रहण बढ़ाने के उपायों को अमल में लाते हुए बिजली चोरी पर प्रभावी अंकुश लगाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि प्रदेश में सभी श्रेणी के बिजली उपभोक्ताओं को व्यवधान रहित और गुणवत्तापूर्ण विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने के साथ ही उपभोक्ता सुविधाएं प्रदान करना राज्य शासन की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि यह सुनिश्चित करें कि अंतिम छोर के विद्युत उपभोक्ता तक पर्याप्त वोल्टेज पर निर्बाध विद्युत आपूर्ति हो। उन्होंने सभी श्रेणी के विद्युत उपभोक्ताओं को की जा रही विद्युत आपूर्ति की समीक्षा के साथ ही कंपनी अंतर्गत विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत चल रहे निर्माण कार्यों की प्रगति की जानकारी ली और जरूरी निर्देश दिए।

प्रदेश में होगा अग्निशमन सेवाओं का आधुनिकीकरण

भोपाल। नगरीय विकास एवं आवास विभाग ने केन्द्रीय गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार प्रदेश में अग्निशमन सेवाओं के विस्तार और आधुनिकीकरण का प्रस्ताव केन्द्र सरकार को भेजा है। विभाग ने 15वें वित्त आयोग के अंतर्गत 397 करोड़ 54 लाख रुपए का प्रस्ताव तैयार किया है। केन्द्रीय गृह मंत्रालय को भेजे गए प्रस्ताव में 75 प्रतिशत केन्द्र सरकार के हिस्से के रूप में 298 करोड़ 15 लाख रुपए मध्यप्रदेश को प्राप्त होंगे। राज्य सरकार अंश के रूप में 25 प्रतिशत राशि 99 करोड़ 39 लाख रुपए विभाग को मंजूर करेगी। विभाग ने यह प्रस्ताव राज्य कार्यपालिक समिति के अनुमोदन के बाद केन्द्र सरकार को भेजा है।

धान के 1412 और मोटा अनाज के 104 उपार्जन केन्द्र

भोपाल। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया है कि किसानों की सुविधा की दृष्टि से धान विक्रय के लिये 1412 और मोटा अनाज के लिए 104 उपार्जन केन्द्र बनाए गए हैं। ज्वार-बाजरा का उपार्जन 22 नवम्बर से और धान का उपार्जन 2 दिसम्बर से होगा। जिला बालाघाट में 185, सतना में 144, जबलपुर में 125, रीवा में 123, सिवनी में 99, कटनी में 84, मण्डला में 67, नर्मदापुरम में 65, और अलीराजपुर, झाबुआ, गुना, भोपाल एवं अशोकनगर में एक धान उपार्जन केन्द्र बनाए गए हैं।

इंदौर में प्रदेश का पहला मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क

मध्यप्रदेश बनेगा देश का लॉजिस्टिक्स हब : उप मुख्यमंत्री देवड़ा

सत्ता सुधार ■ भोपाल

उप मुख्यमंत्री एवं योजना एवं आर्थिक सांख्यिकी मंत्री जगदीश देवड़ा ने मध्यप्रदेश के समग्र विकास के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मार्गदर्शन में हो रहे कार्यों को अभूतपूर्व बताया है। उन्होंने कहा कि राज्य नीति आयोग द्वारा भी विकास के लिये सतत नवाचार किए जा रहे है। नीति आयोग एक नवीन पहल कर प्रदेश को लॉजिस्टिक्स हब बनाने की दिशा में कार्य कर रहा है। उन्होंने नीति आयोग को इसके लिए की जा रही वर्कशॉप के लिए बधाई और शुभकामनाएं दी। सोमवार को नीति आयोग ने जरूरी रणनीति तैयार करने के लिये एक कार्यशाला की। कार्यशाला का विषय मध्यप्रदेश को लॉजिस्टिक्स हब चुनौतियां और समाधान था। कार्यशाला में बताया गया कि मध्यप्रदेश को लॉजिस्टिक्स हब बनाने के लिए एकीकृत रणनीति बनेगी। मल्टी-मॉडल परिवहन के लिए बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ बनाया जाएगा। इंदौर में राज्य का पहला मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क, एमएलएलपी स्थापित किया जा रहा है। मध्यप्रदेश देश के मध्य में स्थित होने के कारण लॉजिस्टिक्स के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। हालांकि, राज्य को लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में कुशल इनलैंड कंटेनर डिपो, वेयरहाउसिंग सुविधाओं, मल्टी-मॉडल परिवहन और एमएसएमई की आवश्यकताओं को पूरा करने में कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है। इस नीति संवाद का उद्देश्य इन चुनौतियों का समाधान खोजना और आधुनिक, टिकाऊ और किफायती लॉजिस्टिक्स इकोसिस्टम विकसित करना था।

मुख्य कार्यपपालक अधिकारी राज्य नीति आयोग ऋषि गर्ग ने कहा कि यह संवाद सरकारी विभागों, हितधारकों और निजी क्षेत्र के लिए विचारों और समस्याओं को साझा करने का एक प्रभावी मंच है। इसके माध्यम से बेहतर नीतियाँ और कार्य योजनाएं तैयार की जा सकेंगी। संजीव खन्ना मुख्य परिचालन अधिकारी, पतंजलि फूड्स ने कहा कि इस तरह के संवाद और आयोजन उद्योगों और निवेशकों में सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करते हैं। इससे राज्य में किफायती लॉजिस्टिक्स इकोसिस्टम विकसित होगा। इंदौर में राज्य का पहला एमएलएलपी स्थापित किया जा रहा है। प्रमोद राजेंद्रन पार्टनरशिप मैनेजर स्मार्ट फ्रेट सेंटर, इंडिया चैप्टर ने ग्रीन लॉजिस्टिक्स और शून्य उत्सर्जन ट्रकों के उपयोग की जरूरत पर प्रकाश डाला। अभ्युदय झा सीनियर राज्य नीति आयोग ने लॉजिस्टिक्स इकोसिस्टम को मजबूत करने के लिए तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया।

सेवाओं के विकास पर ध्यान देने की जरूरत

अभिषेक अग्रवाल वरिष्ठ विशेषज्ञ नीति आयोग ने मध्यप्रदेश को लॉजिस्टिक्स हब बनाने के लिए एकीकृत रणनीति और मल्टी-मॉडल परिवहन के लिए बुनियादी ढांचे और सेवाओं के विकास पर ध्यान देने की जरूरत पर बल दिया। राकेश कुमार मीना निदेशक डीपीआईआईटी, भारत सरकार ने कहा कि भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए केंद्र सरकार का उद्देश्य एक तकनीकी रूप से सक्षम, सस्ता, और टिकाऊ लॉजिस्टिक्स इकोसिस्टम तैयार करना है। नेशनल लॉजिस्टिक्स पॉलिसी 2022, पीएम गतिशक्ति और एलआईपी जैसी डिजिटल पहल इस दिशा में क्रांतिकारी कदम हैं। पूर्णिमा शर्मा प्रशासनिक अधिकारी मध्यप्रदेश राज्य नीति आयोग ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

'मुझे त्यौहारों से परहेज नहीं पर अलगाववाद बर्दाश्त नहीं'

मेरे लिए रमजान-ईद का उतना ही महत्व जितना होली-दिवाली का

पहली बार सीएम डॉ. मोहन यादव मुस्लिम रिश्तों पर बोले

सत्ता सुधार ■ भोपाल

सीएम बनने के बाद पहला फरमान मस्जिदों के लाउड स्पीकर हटाने, मांस बिक्री पर पाबंदियां लगाने और एक धर्म विशेष को टारगेट कर बुलडोजर कार्यवाही करने के आरोपों से डॉ. मोहन यादव चर्चाओं में रहे हैं। जन्माष्टमी से लेकर गोवर्धन पूजा तक त्यौहारों के सरकारीकरण की चर्चाएं उठीं तो सवाल किया जाने लगा है कि क्या वे मुस्लिम और अन्य अल्पसंख्यक समुदाय के त्योहारों में यही नीति और व्यवहार रखेंगे। डॉ. मोहन यादव ने पहली बार अपने मुस्लिम समुदाय के साथ घनिष्ठ संबंधों पर खुलकर बात की। उन्होंने कहा कि रमजान और ईद उनके लिए भी इतना ही महत्व रखते हैं, जितना उनका लगाव होली, दिवाली या रक्षाबंधन से है। डॉ मोहन यादव ने कहा कि त्यौहार हमारी संस्कृति हैं, यह इंसानों को जोड़ने का काम करते हैं। उनका विरोध अलगाववाद और बिखराव की मंशा वालों से है। एक निजी चैनल को दिए विशेष साक्षात्कार के दौरान सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा कि समाज के त्यौहार सब मनाते हैं, इसलिए सरकार को इनमें सरोकार रखा जाना जरूरी है। वास्तव में त्यौहार आनंद के पल लेकर आते हैं, इसका सबको आनंद करना चाहिए। बहुसंख्यक अपने पर्वों का मजा लें, उसी तरह अल्पसंख्यक भी अपने त्योहारों का आनंद लें।

वैश्विक परिदृश्य में भारत के बढ़ते वर्चस्व का प्रमाण

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पीएम नरेन्द्र मोदी को नाइजीरिया के सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार, ग्रैंड कमान्डर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द नाइजर से सम्मानित होने पर नागरिकों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। सीएम ने कहा कि यह सम्मान केवल 140 करोड़ भारतीयों के लिए गर्व का ही क्षण नहीं, अपितु वैश्विक परिदृश्य में भारत के बढ़ते वर्चस्व का प्रमाण है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यशस्वी पीएम मोदी ने एक और कीर्तिमान, एक और वैश्विक सम्मान प्राप्त कर पूरे विश्व में माँ भारती का गौरव बढ़ाया है।

ईद पर जाता हूं मित्र डॉ. सनव्वर के घर

सवाल किया गया कि क्या बतौर मुख्यमंत्री रोजा इफ्तार और ईद के त्यौहार में शामिल होंगे। इस पर उन्होंने कहा कि उनके जीवनकाल को देख लिया जाए। वे हर मीठी ईद पर अपने मित्र मप्र वक्फ बोर्ड अध्यक्ष डॉ. सनव्वर पटेल के घर जाते हैं। मिलकर त्यौहार मनाते हैं और खुशियों में शामिल होते हैं। सिलसिला पुराना है, जारी है और आगे भी इसी तरह बरकरार रहेगा।

विरोध अलगाववाद का

सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा कि त्यौहार, आपसी सौहाद्र और भाईचारे के इरादे अपनी जगह हैं, लेकिन देश बांटने वालों, अलगाववादी मानसिकता वालों और नफरत फ़ैलाने वालों से उनका विरोध है, हमेशा रहेगा। उन्होंने कहा कि बांग्लादेशी घुसपैठियों के विरोध में हैं और हमेशा इसके खिलाफ ही रहेंगे।

कमलनाथ ने बंद की पार्टी

पिछली कई सरकारों से प्रदेश के सीएम हाउस में रोजा इफ्तार की बड़ी पार्टी आयोजित की जाती रही है। पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अपने कार्यकाल में इसको प्रदेश स्तरीय आयोजन बनाया। लेकिन वर्ष 2018 में आई तत्कालीन कमलनाथ सरकार ने इस आयोजन पर तालाबंदी कर दी। गौरतलब है कि पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान अपने कार्यकाल में ईद के मौके पर ईदगाह जाकर लोगों से मिलते थे।

सीएम 6 दिवसीय विदेश यात्रा पर निवेश के लिए जाएंगे यूके-जर्मनी

भोपाल। मध्यप्रदेश को औद्योगिक हब बनाने के संकल्प को लेकर आगे बढ़ रहे मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 24 से 30 नवंबर तक यूके और जर्मनी प्रवास पर रहेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का यह विदेश दौरा मध्यप्रदेश में औद्योगिक विकास को नई ऊंचाई देने और वैश्विक निवेश आकर्षित करने के उद्देश्य से किया जा रहा है। उज्जैन, जबलपुर, ग्वालियर, सागर और रीवा में आयोजित रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव के साथ मुंबई, बैंगलुरु, कोयंबटूर और कोलकाता में 4 रोड-शो की अभूतपूर्व सफलता के बाद, यह दौरा अंतर्राष्ट्रीय निवेशकों के बीच मध्यप्रदेश में निवेश अवसरों को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करने का एक अभूतपूर्व प्रयास है। उद्योग वर्ष 2025 के प्रदेश में निवेश बढ़ाने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री डॉ. यादव 6 दिवसीय इस विदेश यात्रा में यूके के लंदन, बर्मिंघम तथा जर्मनी के म्यूनिख और स्टटगार्ट का दौरा करेंगे। इन स्थानों पर वे प्रदेश में निवेश और औद्योगिक सहयोग के अवसरों को बढ़ाने के लिये औद्योगिक संगठनों के प्रतिनिधियों और उद्योगपतियों से चर्चा करेंगे। मुख्यमंत्री यह रणनीतिक विदेश यात्रा मध्यप्रदेश के लिए निवेश आकर्षित कर राज्य की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने तथा विश्व पटल पर उद्योग के क्षेत्र में मध्यप्रदेश को पहचान दिलाने में अहम भूमिका निभायेगी। सीएम 24 नवम्बर को भोपाल से मुम्बई होते हुए लंदन के लिए प्रस्थान करेंगे तथा रात 8 बजे लंदन पहुंचेंगे। 25 नवम्बर को वेस्टमिंस्टर स्थित ब्रिटिश संसद और किंग्स क्रॉस और पुनर्विकास स्थलों दौरा करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव लंदन में फ्रेंड्स ऑफ़ मध्यप्रदेश प्रवासी भारतीयों द्वारा आयोजित रात्रि-भोज कार्यक्रम में शामिल होंगे। इसमे 400 से अधिक प्रवासी भारतीय सम्मिलित होंगे। मुख्यमंत्री 26 नवम्बर को ब्रेकफास्ट पर उद्योगपतियों एवं भारत के उच्चायुक्त विक्रम के दोरईस्वामी से संवाद करेंगे। 27 नवंबर को वारविक यूनिवर्सिटी का भ्रमण करेंगे इसके बाद वारविक मैन्युफैक्चरिंग ग्रुप के डीन, फैकल्टी मेम्बर्स और शोधार्थियों से संवाद करेंगे। इसके बाद सीएम डॉ. यादव 28 और 29 नवंबर को जर्मनी प्रवास पर रहेंगे।

उद्योग वर्ष 2025 के लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में निर्णायक कदम

सरकार प्रदेश को उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध

सत्ता सुधार ■ भोपाल

डिप्टी सीएम राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार और सुधार के लिए हरसंभव प्रयास किए जाएं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में राज्य सरकार प्रदेश को उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं के सुदृढ़ीकरण के लिए अंतर्विभागीय समन्वय जरूरी है। ताकि तेज गति से स्वास्थ्य सेवाओं को विस्तारित किया जा सके। डिप्टी सीएम शुक्ल ने मंत्रालय में स्वास्थ्य विभाग के महत्वपूर्ण कार्यों और अंतर्विभागीय समन्वय विषयों की समीक्षा की। अपर मुख्य सचिव सामान्य प्रशासन विभाग संजय दुबे, प्रमुख सचिव वित्त मनीष रस्तोगी, प्रमुख सचिव स्वास्थ्य संदीप यादव और आयुक्त स्वास्थ्य तरुण राठी उपस्थित थे। डिप्टी सीएम ने संजीवनी क्लीनिक में रिक्त पदों पर जल्द से जल्द नियुक्तियां करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्राथमिक चिकित्सा सेवाओं को सशक्त करने के लिए प्रक्रिया को तेज गति से पूर्ण किया जाए। ज़िलों में जिला चिकित्सालयों के लिए चिकित्सकीय और पैरामेडिकल पदों की पूर्ति की प्रक्रिया की अद्यतन स्थिति की समीक्षा की।

स्वास्थ्य सेवाओं के सुदृढ़ीकरण के लिए अंतर्विभागीय समन्वय जरूरी

प्रदेश जल्द होगा नक्सल मुक्त: डीजीपी सक्सेना

केन्द्रीय गृहमंत्री ने नक्सलवाद को खत्म करने के दिए हैं निर्देश

सत्ता सुधार ■ भोपाल

मध्यप्रदेश के पुलिस महानिदेशक सुधीर सक्सेना ने सोमवार को बालाघाट पहुंचकर पुलिस कंट्रोल रूम में वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक अहम गोपनीय बैठक की। बैठक के बाद उन्होंने पत्रकारों से चर्चा करते हुए कहा है कि जल्द ही मध्यप्रदेश को नक्सल मुक्त प्रदेश बनाने में सफलता मिलेगी। गौरतलब है कि गत दिवस बालाघाट में पुलिस और नक्सलियों के बीच हुई मुठभेड़ में हाक फोर्स के जवान शिवकुमार की सिर में गोली लगी थी। गंभीर रूप से घायल जवान को इलाज के लिए गोदिया के निजी अस्पताल में उपचार के लिए भर्ती करवाया गया है। सिर में गोली लगने के कारण उसकी हालत गंभीर बनी हुई है। डीजीपी सक्सेना ने बालाघाट पहुंचकर पुलिस कंट्रोल रूम में वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक अहम गोपनीय बैठक की। बैठक के बाद पत्रकारों से चर्चा करते हुए डीजीपी सक्सेना ने कहा कि हमारे पुलिस जवानों के हौसले बुलंद हैं। तीन दशकों तक नक्सली अभियान में हमें सफलता नहीं मिली थी। लेकिन विगत पांच साल में पुलिस को उल्लेखनीय सफलता मिली है। इन पांच सालों में एरिया कमेटी रैंक के नक्सली से लेकर डिविजनल कमेटी रैंक के लाखों रुपये के इनामी नक्सली को गिरफ्तार किया या उन्हें मार गिराया गया। उन्होंने कहा कि केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने नक्सलवाद को जड़ से खत्म करने निर्देश दिए हैं। उसी के अनुरूप मध्यप्रदेश सरकार उसी नक्शे कदम पर चल रही है। जल्द ही मध्यप्रदेश को नक्सली मुक्त प्रदेश बनाने में पुलिस को सफलता मिलेगी। बैठक के बाद डीजीपी घायल जवान को देखने के लिए गोंदिया पहुंचे। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने गोदिया के अस्पताल में डॉक्टरों से जवान के चल रहे इलाज के बारे में पूछताछ की और फोन पर चर्चा करते हुए बेहतर इलाज की बात कही।

तालाबों व बावड़ियों के जीर्णोद्धार की बनाएं कार्ययोजना : मंत्री पटेल

नर्मदा किनारे करें पौधरोपण, पंचायतों में कार्य समय पर पूरा करें

सत्ता सुधार ■ भोपाल

पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा कि ग्राम पंचायतों में रिजल्ट ओरिएंटेड काम किए जाएं। सभी तालाबों एवं बावडियों का जीर्णोद्धार करें। इसके लिए पंचायत बार कार्य-योजना बनाए चरणबद्ध तरीके से काम करें। पौधरोपण के बाद उनका सर्वाइवल रेट अधिक रहे, इस पर भी कार्य किया जाए। मंत्री पटेल ने सोमवार को मंत्रालय में पंचायत एवं ग्रामीण विकास के विभागीय कार्यो की समीक्षा कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि मनरेगा में गत 15 नवंबर की स्थिति में जिन जनपद पंचायतों में श्रम सामग्री का अनुपात सही होगा, उनमें ग्रेवल रोड, खेत तालाब और अन्य नए कार्य शुरू करने की मंजूरी जारी की जा रही है। यह राशि एक से तीन करोड़ रुपए तक स्वीकृत की जाएगी। उन्होंने कहा कि जैन मुनियों के प्रवास मार्ग चिन्हित कर प्रमुख मार्गों पर उनके रुकने के लिए समुचित व्यवस्था की जाए। शासकीय भूमि पर समुचित पौध-रोपण किए जाएं।

मंत्री पटेल ने कहा कि ग्राम पंचायतों में खेत सड़क एवं सुदूर सड़क योजना में सड़कों की मांग एक बार में ही चिन्हित कर ली जाए, जिससे स्वीकृति के लिए निर्णय लिया जा सके। उन्होंने निर्देशित किया कि स्कूल शिक्षा विभाग के तहत स्कूलों की बाउंड्रीवॉल निर्माण में मनरेगा कन्वर्जेंस रेट भी तय किया जाए। उन्होंने कहा कि मनरेगा में किए जा रहे पौधरोपण को बाउंड्रीवॉल से सुरक्षित किया जाए। पौधे जल-स्त्रोतों के निकट ही लगाए जाएं कि ये पौधे सुरक्षित भी रहें। उन्होंने नर्मदा नदी के किनारों पर सघन पौधरोपण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि ग्राम पंचायतों की जनपद स्तर पर क्लस्टर बैठक नियमित रूप से होना चाहिए। मंत्री पटेल ने निर्देश दिए कि विश्राम घाट शेड के साथ बाउंड्री वॉल का निर्माण भी किया जाए एवं परिसर में पौधरोपण भी किया जाए। उन्होंने बाउंड्रीवॉल निर्माण के लिए अनुमति प्राप्त करने का पत्र केन्द्र सरकार को भेजने के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि सामुदायिक स्वच्छता परिसरों के निर्माण के लिए साइट सिलेक्शन उचित तरीके से किया जाए एवं उनके मेंटेनेंस पर भी विशेष ध्यान दिया जाए। ग्रेवल रोड के निर्माण में यदि जरूरी हो, तो पुलिया के निर्माण के लिए राशि अलग से मंजूद की जाए। उन्होंने बांस के उपयोग को बढ़ाने पर जोर देते हुए कहा कि बांस से बनी बाउंड्रीवॉल प्राकृतिक रूप से मजबूत और सुंदर होती है। उन्होंने पौधरोपण क्षेत्र की बाउंड्रीवॉल पर बांस रोपण करने पर जोर दिया।

प्रक्रिया संगठन चुनाव में विधायक-सांसदों पर कड़ी नजर, पीढ़ी परिवर्तन पर काम कर रही भाजपा

22 को बैठक, राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष की हो सकती है घोषणा

सत्ता सुधार ■ भोपाल

विधानसभा-लोकसभा चुनाव में मिली जीत के बाद अब भाजपा का पूरा फोकस संगठन चुनाव पर है। भाजपा में संगठनात्मक बदलाव के लिए संगठन चुनाव की प्रक्रिया भी शुरू हो गई है। फिलहाल बूथ स्तर पर भाजपा के सक्रिय सदस्यों को पदाधिकारी चुना जा रहा है। भाजपा के संगठन पर्व के तहत 14 नवंबर से बूथ कमेटी के चुनाव शुरू हो चुके हैं, जो 20 नवंबर तक चलेंगे।

मंडल और जिलाध्यक्ष के चुनाव से पहले 22 नवंबर को सभी राज्यों के चुनाव प्रभारियों की दिल्ली में बैठक होने जा रही है, जिसमें अगले चरणों की तिथि तय की जाएगी। पार्टी नेताओं का यह भी आकलन है कि इस बैठक में राष्ट्रीय स्तर पर कार्यकारी अध्यक्ष की घोषणा हो सकती है। चुनाव में भागीदारी के लिए भाजपा का सक्रिय सदस्य होना अनिवार्य हैं। संगठन ने इस बार सक्रिय सदस्यता में हर वर्ग को जोड़ने का संदेश दिया है। ऐसे लोग जो कि समाज हित में काम कर रहे हैं, उन्हें प्राथमिकता दी जा रही है। संगठन के चुनाव के जरिए भाजपा अपनी ताकत दिखाने के लिए रणनीति बना रही है।

पार्टी सूत्रों के मुताबिक इस पर भाजपा के संगठन चुनाव में विधायक-सांसदों पर कड़ी नजर है। स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि बूथ, मंडल या जिलाध्यक्ष के चुनाव निष्पक्ष और सर्वसम्मति से होने चाहिए। विधायक या सांसद अपने समर्थक या रिश्तेदार को संगठन में बैठाने का प्रयास करें तो उसे सफल नहीं होने दिया जाएगा। भाजपा पीढ़ी परिवर्तन की रणनीति पर काम कर रही है। इसका आशय यही है कि कोई भी जनप्रतिनिधि संगठन को जेब में रखने यानी अपनी मर्जी से चलाने की कोशिश करेगा तो ऐसे प्रयास को विफल कर देना है। जानकारी के मुताबिक दिल्ली में संगठन चुनाव को लेकर आयोजित कार्यशाला पार्टी के नेताओं ने एक ही संदेश दिया जाएगा कि पार्टी अपनी ताकत का एहसास करने के लिए तैयार रहे। जिला स्तर तक कार्यशालाएं कराकर भाजपा इस बार के संगठन चुनाव को और मजबूत बनाएगी। राजनीतिक प्रेक्षकों के अनुसार अगले 90 दिनों में भाजपा के जिला अध्यक्ष और प्रदेश अध्यक्ष में परिवर्तन को तय करने की रणनीति बनी है।

फाइल फोटो

जिलाध्यक्ष के लिए जोर अजमाइश शुरु

दिसंबर माह के अंत में जिलाध्यक्ष का चुनाव होना है। जिलाध्यक्ष पद के लिए अंचल के सभी जिलों में जोर अजमाइश शुरु हो गई है। जिलास्तर पर बूथ और मंडल के चुनाव होने के बाद प्रदेश का शीर्ष नेतृत्व जिलाध्यक्षों के नाम पर विचार करेगा। यह तय माना जा रहा है कि भाजपा जिलाध्यक्षों की नियुक्तियों में जातीय समीकरणों को साधने का प्रयास करेगी। वहीं जिलों में अपना वर्चस्व कायम रखने के लिए बड़े नेताओं ने अपने खेमों से नाम छांटना शुरु कर दिए हैं।

कायस्थम के संरक्षक बने वरिष्ठ पत्रकार महेश श्रीवास्तव

25 सदस्यीय सलाहकार मंडल भी घोषित

सत्ता सुधार ■ भोपाल

मध्य प्रदेश के वरिष्ठ पत्रकार, जाने-माने लेखक, साहित्यकार, चिंतक महेश श्रीवास्तव कायस्थ समाज में वैचारिक गतिशीलता लाने, विचार मंथन और चिंतन के लिए गठित कायस्थम भोपाल ,मध्य प्रदेश के संरक्षक होंगे। महेश श्रीवास्तव ने संस्था को संरक्षक के लिए अपनी सहमति प्रदान की है। इसके साथ ही कायस्थम संस्था में 25 सदस्यीय सलाहकार मंडल भी घोषित किया गया है। कायस्थम के अध्यक्ष प्रलय श्रीवास्तव के अनुसार सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी सर्वश्री मनोज श्रीवास्तव, अजातशत्रु श्रीवास्तव, प्रदीप खरे, रजनीश श्रीवास्तव, आईएएस ओम प्रकाश श्रीवास्तव, एवं दीपक सक्सेना के अलावा रेलवे मंत्रालय के पूर्व संचालक एवं अखिल भारतीय सूचना सेवा के सेवानिवृत अधिकारी अनिल सक्सेना, पूर्व संचालक जनसंपर्क विभाग अनिल माथुर, वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. निर्भय श्रीवास्तव, डॉ. विजया ब्यौहार, डॉ. एसके सक्सेना, डॉ. आरके श्रीवास्तव, प्रसिद्ध उदघोषक डॉ. सुभाष सक्सेना, समाजसेवी सतीश रायजादा, वरिष्ठ अधिवक्ता उमेश निगम, व्यवसायी नेहा सिंह, सेवानिवृत अधिकारी एवं व्यवसायी विनोद प्रधान, पत्रकारगण मलय श्रीवास्तव, राजेश चंचल, मनीष श्रीवास्तव, शिवकुमार विवेक, दिनेश निगम त्यागी, गोपाल श्रीवास्तव, देशदीप सक्सेना, अजय निगम को सलाहकार के रूप में शामिल किया है।

ब्रीफ न्यूज

मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना द्वारकाधीश तीर्थ यात्रा हेतु आवेदन आमंत्रित

सागर। मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के अंतर्गत आगामी द्वारकाधीश तीर्थ यात्रा हेतु आवेदन आमंत्रित किये जा रहे हैं। द्वारकाधीश तीर्थयात्रा से संबंधित आवेदन दिनांक 27.11.2024 तक प्राप्त करे। तीर्थयात्रा से संबंधित आवेदन प्राप्त करने की अंतिम तिथि के सांय 05 बजे तक समस्त आवेदन सॉफ्टवेयर में आधार कार्ड नम्बर अनिवार्य रूप से दर्ज कर एक सॉफ्ट कॉपी एवं हार्ड कापी के द्वारा इस कार्यालय में उसी दिन सायं 5.30 बजे तक तत्काल भेजना सुनिश्चित करे। तीर्थ यात्रियों के द्वारा प्रस्तुत आवेदन पत्र के साथ में चिकित्सीय प्रमाण पत्र सहित सभी कालमों एवं सहपत्रों का सूक्ष्म परीक्षण उपरांत पात्र व्यक्तियों के ही आवेदन इस कार्यालय में भेजे जायें। प्रयाः देखने में आया है कि नियमानुसार यात्री के आवेदन पत्र के साथ सहायक का आवदेन संलग्न नहीं किये जा रहें है केवल सहायक का आधार संलग्न कर आवेदन भेजे जा रहे है। जिस कारण से यात्री का नाम लाटरी में आने के उपरांत सहायक का नाम सूची में नहीं जुड़ पाता है अतः निर्देशित किया जाता है कि यात्री के आवेदन पत्र की भाँति सहायक का आवेदन पत्र प्राप्त किये जावे। इसके अतिरिक्त जिन तीर्थ यात्रियों द्वारा पूर्व की यात्राओं का लाभ प्राप्त कर लिया गया है उन तीर्थ यात्रियों के आवेदन इस कार्यालय को न भेजे जावे।

राजस्व महाअभियान 3.0 में राजस्व के समस्त प्रकरणों का निराकरण शत प्रतिशत करें: कलेक्टर संदीप जी आर

सागर। राजस्व महाअभियान 3.0 में राजस्व के समस्त प्रकरणों का निराकरण शत प्रतिशत करें । उक्त निर्देश कलेक्टर श्री संदीप जी आर ने दिए। कलेक्टर संदीप जीआर ने बताया कि राजस्व महा-अभियान प्रथम चरण (जनवरी मार्च 2024) एवं द्वितीय चरण (18 जुलाई 2024 से 31 अगस्त 2024) की सफलता को देखते हुए,मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के निर्देशानुसार राजस्व विभाग के राजस्व प्रकरणों के त्वरित निराकरण और राजस्व अभिलेख त्रुटियों को ठीक करने हेतु राजस्व महाअभियान 3.0 का आयोजन दिनांक 15/11/2024 से 15/12/2024 तक किए जाने का निर्णय लिया गया है।इस अभियान का उद्देश्य राजस्व न्यायालयों (RCMS) में लम्बित प्रकरणों (नामांतरण, बँटवारा, अभिलेख दुरुस्ती, सीमांकन) का निराकरण, नए राजस्व प्रकरणों को RCMS पर दर्ज कराना, नक़्शे पर तरमीम, PMKISAN का सैचुरेशन, आधार का ROR से लिंकिंग, परम्परागत रास्तों का चिन्हांकन, फार्मर रजिस्ट्री, स्वामित्व योजना का क्रियान्वयन है।कलेक्टर संदीप जी आर ने बताया कि राजस्व महाअभियान 3.0 में निम्नानुसार गतिविधियां संपादित की जाएगी। नामांतरण, बंटवारा,रिकार्ड सुधार, सीमांकन, परंपरागत रास्तों का चिन्हांकन, नक़्शे में बटांकन,खसरे में बटांकन होना परंतु नक्शे में नही होना,खसरा नंबर का एक से अधिक बार होना ,नक्शे में बटांकन होना परन्तु खसरे में नही होना,खसरा क्रमांक में त्रुटिपूर्ण शब्दों एवं अंको को हटाना।

अधिक फीस वसूली मामले में दमोह कलेक्टर ने सैंट नॉरबर्ट स्कूल पर निकाली थी 2 करोड़ की वसूली

सागर जिले के देवरी ब्लॉक में सेंट मेरीस स्कूल को एसडीएम ने दिया नोटिस

सत्ता सुधार ■ सागर

दमोह में लोको क्षेत्र में संचालित मिशनरी के सैंट नॉरबर्ट स्कूल की जांच के आदेश कलेक्टर द्वारा दिए गए थे। आदेश की बाद अधिक फीस वसूली के मामले में जांच की बाद दमोह कलेक्टर द्वारा स्कूल प्रबंधन को आदेश दिया गया था कि विद्यार्थियों के अभिभावको से अवैध फीस और किताब के तौर पर की गई अवैध राशि करीब दो करोड रुपए अभिभावक को वापस की जाए।

सागर जिले के अंतर्गत आने वाली देवरी विकासखंड में संचालित सेंट मेरी स्कूल में अधिक मूल्य पर किताबों के सेट का विक्रय किए जाने के आरोप स्कूल प्रबंधन पर लगे तो उक्त मामले में बीआरसी द्वारा संज्ञान में लेते हुए सेंट मैरी कॉन्वेंट स्कूल प्रधान अध्यापक /प्राचार्य को कारण बताओं नोटिस जारी करते हुए निजी विद्यालय फीस विनिमय 2020 के अंतर्गत शाला द्वारा तैयार की गई जानकारी विगत चार सत्रों की एक प्रति उपलब्ध कराने हेतु एवं स्पष्टीकरण मांगा गया लेकिन उक्त मामले में विद्यालय द्वारा संतोषप्रद उत्तर नहीं दिए जाने के बाद बीआरसी ने उक्त प्रकरण अनुविभागीय अधिकारी राजस्व को उचित कार्यवाही के लिए प्रेषित किया, जिसके बाद अनुविभागी अधिकारी राजस्व श्रीमती भव्या त्रिपाठी द्वारा नोटिस जारी करते हुए स्पष्टीकरण मांगा है। पूर्व में कलेक्टर के निर्देश पर जिले भर में कमेटी गठित कर जांच कराई गई थी लेकिन जांच का क्या हुआ यह किसी को नहीं पता क्योंकि स्कूलों में अधिक मूल्य पर किताबों का सेट निर्धारित दुकानों पर उपलब्ध किया

जा रहा है, स्थिति यह है कि अधिकांश स्कूल में सेटिंग से पुस्तक कॉपियां एवं स्कूल की ड्रेस निर्धारित स्थान पर ही मिल रही है जिसके चलते अभिभावक परेशान है।नाम न छापने की शर्त पर अभिभावक ने बताया कि वह परेशान हो गए हैं यदि शिकायत करते हैं तो स्कूल का स्टाफ बच्चों को टॉर्चर करता है,स्कूल की क्लास में खड़े होकर बार-बार कहते हैं कि तुम्हारे अभिभावक ऐसे हैं इसलिए शिकायत नहीं करना चाहते बच्चा जैसे ही स्कूल से पढ़ाई होने के बाद फ्री होगा तो पूरा मामला बताएंगे कि आखिर स्कूल में क्या चल रहा है।

वही सेंट मैरी स्कूल तक विद्यार्थियों को पहुंचने वाली बस एवं अन्य वाहनों नियम अनुसार नहीं चल रहे नेशनल हाईवे 44 क्रॉस कर स्कूल बस के वाहन आते जाते हैं लेकिन उनके प्रबंधन व्यवस्था ठीक नहीं है। उक्त मामले में अभिभावक द्वारा मांग की जा रही है कि वाहनों की व्यवस्था चेकिंग की जाए ताकि किसी प्रकार की दुर्घटना घटित ना हो।

क्या है निजी विद्यालय फीस विनियमन 2020

मध्य प्रदेश शासन द्वारा विद्यार्थी एवं अभिभावकों के हितों को ध्यान में रखते हुए निजी विद्यालय फीस विनियमन 2020 का आदेश जारी किया गया था।उक्त आदेश के तहत कुछ महत्वपूर्ण बिंदु है जिनमें फीस जमा करने पर उसकी रसीद विद्यालय द्वारा प्रदान की जाएगी।निजी विद्यालय प्रबंधन द्वारा, विद्यालय प्रवेश प्रारंभ की तिथि एवं प्रकिया, विद्यालय में उपयोग में लायी जाने वाली पाठ्यपुस्तके, स्टेशनरी, पठन सामग्री, बैग, यूनिफॉर्म, स्पोर्ट्स किट, ट्रांसपोर्ट सुविधा, फीस अथवा परोक्ष या अपरोक्ष रूप से संग्रहित की जाने वाली धनराशि का विवरण विद्यालय के नोटिस बोर्ड तथा आधिकारिक वेबसाइट पर प्रदर्शित की जाएगी।

निजी विद्यालय विद्यालय की विवरण पुस्तिका एवं आवेदन पत्र प्राप्त करने के संबंध में आवश्यक जानकारी विद्यालय के सूचना पटल एवं आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध करायेगा। इस हेतु यदि अभिभावकों द्वारा कोई भुगतान किया जाना अपेक्षित है तो स्पष्टतः उल्लेख करेगा। निजी विद्यालय प्रबंधन द्वारा पाठ्यपुस्तकों का निर्धारण ऐसे संबद्धता बोर्ड अथवा परीक्षा निकाय के विनियमों के अनुसार विनिश्चित किया जाएगा, जिससे कि वह संबद्ध है।निजी विद्यालय प्रबंधन द्वारा छात्र या अभिभावकों को पुस्तकें, यूनिफॉर्म, टाई, जूते, कॉपी आदि केवल चयनित विक्रेताओं से कय करने के लिए औपचारिक अथवा अनौपचारिक, किसी भी रूप में बाध्य नहीं किया जाएगा। छात्र या अभिभावक इन सामग्रियों को खुले बाजार से कय करने के लिये स्वतंत्र होंगे। विद्यालय प्रबंधन द्वारा यूनिफॉर्म को छोड़कर किसी भी पाठ्य सामग्री पर विद्यालय का नाम उल्लिखित नहीं किया जाएगा। यदि निजी विद्यालय प्रबंधन द्वारा विद्यालयीन गणवेश में कोई परिवर्तन किया जाता है तो वह आगामी तीन शैक्षणिक सत्रों तक यथावत लागू रहेगी। तीन वर्ष की अवधि पश्चात ही गणवेश में परिवर्तन किया जा सकेगा। निजी विद्यालय प्रबंधन, परिवहन सुविधाओं के संबंध में परिवहन विभाग एवं स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा समय-समय पर जारी दिशा निर्देशों का पालन करेगा।

इनका कहना है...

बीआरसी द्वारा भेजे गए प्रतिवेदन के आधार पर संबंधित स्कूलों को नोटिस जारी कर स्पष्टीकरण मांगा गया है।शासन द्वारा जारी की गई गाइडलाइन के पालन के संबंध में भी जानकारी मांगी गई है।

-श्रीमती भव्या त्रिपाठी एसडीएम देवरी

सेंट मैरी स्कूल में पुस्तक, ड्रेस ,फीस, परीक्षा शुल्क एवं नामांकन शुल्क सहित अन्य जानकारी प्राप्त करने के लिए नोटिस जारी किया जाएगा। शासन द्वारा दिए गए निर्देश के अनुसार स्कूल का संचालन नहीं होता तो कार्रवाई होगी।

-अजय नगरिया ,
ब्लॉक शिक्षा अधिकारी देवरी

सेंट मैरी स्कूल को नोटिस जारी करते हुए शासन द्वारा तय की गई गाइडलाइन के अनुसार जानकारी मांगी गई थी ,जो स्कूल द्वारा उपलब्ध नहीं कराई गई जिसकी बाद उचित कार्यवाही के लिए एसडीम प्रतिवेदन भेजा गया है।

-ब्रह्मानंद बचकइया बीआरसी देवरी

दो थानों की पुलिस ने फरार चल रहे 4 स्थायी व 15 गिरफ्तारी वारंटियों को पकड़ा

सत्ता सुधार ■ खुरई (सागर)

वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के निर्देश पर शहर थाना पुलिस ने फरार चल रहे 3 स्थायी व 14 गिरफ्तारी वारंटियों को पकड़ा है। वही ग्रामीण थाना पुलिस ने एक स्थाई व एक गिरफ्तारी वारंटि को गिरफ्तार किया है। पुलिस से मिली जानकारी अनुसार स्थाई वारंटियों में ओमप्रकाश पिता वीरसिंह अहिरवार उम्र 42 साल निवासी श्यामा प्रसाद मुखर्जी वार्ड, विक्की पिता रतन लाल आदिवासी उम्र 40 साल निवासी सहोदराबाई राय वार्ड, बाबूलाल पिता जालम जाटव निवासी बल्लभ नगर थाना मोतीनगर सागर को गिरफ्तार किया है। इसके अलावा गिरफ्तारी वारंटियों में देवी सिंह पिता पूरन सिंह लोधी निवासी तेवरा, चंदू पिता मूलचंद पटेल उम्र 27 साल निवासी शर्मा वार्ड, रमेश पिता चिमनलाल अहिरवार उम्र 46 साल निवासी हनौता, जित्तू ऊर्फ जितेंद्र पिता सुजान सिंह लोधी उम्र 36 साल निवासी मुड़िया, हजारी पिता पर्वत अहिरवार उम्र 25 साल निवासी खजुरिया (पठारी), शेरू ऊर्फ गोवर्धन पिता रामप्रसाद अहिरवार उम्र 36 साल निवासी शर्मा वार्ड, अकील पिता सलाउद्दीन राईन उम्र 26 साल निवासी अब्दुल हमीद वार्ड , इशाक खान निवास सुभाष वार्ड, अमित पिता मन्नूलाल अहिरवार उम्र 23 साल निवासी पॉलिटेक्निक के पास, पप्पू पिता अर्जुन अहिरवार उम्र 47 साल निवासी कबीर वार्ड, अर्जन उर्फ़ रानी पिता बुद्धराम रैकवार उम्र 38 साल निवासी शिवाजी वार्ड, मानसिंह पिता प्रह्लाद सिंह राजपूत उम्र 22 साल निवासी जरवास, डेलन पिता रागुलाम ठाकुर उम्र 46 साल निवासी महावीर वार्ड, धर्मेंद्र पिता राजाराम साहू निवासी ऐरन मंडी बमौरा को गिरफ्तार किया। इसके अलावा ग्रामीण थाना पुलिस ने स्थाई वारंटी लेखराम अहिरवार गढ़ोला जागीर,गिरफ्तारी में प्रेम अहिरवार निवासी कुशाभाऊ ठाकरे वार्ड को गिरफ्तार किया है।

सीएमओ पवन शर्मा के निर्देश पर गीले कचड़े से खाद कैसे बनाएं इस प्रक्रिया के बारे में समझाया

सागर। स्वच्छ भारत मिशन अंतर्गत शासन आदेशानुसार नगर पालिका परिषद मकरोनिया एवं संस्था द्वारा निकाय क्षेत्र में जागरूकता अभियान बैठक/कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें ÷गीले कचरे का 100 प्रतिशत होम कंपोस्टिंग उपचार रहवासियों को बताया गया एवं उनको घर पर ही गीले कचड़े की खाद कैसे बनाएं इस प्रक्रिया के बारे में समझाया गया ।

गीले कचड़े का सत प्रतिशत घर पर ही खाद बनाकर निराकरण करे जिससे सफाई मित्रों को कचड़े का पृथककीकरण करने में समस्या ना आए एवं आसपास के लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरुक करते हुए सफाई व्यवस्था बनाए रखने का अनुरोध किया गया साथ ही उनको स्वच्छता के प्रति और लोगों को जागरूक करने की शपत दिलाई गई और मकरोनिया नगर पालिका को स्वच्छता में नंबर 1 बनाने में अपना पूर्ण योगदान दे।

चोरी के मामले में निगरानी बदमाश को उसके अन्य साथी के साथ किया गया गिरफ्तार

सत्ता सुधार ■ सागर

फरियादी राहुल पिता जंगबहादुर गौतम उम्र 34 साल नि0 लक्ष्मीपुरा वार्ड सागर ने रिपोर्ट लेख कराई कि दिनाँक 22.09.2024 के दिन करीब 3.30 बजे की बात है मैं अपनी मोटरसाईकिल से गोला कुआ के पास खड़ा था उसी समय वहा पर मेरी पहचान और मोहल्ले का सूरज आठिया अपने अन्य दो साथियो को लेकर आया और बोला कि मुझे धर्माश्री छोड़ दो तब में उन तीनो को अपनी मोटरसाईकिल पर बैठाकर धर्माश्री तक ले गया फिर सूरज बोला कि मंगलगिरी छोड दो तब मैं उनको लेकर मंगलगिरी पहुंचा वहा पर मोटरसाईकिल खड़ी करके उनको उतारा फिर मैं वहा से अपनी मोटरसाईकिल से अपने घर आया तो मैनें देखा कि बाय 29 लाल रंग का कीमती 30000 रूपये जिसमें जिओ कंपनी की सिम डली है मेरे जेब की पेंट में नहीं था और मैं 20000 रुपये रखे थे जिसको में

मोबाईल के साथ रखे था वो भी मेरे जेब में नहीं थे सूरज आठिया और उसके साथ दोनो साथियो ने मेरे पेंट के जेब से निकालकर चोरी कर लिये है की रिपोर्ट पर अपराध क 1064/2024 धारा 303(2) बीएनएस का पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया दौरान विवेचना प्रकरण की गंभीरता को दृष्टिगत रखते हुये वरिष्ठ अधिकारियों के मार्ग-दर्शन में आवश्यक दिशा-निर्देश प्राप्त किये जाकर विश्वनीय सूचना तंत्र स्थापित कर तलास पतारसी के सार्थक प्रयास किये गये जो आरोपी 01. सूरज आठ्या पिता नंदराम आठ्या उम्र 28 साल नि0 पंतनगर वार्ड सागर 02. सचिन उर्फ सच्चू पिता सीताराम विश्वकर्मा उम्र 27 साल नि0 पंतनगर वार्ड सागर को दस्तयाब कर अभिरक्षा मे लेकर पूछताछ की जाकर मेमोरेण्डम लेख किये गये जिसने घटना को अंजाम देकर मोबाईल व नगदी 20000 रूपये चोरी करना स्वीकार किया जो आरोपी गण को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय पेश किया गया।

धान के लिये 1412 और मोटा अनाज के लिये 104 उपार्जन केन्द्र बनाये गये

ज्वार-बाजरा का उपार्जन 22 नवम्बर और धान का 2 दिसम्बर से

सागर। खाद्य,नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया है कि किसानों की सुविधा की दृष्टि से धान विक्रय के लिये 1412 और मोटा अनाज (ज्वार-बाजरा) के लिये 104 उपार्जन केन्द्र बनाये गये हैं। ज्वार-बाजरा का उपार्जन 22 नवम्बर से और धान का उपार्जन 2 दिसम्बर से होगा।जिला बालाघाट में 185, सतना में 144, जबलपुर में 125, रीवा में 123, सिवनी में 99, कटनी में 84, मण्डला में 67, नर्मदापुरम में 65, सिंगरौली में 58, शहडोल में 55, पन्ना में 47, नरसिंहपुर में 45, सीधी में 43, उमरिया में 42, अनूपपुर में 34, दमोह में 33, डिण्डोरी में 31, रायसेन में 25, सागर में 24, सीहोर में 17, बैतूल में 17, छिंदवाड़ा में 9, शिवपुरी में 8, भिण्ड में 7, दतिया में 7, ग्वालियर में 6, हरदा में 3, विदिशा में 2, मुरैना में 2 और अलीराजपुर, झाबुआ, गुना, भोपाल एवं अशोकनगर में एक-एक धान उपार्जन केन्द्र बनाये गये हैं।इसी तरह ज्वार-बाजरा के उपार्जन के लिये रीवा में 2, सिंगरौली में 3, भिण्ड में 20, दतिया में 4, ग्वालियर में 12, मुरैना में 51 और नर्मदापुरम, शहडोल, पन्ना, नरसिंहपुर, सीधी, सागर, बैतूल, शिवपुरी, विदिशा, बड़वानी, बुरहानपुर और श्योपुर में एक-एक उपार्जन केन्द्र बनाये गये हैं।

ग्राम पंचायत समनापुर शाहजू में बने फील्ड तालाब में नहीं बूंद भर पानी

घटिया एवं गुणवत्ताहीन सड़क का निर्माण, नाली नहीं बनाई

सत्ता सुधार ■ देवरी (सागर)

जनपद पंचायत के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत समनापुर शाहजू में बेहद घटिया एवं गुणवत्ताहीन निर्माण कार्य किया जा रहा है।शासन द्वारा लाखों रुपए की राशि गुणवत्तापूर्ण निर्माण कार्य के लिए दी जाती है लेकिन घटिया एवं गुणवत्ताहीन निर्माण कार्य होने के चलते निर्माण कार्य कुछ दिन बाद ही क्षतिग्रस्त होने लगते हैं। ग्राम पंचायत के ग्राम सर्रा दलपत में सीसी रोड का निर्माण खुमान रैकवार के मकान से मेन रोड सर्रा दलपत तक बनाया गया है। कई स्थानों पर दरार भी देखी गई, यही हाल ग्राम पंचायत द्वारा बनाई गई अन्य सड़कों का है पंचायत द्वारा बनाए गए किचन सेड निर्माण कार्य पुरैना चौकी एवं किचन सेड मरम्मत कार्य सर्रा दलपत में मरम्मत का कार्य दिखाई नहीं दे रहा जबकि राशि का भुगतान किया जाना दिखाई दे रहा है ग्रामीणों का आरोप है कि ग्राम पंचायत में भ्रष्टाचार चल रहा है उक्त मामले में जांच होनी चाहिए।

जहा-तहा वह रहा गंदा पानी ,हैंडपंप के पास बेहद गंदगी

प्रधानमंत्री की महत्वाकांक्षी योजना स्वच्छ भारत को लेकर जरूर लाखों रुपए की राशि खर्च की जा रही है। ग्राम पंचायत द्वारा नाडेप एवं सोखता के नाम पर लाखों रुपए का भुगतान किया लेकिन स्थिति जस की तस है सड़क पर गंदा पानी जहां तहां बह रहा है। हैंडपंप के पास बहुत अधिक गंदगी है और हैंडपंप का गंदा पानी होने के कारण आसपास मच्छर मक्खी फैल रही है ऐसी स्थिति में गांव के लोग परेशान हैं वहीं दूषित पानी होने से बीमार होने की स्थिति बन रही है। फील्ड पॉइंट तालाब की स्थिति बेहद खराब है। फील्ड पॉइंट तालाब में एक बूंद पानी भी नहीं है शासन द्वारा उक्त तालाब उक्त फील्ड तालाब का निर्माण भूजल स्तर बढ़ाने एवं सामान्य दिनों में पानी उपलब्धता के लिए बनाया जाता है लेकिन स्थिति यह है कि निर्माण में लाखों रुपए की राशि खर्च होने के बाद भी उक्त तालाब में एक भी बूंद पानी दिखाई नहीं दे रही। इस संबंध में जनपद पंचायत के उपयंत्री बीड़ी ठाकुर का कहना है कि मेरे द्वारा एस्टीमेट बनाया गया था अभी कुछ मूल्यांकन शेष रह गया है यदि घटिया कार्य है तो मूल्यांकन नहीं कराया जाएगा।

इनका कहना है....

उक्त मामले में जांच कराई जाएगी यदि निर्माण कार्य घटिया एवं गुणवत्ताहीन है ,तो कार्रवाई होगी।

श्रीमती मनीषा चतुर्वेदी
सीईओ जनपद देवरी

प्रतियोगिता होली फेमिली कॉन्वेन्ट स्कूल में हुआ...

दो दिवसीय सहोदय सागर वॉलीबाल प्रतियोगिता का शुभारंभ

सत्ता सुधार ■ खुरई (सागर)

नगर की होली फेमिली कॉन्वेन्ट सीनियर सेकेण्डरी स्कूल में दो दिवसीय सहोदय सागर वॉलीबाल प्रतियोगिता का शुभारंभ हुआ। स्कूली छात्राओं द्वारा प्रार्थना नृत्य किया गया। छात्राओं द्वारा पंजाबी नृत्य की रंगारंभ प्रस्तुति दी। प्रतियोगिता में 19 आयु वर्ग के छात्र-छात्राओं की अलग-अलग टीमें खेलेंगी। वालीबॉल टूर्नामेंट का समापन मंगलवार को होगा होली फैमिली कन्वेंट स्कूल खुरई की प्राचार्या सिस्टर अंजलि ने सभी छात्र-छात्राओं को शुभकामनाएं देते हुए कहा खेल के माध्यम से भी आप सभी छात्र छात्राओं को आगे बढ़ने का मौका मिलता है और

कामयाबी हासिल होती है। इस अवसर पर सिस्टर मौली थॉमस प्राचार्य सेन्ट जोसेफ कॉन्वेन्ट स्कूल, सागर, विशेष अतिथि फादर नेल्सन थेत्ताइल, पेरिस प्रीस्ट होली फेमिली चर्च, खुरई, कार्यक्रम अध्यक्ष सिस्टर अंजली एण्टो प्राचार्य, होली फेमिली कॉन्वेन्ट , संस्था मैनेजर सिस्टर मसी एम.डी., एडमिनिस्ट्रेटर सिस्टर सुशीला, उपप्राचार्या सिस्टर बीना, प्री-प्राइमरी इंचाज सिस्टर सिसी रॉक, पी.टी.आई. संजय दुबे, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा शिक्षक लुईस डेविस ए, कोच अंशुमान सिंह राजपूत एवं समस्त शिक्षक- शिक्षिकाओं और छात्र छात्राए उपस्थित रहे।

डिप्थीरिया बीमारी की रोकथाम हेतु समस्त प्राईवेट शालाओं में

पंजीकृत बालक/बालिकाओं का डी. पी. टी/टी.डी टीकाकरण का आयोजन

सागर। डॉ. ममता तिमोरी मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जिला सागर ने बताया कि विभिन्न राज्यों में इस वर्ष 05 वर्ष,, 10वर्ष एवं 16 वर्ष के बच्चों में डिप्थीरिया बीमारी के केस रिपोर्ट हुये हैं डिप्थीरिया बीमारी की रोकथाम तथा डीपीटी / टीडी जिले में शालेय डी. पी. टी 05 वर्ष, 10 वर्ष टी.डी / 16 वर्ष टी.डी बच्चों का कवरेज को बढ़ाने हेतु प्रदेश की समस्त प्राईवेट शालाओं में प्रति सप्ताह के गुरूवार को पंजीकृत 05 वर्ष, 10 वर्ष, 16 वर्ष के बालक/बालिकाओं का डी. पी. टी / टी.डी का टीकाकरण प्राईवेट शालाओं में किया जावेगा । श्रीमान् संदीप यादव प्रमुख सचिव लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग मध्यप्रदेश एवं डॉ. संजय गोयल सचिव स्कूल शिक्षा विभाग मध्यप्रदेश के संयुक्त रूप से अधिकारी / कर्मचारी / प्राचार्यों / शिक्षकों की सहभागिता एवं समन्वय से अभियान का सफल क्रियान्वयन किया जाना हैं। 05 वर्ष / 10 वर्ष / 16 वर्ष के बालक/बालिकाओं की जानकारी आधार नंबर, स्वास्थ्य कार्यकर्ता / आशा कार्यकर्ता द्वारा प्राप्त कर सभी का यूविन में प्री-रजिस्ट्रेशन किया जावे, टीकाकरण सत्र स्थल स्कूल होगा । जिला सागर ने बतलाया कि यह अभियान प्रति सप्ताह के गुरूवार में शालाओं में टीकाकरण सत्रों का आयोजन किया जावेगा, डिप्थीरिया (गलघोंटू), परट्यूसिस (काली खांसी), और टिटनेस (धनुष्टंकार), घातक एवं जानलेवा बीमारियां हैं।

ब्रीफ न्यूज

जुर्माने की राशि जमा न करने पर खाद्य पदार्थों की 18 फर्मों के लायसेंस निलंबित

ग्वालियर। जुर्माने की राशि जमा न करने वालीं 18 फर्मों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की गई है। खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा इन फर्मों की खाद्य अनुज्ञप्ति पंजीयन(लायसेंस) निलंबित कर दिए गए हैं। कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान के निर्देश पर यह कार्रवाई की गई है। निलंबन अवधि में संबंधित फर्म खाद्य कारोबार नहीं कर सकेंगीं। खाद्य सुरक्षा अधिकारी एस के शर्मा ने बताया फर्म शीतला डेयरी पिन्टोपार्क दो लाख रूपये, आनन्द डेयरी पता माधौगंज ढाई लाख रूपये, कृष्णा डेयरी सी पी कालोनी दो लाख रूपये, हरियाणा डेयरी डेढ लाख रूपये, एफ एण्ड सी बेकरी फूलबाग एक लाख रूपये, नानकसर इण्डस्ट्रीज टीपी नगर डेढ लाख रूपये, आकाश दूध डेयरी कमानी पूल के पास लक्ष्मीगंज चालीस हजार रूपये, लक्ष्मण किराना स्टोर एबी रोड मोतीझील एक लाख रूपये, एग्रो कास्टिंग इण्डस्ट्रीज वाराघाटा एक लाख रूपये, धनलक्ष्मी बेकर्स पंचवटी कालोनी एक लाख रूपये, हरिकृपा डेयरी झॉसी लूप रोड मुरार डेढ लाख रूपये, सागर डेयरी तारागंज दो लाख रूपये, मदनलाल पुत्र हीरालाल दानाओली दो लाख रूपये, निर्मल होटल भोजनालय जौरासी एक लाख रूपये, अंकल फार्मर एग्रो प्रोडक्ट डीडी नगर एक लाख रूपयें, पलक उद्योग सैनिक कालोनी दो लाख रूपये, फर्म मॉ भगवती देवी मार्ट सौदागर संतर मुरार पैतींस हजार रूपये एवं पूजा स्वीट्स सिटीसेन्टर ने एक लाख रूपये की जुर्माना राशि जमा नहीं की है।

ग्वालियर में बेलगाम अपराध

सिरफिरे आशिक ने रात के अंधेरे में मां बेटी पर बरसाई गोलियां, मां की मौत बेटी की हालत गंभीर

सत्ता सुधार ■ ग्वालियर

जिले में पुलिस का खौफ बदमाशों में लगता है पूरी तरह खत्म हो गया है। आए दिन शहर में हो रही फायरिंग और रंगबाजी की घटनाओं के बीच जिले के मोहना थाना क्षेत्र के दौरार गांव में बीती रात एक दबंग ने मां बेटी पर उस समय फायरिंग कर दी, जब वह अपने घर के बाहर चारपाई पर सो रही थीं। सीने और सिर में गोली लगने से अधेड़ महिला मीराबाई की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि उसकी बेटी राजवती घायल हो गई। उसे सीने में गोली लगने के बाद ग्वालियर के ट्रॉमा सेंटर में भर्ती कराया गया है

ग्वालियर के दौरार गांव में घर के बाहर सो रही 65 साल की बुजुर्ग महिला और उसकी बेटी को बदमाश युवक ने गोली मार दी। गोली लगने से मां की मौत हो गई। जबकि बेटी गंभीर रूप से घायल हो गई। घायल बेटी को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है। पुलिस ने तत्काल घायल राजवती उर्फ रज्जो को इलाज के लिए जयारोग्य अस्पताल रेफर कर दिया, जहां उसकी हालत गंभीर बनी हुई है। पुलिस को

प्रारंभिक जानकारी में पता लगा है कि मृतका मीरा की बेटी और हत्या आरोपी विष्णु पंडित लिव-इन रिलेशन में रहते थे, जिसका मीरा आए दिन विरोध करती थी। दो दिन पहले इसी बात को लेकर आपस में काफी बहस भी हुई थी। जिसका बदला लेने के लिए विष्णु पंडित ने मीरा की हत्या कर रज्जो को गोली मार दी और फरार हो गया। इस हत्याकांड में विष्णु के साथ दो से तीन अन्य लोगों को भी शामिल होना बताया जा रहा है। फिलहाल पुलिस ने मृतक के शव को पोस्टमार्टम हाउस भेजकर आरोपी के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है। रज्जो की मां मीरा ने विष्णु पंडित को बेइज्जत कर अपने यहां से भगा दिया था। आरोपी बदले की फिराक में था तभी सोमवार को जब घर के पुरुष रात को खेत पर पानी देने के लिए गए और घर पर महिलाएं अकेली मिली तो आरोपी ने जघन्य घटना को अंजाम दे दिया। सोमवार की सुबह जब मीरा की बड़ी बेटी विद्या घर पहुंची तो देखा कि दोनों के शव खून से सने पड़े थे। तत्काल मामले की सूचना पुलिस को दी गई। घटना का पता चलते ही पुलिस फोर्स मौके पर पहुंची तो बुजुर्ग मीरा की मौत हो चुकी थी, जबकि रज्जो की सांस चल रही थी जिसे अस्पताल में भर्ती कराया गया।

बेटी और उसके बच्चों के साथ रहती थी महिला

ग्वालियर देहात के मोहना थाना क्षेत्र स्थित दौरार गांव में 65 वर्षीय मीरा आदिवासी अपनी बेटी और उसके बच्चों के साथ रहती थी और खेती-बाड़ी कर जीवन यापन करती थी। कुछ ही दूरी पर उसकी बड़ी बेटी रहती है। रज्जो के पास खेरिया जौरा निवासी विष्णु शर्मा अक्सर मिलता था, मीरा को विष्णु का रज्जो से इस तरह मिलना अच्छा नहीं लगता था इसलिए वह उसे बेइज्जत कर भगा देती थी। दो दिन पहले भी इसी बात को लेकर उनके बीच कुछ कहासुनी हो गई थी। पुलिस को जांच में पता लगा है कि मृतका की बेटी के साथ हत्या आरोपी के संबंध थे। दोनों के बीच कुछ दिन पहले विवाद हुआ था।

ग्वालियर की राशि धवल का एमपी अंडर 15 क्रिकेट टीम में चयन, पिता निगमकर्मी

सत्ता सुधार ■ ग्वालियर

नगर निगम के एएचओ पवन धवल की 12 वर्षीय पुत्री राशि धवल ने पिछले दिनों अपने बेहतर प्रदर्शन में एमपी अंडर 15 क्रिकेट टीम में अपनी जगह बना ली है। अब वह मध्यप्रदेश की टीम का पुणे में आयोजित राज्यों के वनडे मुकाबलों में प्रतिनिधित्व करेंगी। राशि धवल को एमपीसीए की अंडर 15 टीम में चुन लिया गया है। ग्वालियर के लक्ष्मणपुरा क्षेत्र वार्ड 31 की रहने वाली 12 वर्षीय राशि धवल नगर निगम कर्मचारी पवन धवल व संगीता धवल की पुत्री हैं और आज एमपी टीम के सिलेक्शन में उसके बेहतर प्रदर्शन पर चयन कर लिया गया है। राशि धवल लेग ब्रेक की करिश्माई गेंदबाज है और अपने कोच नावेद खान के अंडर में लगातार प्रेक्टिस करती है। राशि धवल की इस सफलता पर उनके शुभचिंतकों व परिवारजनों ने बधाई दी है और उज्जवल भविष्य की कामना की है।

आदिवासियों एवं दलितों पर अत्याचार के खिलाफ कांग्रेस का धरना-प्रदर्शन आज

ग्वालियर। श्योपुर जिले की विजयपुर विधानसभा में मतदान के दौरान एवं उसके बाद से हो रहे आदिवासियों और दलितों पर अत्याचार एवं बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा तोड़े जाने के विरोध में आज धरना-प्रदर्शन होगा। इसके साथ ही 16 ग्वालियर पूर्व विधानसभा क्षेत्र के प्रत्येक ब्लॉक में प्रातः 11 बजे से 1 बजे तक धरना प्रदर्शन विधायक डॉ. सतीश सिकरवार एवं जिला कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र शर्मा के नेतृत्व में किया जायेगा।

इन स्थानों पर होगा धरना प्रदर्शन : ब्लॉक इंदरगंज का डॉ. भीमराव अम्बेडकर पार्क फूलबाग, ब्लॉक गोला का मंदिर का डॉ. भीमराव अम्बेडकर पार्क दीनदयाल नगर, ब्लॉक मेला ग्राउण्ड का डॉ. भीमराव अम्बेडकर प्रतिमा सरकारी मल्टी, ब्लॉक थाटीपुर का आनंद नगर बजरिया थाने के पीछे एवं ब्लॉक मुरार का डॉ. भीमराव अम्बेडकर पार्क हुरावली में धरना प्रदर्शन होगा।

कलश यात्रा के साथ श्रीमद् भागवत कथा शुरू

मुख्य यजमान और विधानसभा के अध्यक्ष तोमर परिवार सहित हुए शामिल

सत्ता सुधार ■ ग्वालियर

जानी मानी संत और कथा वाचक मां कनकेश्वरी देवी की श्रीमद् देवी भागवत कथा सोमवार से ग्वालियर के मुरार में रामलीला मैदान में शुरू हो गई। कथा से पहले मुरार के आर्य नगर से कलश यात्रा निकाली गई। कलश यात्रा बारादरी चौराहा, माल रोड होते हुए कथा स्थल रामलीला मैदान पहुंची। कलश यात्रा में बड़ी संख्या में महिलाएं पीले वस्त्र पहन सिर पर कलश धारण कर चल रही थी। सबसे आगे घुड़सवार दस्ता चल रहा था। कथा की मुख्य यजमान मध्य प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर कलश यात्रा में शामिल हुए। कलश यात्रा में उनकी पत्नी श्रीमती किरण तोमर, उनके बेटे भाजपा नेता देवेंद्र प्रताप सिंह तोमर और प्रबल प्रताप सिंह तोमर, मुरैना के सांसद शिव मंगल सिंह तोमर, पूर्व सांसद विवेक नारायण शेजवलकर, सभापति मनोज सिंह तोमर, जयसिंह कुशवाह, भाजपा जिला अध्यक्ष अभय चौधरी सहित भाजपा कार्यकर्ता, समाजसेवी और आमजन शामिल हुए। मां कनकेश्वरी देवी इससे पहले भी ग्वालियर में मध्यप्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर के आग्रह पर कथा कह चुकी हैं। यह पहला मौका है जब मां कनकेश्वरी देवी ग्वालियर में श्रीमद् देवी भागवत की कथा श्रद्धालुओं को सुना रही हैं।

बजरंग भक्त मंडल ने की 700 किलो हरे चारे की गौसेवा

सत्ता सुधार ■ ग्वालियर

बजरंग भक्त मंडल द्वारा जनकताल स्थित गौशाला में 700 किलो हरे चारे की सेवा की गई। उक्त सेवा में 117 किलो हरे चारे की सेवा डीडवाना ओली वालों द्वारा,100 किलो की सेवा नल वालों द्वारा,100 किलो की सेवा गुप्तरूप, 100 किलो की सेवा शालिनी त्रिपाठी द्वारा, 100 किलो की सेवा गुप्तरूप द्वारा,100 किलो की सेवा गोयल परिवार द्वारा, 58 किलो की सेवा रचना गोयल द्वारा, 50 किलो की सेवा अनिल गुप्ता द्वारा यानी कुल 700 किलो हरे चारे की सेवा की गई। गौसेवा में मंडल के अध्यक्ष आशीष मंगल, सचिव राकेश मंगल, उपाध्यक्ष अमन गर्ग, सहसचिव नमन अवस्थी, कोषाध्यक्ष राम किशोर मंगल, संजीव गुप्ता, हरीश राठौर, हरीश चंद्र अग्रवाल, विशाल अग्रवाल, दीपक बघेल, अंकित तिवारी आदि सदस्य उपस्थित थे।

ओहदपुर की सरकारी जमीन पर बनी दुकानों को खाली करने के लिए दी अंतिम चेतावनी

ग्वालियर। जिला पंजीयन कार्यालय के सामने ओहदपुर के सर्वे क्रमांक 200 की शासकीय जमीन पर किये गये अतिक्रमण हटाने के लिए जिला प्रशासन द्वारा कार्रवाई शुरू कर दी गई है। उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय में भी इस जमीन को शासकीय माना गया है। तहसीलदार सिटीसेंटर अनिल राघव ने इस सरकारी जमीन पर बनी दुकानों व भवन को खाली कराने के लिए सोमवार को मौके पर पहुंच कर मुनादी की और दुकानदारों को अंतिम चेतावनी दी। उन्होंने इस दौरान स्पष्ट किया कि यदि शासकीय जमीन पर बनी दुकानों व भवन को खाली नहीं किया गया तो वैधानिक कार्रवाई करते हुए भवन व दुकानें खाली कराई जायेंगी। राघव ने बताया कि इस शासकीय जमीन पर बनी दुकानों को 18 नवंबर को सांयकाल 5 बजे तक खाली करने के लिए नोटिस दिए गए थे।

खंड–I

ई–निविदा आमंत्रण सूचना

कार्यालय– सतपुड़ा टाइगर रिजर्व, नर्मदापुरम, मध्यप्रदेश

ई–निविदा आमंत्रण सूचना संख्या 7096 /ई–टेंडरिंग/2024–25, दिनांक 12-11-2024

उपसंचालक, सतपुड़ा टाइगर रिजर्व, नर्मदापुरम द्वारा म.प्र. भण्डार क्रय नियम एवं सेवा उपार्जन नियम, 2015 (यथा संशोधित–2022) के अंतर्गत निम्नलिखित ई–निविदा आमंत्रित की जाती है।

क्रमांक	सामग्री का विवरण	सत्यांकार निधि	निविदा दस्तावेजों का मूल्य
1	**Tent** 1- Tent size 10'x10'x9.5'x6' (LxBxCenter height x Wall height) 2- 3 layer Tent of good material with best Stitching 3- Tent Material PV Rib Stop Canvas 100% Waterproof 4- Outer size 12'x16' 5- Outer Material PVC 600 GSM Beat Quality 6- Liner Polyester & Canvas 7- Frame Material 16 Gages CRC Pipe 8- Nylon Tap TCP Quality 9- Stap bukkal & Nylone Rope	13500.00	500.00

- निविदा दस्तावेज से संबंधित सभी विवरण ई–प्रोक्योरमेंट पोर्टल पर निःशुल्क देखे और डाउनलोड किए जा सकते है।
- इच्छुक निविदाकार क्रेडिट/डेबिट/कैश कार्ड/इंटरनेट बैंकिंग के माध्यम से पोर्टल शुल्क ऑनलाइन भुगतान करने के बाद निविदा दस्तावेज को ई–प्रोक्योरमेंट पोर्टल पर दिनांक 13.11.2024 को शाम 05.00 बजे से दिनांक 30.11.2024 को शाम 05.00 बजे तक केवल ऑनलाइन खरीद सकते है।
- ई–प्रोक्योरमेंट पोर्टल पर महत्वपूर्ण तिथियों के रूप में उल्लिखित निविदा प्रक्रिया तिथियां लागू होगी।
- ई–निविदा आमंत्रण सूचना में शुद्धिपत्र/परिशिष्ट, यदि कोई हो केवल पोर्टल पर प्रकाशित किया जाएगा, समाचार पत्रों में नहीं।

https://www.mptenders.gov.in/

उपसंचालक
सतपुडा टाइगर रिजर्व
नर्मदापुरम

G-19157/24

क्योस्क संचालक की धोखाधड़ी के खिलाफ पीड़ितों ने दिया सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया की शाखा पर धरना

सत्ता सुधार ■ ग्वालियर

इंद्रानगर अवार्डपुरा में स्थित सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के क्योस्क सेंटर के संचालन शाहिद उर्फ मोनू खान द्वारा सेकडो सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के नाम पर ग्राहकों को अधिक ब्याज दिलाने का झांसा देकर फर्जीवाड़ा किया गया है। इसको लेकर पीड़ित लोगों के भुगतान को लेकर आम आदमी पार्टी ने आज धरना दिया। लोगों का आरोप है कि क्योस्क संचालक द्वारा एफडी और अन्य बचत का झांसा देकर फर्जी जमा स्लिप बना कर गरीबों के साथ करोड़ो रुपए की धोखाधड़ी की गई है। इस संबंध में कम्पू थाने में 4 लोगों पर मुकदमा दर्ज भी किया है । जिसमें एक मुख्य आरोपी मोनू खान गिरफ्तार हुआ है बाकी आरोपी अभी भी फरार घूम रहे हैं। एफआईआर दर्ज होने के बाद आरोपी पकड़ा भी गया लेकिन न तो

पीड़ितों की रकम जप्त कर पाई और न ही बैंक के द्वारा आज तक कोई पैसा लौटाया गया है। जिसके कारण लोगों में आक्रोश पनप रहा है लोग परेशान हो रहे है कई लोगों के घर में बेटी की शादी है पर सारी बैंक में जमा पूजी लोगो की धोखाधड़ी की भेट चढ़ गई जिससे नाराज लोगों ने पैसे वापस करने की मांग को लेकर सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया की कंपू शाखा के बाहर आम आदमी पार्टी के जिलाध्यक्ष अमित शर्मा और आप नेता कार्यकर्ताओं के साथ हाथों में तख्तियां लेकर धरना दिया। बैंक के बाहर लगभग 1 घंटे से ज्यादा लंबा धरना चला तब कहीं जाकर बैंक मैनेजर के द्वारा जल्द पैसे वापसी का भरोसा ग्राहकों को दिया गया और धरना समाप्त हो गया। धरने में आप जिलाध्यक्ष अमित शर्मा जिला सचिव त्रिलोचन सिंह यशवंत पटवारी, मोहन पाल, ओ पी उपमन्यु,भगवान सिंह कुशवाह, हामिद खान इकराम खान, भूपेंद्र पांडे, मनोहर लाल शाहू महमूद खान रूप मिंज और सेकडो लोग शामिल हुए।

म.प्र. गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल संभाग सागर भवन भूखण्ड हस्तान्तरण / नामान्तरण हेतु सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मण्डल कॉलोनी पं दीनदयाल नगर सागर स्थित भवन क्रमांक एलआईजी 66 मण्डल द्वारा श्री जितेन्द्र कुमार शर्मा पिता श्री रामनारायण शर्मा को आवंटित किया गया था। जिसका विक्रय विलेख मण्डल द्वारा दिनांक 02.04.2007 को निष्पादित कराया गया। श्री जितेन्द्र कुमार शर्मा पिता श्री रामनारायण शर्मा द्वारा उक्त भवन विक्रय विलेख निष्पादित दिनांक 25.10.2024 के माध्यम से श्रीमति रचना अहिरवार पति श्री. प्रीतम अहिरवार को विक्रय किया। श्रीमति रचना अहिरवार पति श्री प्रीतम अहिरवार द्वारा उक्त भूखण्ड स्वयं के नाम से नामान्तरित/ हस्तान्तरित कराने हेतु आवेदन / दस्तावेज / शपथ पत्र इस कार्यालय में प्रस्तुत किया गया है। यदि किसी व्यक्ति को संस्था या हित रखने वाले वैद्य व्यक्ति को हस्तान्तरण / नामान्तरण बावत आपत्ति हो तो इस सूचना के प्रकाशन होने से 15 दिवस के अन्दर लिखित में वैद्य आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित अवधि के पश्चात हस्तान्तरण / नामान्तरण की कार्यवाही कर दी जावेगी। जिस पर किसी का कोई दावा मान्य नही होगा।

संपत्ति अधिकारी
म.प्र. गृह निर्माण एवं अधो. विकास मण्डल संभाग सागर

कार्यालय नगर पालिक निगम सागर

क्र/नामा.शा./न.नि./2024/25/ सागर दिनांक.....

-:: सूचना ::-

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि नगर पालिक निगम सागर सीमान्तर्गत नीचे दिए गए भवन/प्लाटों पर नाम दर्ज करने हेतु आवेदन प्राप्त हुए है। अतः इस संबंध में जिन व्यक्तियों को कोई आपत्ति हो तो वे अपनी लिखित आपत्ति सूचना प्रकाशन के 30 दिवस के अन्दर आयुक्त, नगर पालिक निगम सागर के नाम से प्रस्तुत कर सकते हैं।

क्र.	प्र.क्र.	वार्ड का नाम भवन/प्लाट	किस आधार पर	नाम बेचवार/ वसीयनामा / दानदाता/ वंशानुक्रम	जिस व्यक्ति का नाम दर्ज होना है
1	1091/24-25	कटरा	रजि, बैनामा शपथपत्र	राधेलाल, नारायण पिता नन्नूलाल शकुनबाई पति रामपाल, रुकमणिबाई पति कृष्णपाल, मंजू कुमारी पति शंकरलाल, सावित्री बाई पति रामदास, रुकमणि पति हरिनारायण माहेश्वरी	प्रदीप कुमार पिता गुलझारी लाल जैन
2	1092/24-25	राजीवनगर	रजि, दानपत्र शपथपत्र	बाबूलाल पिता खुमान प्रसाद साहू	ऋषभ पिता गोपाल प्रसाद साहू
3	1093/24-25	राजीवनगर	रजि, दानपत्र शपथपत्र	बाबूलाल पिता खुमान प्रसाद साहू	कोमलचंद पिता बाबूलाल साहू
4	1094/24-25	मधुकरशाह	रजि, बैनामा शपथपत्र	रामप्यारी बेवा नाथूराम ऊर्फ नत्थू यादव	हेमलता पति बंशीलाल आठिया
5	1095/24-25	तुलसीनगर	रजि, बैनामा शपथपत्र	प्रिंस पिता अनिल सोधिया	नम्रता पुत्री राजेन्द्र सोधिया
6	1096/24-25	गोपालगंज	अपंजीकृत वसीयत, मृत्यु-प्रमाण पत्र, शपथपत्र	कांतिबाई पति स्व. बालमुकंद सैनी	दिनेश कुमार पिता स्व. श्याम सुंदर सैनी
7	1097/24-25	वृन्दावन	अपंजीकृत वसीयत, मृत्यु-प्रमाण पत्र शपथपत्र	कांतिबाई पति स्व.बालमुकंद सैनी	राजेश कुमार पिता स्व. श्याम सुंदर सैनी
8	1098/24-25	गोपालगंज	अपंजीकृत वसीयत, मृत्यु-प्रमाण पत्र शपथपत्र	कांतिबाई पति स्व.बालमुकंद सैनी	तुलसीराम पिता स्व. श्याम सुंदर सैनी
9	1099/24-25	वृन्दावन	अपंजीकृत वसीयत, मृत्यु-प्रमाण पत्र, शपथपत्र	कांतिबाई पति स्व. बालमुकंद सैनी	दिनेश कुमार पिता स्व. श्याम सुदंर सैनी
10	1100/24-25	गोपालगंज	अपंजीकृत वसीयत, मृत्यु-प्रमाण पत्र, शपथपत्र	कांतिबाई पति स्व. बालमुकंद सैनी	राजेश कुमार पिता स्व. श्याम सुंदर सैनी

कृते- आयुक्त,
नगर पालिक निगम, सागर

सत्ता न्यूज | शहर को वर्तमान में एक दिन छोडकर व मई-जून में प्रतिदिन पेयजल आपूर्ति का निर्णय

हरसी मुख्य नहर एवं हरसी उच्च स्तरीय नहर से 21 को छोड़ा जायेगा पानी

ग्वालियर। हरसी कमांड क्षेत्र के आखिरी छोर पर स्थित गांवों में रबी मौसम के पलेवा के लिए हरसी मुख्य नहर एवं हरसी उच्च स्तरीय नहर 21 नवंबर को खोली जाएगी। इस साल के रबी मौसम में हरसी मुख्य नहर से एक पलेवा व दो सिंचाई एवं हरसी उच्च स्तरीय नहर से एक पलेवा व एक सिंचाई के लिए जिले के किसानों को पानी मिलेगा। इस आशय का निर्णय कलेक्टर रूचिका चौहान की अध्यक्षता में आयोजित हुई जिला जल उपयोगिता समिति की बैठक में जिले के हरसी तथा अन्य जलाशयों में उपलब्ध पानी की समीथा के बाद लिया गया। बैठक में स्पष्ट किया गया कि रबी की सिंचाई के लिए अतिरिक्त पानी मढ़ीखेड़ा से उपलब्ध होने पर ही दिया जा सकेगा। सोमवार को कलेक्ट्रेट के सभागार में आयोजित हुई जिला जल उपयोगिता समिति की बैठक में तिघरा से ग्वालियर शहर की पेयजल आपूर्ति सुचारू

बनाए रखने के लिए भी बैठक में अहम निर्णय लिया गया। नगर निगम के प्रस्ताव के आधार पर वर्तमान में पानी की कम मांग को ध्यानमें रखकर एक दिन छोड़कर पानी की सप्लाई करने एवं गर्मी के मौसम में जब पानी की अधिक मांग हो तब मई व जून के महीने में प्रतिदिन शहर को पेयजल आपूर्ति करने का निर्णय बैठक में हुआ है। बैठक में भितरवार विधायक मोहन सिंह राठौर वर्चुअल शामिल हुए। यहां कलेक्ट्रेट के सभागार में विधायक डबरा सुरेश राजे व सांसद प्रतिनिधि डॉ. विजय दुबे सहित समिति के अन्य सदस्यगण तथा जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी विवेक कुमार, अधीक्षण यंत्री जल संसाधन राजेश चतुर्वेदी, कार्यपालन यंत्री जल संसाधन पंकज सेंगर व अग्निवेश, उप संचालक कृषि आर.एस. शाक्यवार एवं अन्य संबंधित अधिकारी मौजूद थे।

गाइड लाइन के अनुसार ही नहर में मोटर से पानी निकालने की अनुमति दें

कलेक्टर रूचिका चौहान ने जोर देकर कहा कि नहरों में पानी छोडने के बाद किसान सिंचाई पंप से गाइड लाइन के अनुसार ही पानी लें इसकी विशेष निगरानी रखी जाए। बैठक में जानकारी दी गई कि चलती नहर से किसानों को पांच हार्सपॉवर की मोटर से अपने खेतों के लिए पानी लेने की अनुमति रहती है। कलेक्टर चौहान ने जलसंसाधन विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि इस गाइड लाइन का पालन करायें और जो किसान प्रावधानों का उल्लंघन कर अधिक हॉर्सपॉवर की मोटर लगाकर आगे के लिए पानी जाने में बाधा डालें उनके खिलाफ कार्रवाई की जाए।

ब्रीफ न्यूज

श्रीलंका के नए मंत्रिमंडल का शपथग्रहण आज

कोलंबो। श्रीलंका के नए मंत्रिमंडल का शपथग्रहण समारोह सोमवार को आयोजित होनेजा रहा है। राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसानायके नवनिर्वाचित कैबिनेट मंत्रियों और उपमंत्रियों को शपथ दिलाएंगे। राष्ट्रपति कार्यालय (पीएमडी) के अनुसार, राष्ट्रपति दिसानायके 23 सदस्यीय मंत्रिमंडल का गठन करेंगे। हाल ही में संपन्न संसदीय चुनाव में राष्ट्रपति की पार्टी नेशनल पीपुल्स पावर (एनपीपी) ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 225 में से 159 सीटों पर जीत हासिल कर ली है।

रयुक्यु द्वीप के दक्षिण-पूर्व में 6.2 तीव्रता का भूकंप

हांगकांग। रयुक्यु द्वीप के दक्षिण-पूर्व में रविवार को भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। जर्मन रिसर्च सेंटर फॉर जियोसाइंसेज (जीएफजेड) के अनुसार, भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 6.2 मापी गई है। भूकंप से किसी जन-धन की हानि होने की कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई है। भूकंप अंतरराष्ट्रीय समयानुसार रविवार को 12:16 बजे आया। इसका केंद्र 29.00ए उत्तरी अक्षांश और 131.30ए पूर्वी देशांतर पर, जमीन से 10 किलोमीटर की गहराई में स्थित था। अब तक किसी बड़े नुकसान या जानमाल की हानि की सूचना नहीं है। स्थानीय अधिकारियों ने क्षेत्र में स्थिति पर नजर बनाए रखी है और एहतियातन कदम उठाए जा रहे हैं। रयुक्यु द्वीप, जो भूकंप-प्रवण क्षेत्र में स्थित है, पहले भी इस तरह की घटनाओं का सामना कर चुका है।

24 घंटे में इजराइली सेना के हमलों में 80 की मौत, मरने वालों में महिलाएं बच्चे

तेल अवीव। इजराइली सेना की तरफ से पिछले 24 घंटे में किए हवाई हमलों में 80 से ज्यादा लोगों की जान जा चुकी है, जिसमें गाजा पट्टी में करीब 50 लोग मारे गए, जबकि बेरूत के दक्षिणी उपनगर पर की गई बमबारी में 33 अन्य लोगों की जान चली गई थी। मीडिया रिपोर्ट में गाजा के मेडिकल ऑफिसर्स ने बताया कि इजराइली सेना ने इलाके के उस क्षेत्र को भी निशाना बनाया गया जिसे मानवीय क्षेत्र घोषित किया गया और वहां आम नागरिक रह रहे थे। इजराइल द्वारा यह बमबारी ऐसे समय में की गई जब अमेरिका ने कहा है कि वह गाजा में और ज्यादा मानवीय सहायता भेजने की समय-सीमा बीत जाने के बाद भी इजराइल को दी जाने वाली अपनी सैन्य मदद में कमी नहीं करेगा।

शेख हसीना की बढ़ी मुश्किलें, अंतरिम सरकार ने इंटरपोल से मांगी मदद

ढाका। बांग्लादेश की पूर्व पीएम शेख हसीना की मुश्किलें बढ़ने वाली हैं क्योंकि अंतरिम सरकार के मुखिया मोहम्मद यूनुस अब उन्हें भारत से वापस लाने के लिए नई चाल चल रहे हैं। ऐसा कहा जा रहा है कि यूनुस ने कहा कि उनका प्रशासन अपदस्थ पीएम शेख हसीना को भारत से वतन भेजने की मांग करेगा। बांग्लादेश में अगस्त में बड़े पैमाने पर विरोध-प्रदर्शनों के चलते सत्ता से बेदखल होने के बाद हसीना भारत में ही रह रही हैं। अपने कार्यकाल के 100 दिन पूरे होने पर राष्ट्र के नाम संदेश में मोहम्मद यूनुस ने कहा कि अंतरिम सरकार शेख हसीना समेत उन लोगों पर मुकदमा चलाएगी, जो छात्र-नेतृत्व वाले प्रदर्शनों के दौरान सैकड़ों मौतों के लिए जिम्मेदार हैं।

यूक्रेन के लवीव इलाके में एक रहवासी परिसर पर रुसी मिसाइल हमले के बाद लगी आग बुझाते हुए दमकलकर्मी।

स्टारमर ने कहा- पुतिन से बात करने की कोई योजना नहीं

एजेंसी ■ लंदन

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टारमर का कहना है कि उनकी रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से बातचीत करने की कोई योजना फिलहाल नहीं है। यह बयान उन्होंने जर्मन चांसलर ओलाफ स्कोल्ज़ द्वारा पुतिन से टेलीफोन पर की गई बातचीत पर प्रतिक्रिया देते हुए दिया। यहां बताते चलें कि जर्मन चांसलर स्कोल्ज़ और पुतिन के बीच की बातचीत जर्मनी की पहल पर हुई थी। क्रेमलिन और बर्लिन दोनों ने शुक्रवार को इस संवाद की पुष्टि भी कर दी है। एक बातचीत के दौरान ब्रिटेन के पीएम स्टारमर ने कहा कि यह चांसलर स्कोल्ज़ का मामला है कि वे किससे बात करते हैं। मेरी पुतिन से बात करने की कोई योजना नहीं है।

गौरतलब है कि ब्रिटेन लंबे समय से रूस के प्रति कड़ा रुख अपनाए हुए है। यूक्रेन संघर्ष के बाद ब्रिटेन ने रूस पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए और यूक्रेन को सैन्य सहायता भी प्रदान की। प्रधानमंत्री स्टारमर का यह बयान उसी नीति के अनुरूप माना जा रहा है।

पुतिन-स्कोल्ज़ की बातचीत

क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेसकोव के अनुसार, पुतिन और स्कोल्ज़ के बीच बातचीत व्यावसायिक, विस्तृत और स्पष्ट रही। यह वार्ता वर्तमान वैश्विक मुद्दों और रूस-यूक्रेन संघर्ष के मद्देनजर हुई।

पीएम मोदी ब्राजील पहुंचे, जी20 शिखर सम्मेलन में होंगे शामिल

चीन और अमेरिकी राष्ट्रपतियों समेत कई नेताओं से करें मुलाकात

एजेंसी ■ ब्राजीलिया

पीएम नरेन्द्र मोदी अपनी यात्रा के दूसरे चरण में सोमवार को ब्राजील पहुंचे, जहां वह जी20 शिखर सम्मेलन में शामिल होंगे। मोदी नाइजीरिया की यात्रा पूरी करने के बाद दक्षिण अमेरिकी देश पहुंचे, जहां उन्होंने राष्ट्रपति बोला अहमद टिनुबू के साथ द्विपक्षीय वार्ता की और भारतीय समुदाय के साथ बातचीत की। विदेश मंत्रालय ने अपने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि पीएम नरेन्द्र मोदी जी20 शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए ब्राजील के शहर रियो डी जेनेरियो पहुंचे। विदेश मंत्रालय ने हवाई अड्डे पर मोदी के स्वागत की तस्वीरें भी साझा की हैं। अपने आगमन की घोषणा करते हुए मोदी ने अपने आधिकारिक 'एक्स' हैंडल पर एक पोस्ट में कहा कि जी20 शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए ब्राजील के रियो डी जेनेरियो पहुंच गया हूं। मैं शिखर सम्मेलन में होने वाले विचार-विमर्श और विश्व के कई नेताओं के साथ बातचीत करने का इंतजार कर रहा हूं।

इससे पहले नाइजीरिया यात्रा के दौरान पीएम मोदी को देश के राष्ट्रीय पुरस्कार 'ग्रैंड कमांडर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द नाइजर' (जीसीओएन) से सम्मानित किया गया, जिससे वह यह सम्मान पाने वाले दूसरे विदेशी गणमान्य लोगों में शामिल हो गए हैं। यह किसी देश द्वारा पीएम मोदी को दिया गया 17वां अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार है। अब तक ब्रिटेन की दिवंगत महारानी एलिजाबेथ एकमात्र विदेशी हस्ती रहीं जिन्हें 1969 में जीसीओएन से सम्मानित किया गया था। ब्राजील में मोदी 'ट्रोइका' के सदस्य के रूप में 19वें जी20 शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेंगे। भारत ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका के साथ जी20 'ट्रोइका' का हिस्सा है। 'ट्रोइका' में वर्तमान पूर्ववर्ती और अगले जी20 अध्यक्ष शामिल होते हैं और तीनों सदस्य जी20 शिखर सम्मेलन की तैयारी में एक दूसरे के साथ सहयोग करते हैं। मोदी के साथ चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग और उनके अमेरिकी के जो बाइडन भी 18-19 नवंबर को रियो डी जेनेरियो शिखर सम्मेलन में भाग लेने वालों में शामिल हैं।

अपनी यात्रा के तीसरे और अंतिम चरण में पीएम मोदी, राष्ट्रपति मोहम्मद इरफान अली के निमंत्रण पर 19 से 21 नवंबर तक गुयाना जाएंगे। यह 50 से ज्याया सालों में किसी भारतीय पीएम की गुयाना की पहली यात्रा होगी। मोदी ने शनिवार को नाइजीरिया से प्रस्थान के समय अपने वक्तव्य में कहा था कि इस साल ब्राजील ने भारत की विरासत को आगे बढ़ाया है। मैं एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य के हमारे दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए सार्थक बातचीत की आशा करता हूं। मैं इस मौके पर कई अन्य नेताओं के साथ द्विपक्षीय सहयोग को आगे बढ़ाने पर विचारों का आदान-प्रदान भी करूंगा। पिछले साल भारत की जी20 अध्यक्षता के दौरान 55 देशों के अफ्रीकी संघ को जी20 के स्थायी सदस्य के रूप में शामिल करना और यूक्रेन संघर्ष पर गहरे मतभेदों को दूर करते हुए नेताओं की घोषणा तैयार करना इस शिखर सम्मेलन की प्रमुख उपलब्धि रहा।

ब्राजील में पीएम मोदी का संस्कृत मंत्रों के उच्चारण से हुआ जोरदार स्वागत

ब्राजीलिया। पीएम नरेंद्र मोदी नाइजीरिया दौरे पूरा करने के बाद रविवार को जी-20 शिखर सम्मेलन में शिरकत करने ब्राजील पहुंचे। जहां लोगों ने उनका स्वागत संस्कृत मंत्रों के उच्चारण के साथ किया। इस दौरान विदेशी धरा पर भारतीय संस्कृति की गहरी छाप देखकर पीएम मोदी अभिभूत हो गए। ब्राजील में पीएम मोदी के इस स्वागत का वीडियो वायरल हो रहा है। भारतीय समुदाय द्वारा किए गए स्वागत की तस्वीरें पीएम मोदी ने खुद अपने सोशल मीडिया एक्स हैंडल पर साझा की। इन तस्वीरों में पीएम मोदी भारतीय समुदाय के लोगों से गर्मजोशी के साथ मुलाकात करते नजर आ रहे हैं। लोगों के हाथों में तिरंगा झंडे के अलावा कुछ अन्य तस्वीरें लिए मोदी-मोदी के नारे लगा रहे थे, जिन्हें वो पीएम मोदी को दिखाते हुए नजर आ रहे हैं।

नासा ने अंतरिक्ष से शेयर की सुनीता विलियम्स की तस्वीर, सेहत में दिखा सुधार

एजेंसी ■ वॉशिंगटन

सुनीता विलियम्स पिछले छह महीनों से अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर फंसी हुई हैं। वह नासा की प्रसिद्ध अंतरिक्ष यात्री हैं। उन्हें जून में ही 10 दिनों की अंतरिक्ष यात्रा के बाद वापस लौटना था, लेकिन उनके अंतरिक्ष यान में आई खराबी के कारण लैंडिंग को टालना पड़ा। इस बीच कुछ दिनों पहले अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन से सुनीता विलियम्स की एक तस्वीर आई थी, जिसमें वह काफी दुबली-पतली दिखाई दे रही थीं। लेकिन, अब नासा ने उनकी एक और नई तस्वीर जारी की है, जिसने उनके स्वास्थ्य में सुधार दिखा है। सुनीता विलियम्स नई तस्वीर में अंतराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन की खिड़की से पृथ्वी को निहारती नजर आ रही हैं। हाल में ही सुनीता विलियम्स ने किबो प्रयोगशाला मॉड्यूल में एस्ट्रोबी रोबोटिक फ्री-फ्लायर की जांच की। इस दौरान उन्होंने गेको जैसे चिपकने वाले पैड से सुसज्जित टेंटेकल जैसी रोबोटिक हैंड इंस्टॉल की। इस इंस्टॉलेशन का उद्देश्य सैटेलाइट कैप्चर तकनीक का प्रदर्शन करना है, जो भविष्य के अंतरिक्ष मिशनों के लिए एक महत्वपूर्ण प्रगति है। 61 साल के विल्मोर और 58 साल की सुनीता बोइंग स्टारलाइनर अंतरिक्ष यान पर सवार होकर अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पहुंचे थे। इंजीनियर यह अध्ययन कर रहे हैं कि सर्विसिंग या हटाने के लिए अंतरिक्ष की वस्तुओं को कैसे कैप्चर किया जाए। एस्ट्रोबी रोबोट, जो क्यूब के आकार के और टोस्टर के आकार के होते हैं, पृथ्वी पर मौजूद इंजीनियरों द्वारा दूर से नियंत्रित किए जाते हैं। इससे अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन या दूसरे सैटेलाइटों के साथ किसी अन्य उपकरणों को जोड़ने या अंतरिक्ष में मुक्त रूप से उड़ने वाली वस्तुओं को कैप्चर करने के लिए सुनीता विलियम्स के लगाए गए रोबोटिक हैंड का इस्तेमाल किया जा सकता है। सुनीता विलियम्स और उनके साथी बुच विल्मोर इसी साल 5 जून को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के लिए परीक्षण मिशन पर रवाना हुए थे।

खूबसूरत कलश महिलाओं को मिला है विशेषाधिकार

पसंदीदा पुरुष के साथ भागना कोई अपराध नहीं

एजेंसी ■ इस्लामाबाद

पाकिस्तान के चित्राल जिले में स्थित कलश घाटी इसलिए भी खास हो जाती है, क्योंकि यहां की स्त्रियां जहां बेहद खूबसूरत होती हैं, वहीं इन्हें एक विशेषाधिकार प्राप्त होता है कि वो जब चाहें अपने पसंद के पुरुष के साथ भाग सकती हैं। इस तरह से यहां की महिलाओं को असामान्य स्वतंत्रता प्राप्त है। यह वाकई एक रहस्यमय संस्कृति का घर है। कलश की महिलाएं अपनी इच्छाओं और पसंद के आधार पर जीवन निर्णय ले सकती हैं, जिसमें वे अपना प्रेमी चुन सकती हैं और यदि वे चाहें तो शादी के बाद दूसरे पुरुष के साथ भाग सकती हैं। इस अनोखी परंपरा ने कलश घाटी को अन्य हिस्सों से अलग बना दिया है, जहां महिलाओं के अधिकार और व्यवहार पर रूढ़िवादी इस्लामी दृष्टिकोण हावी है। पाकिस्तान में कलश लोग अपनी खूबसूरती के लिए भी जाने जाते हैं, और उनकी महिलाएं दुनिया की सबसे सुंदर महिलाओं में मानी जाती हैं। इस समुदाय के लोग अपने विशिष्ट रूप और शारीरिक बनावट के लिए जाने जाते हैं, जो उनके पश्तून पड़ोसियों से बिल्कुल अलग है। इस कारण से, कलश लोगों के उद्भव को लेकर कई सिद्धांत हैं, और इनमें एक प्रमुख सिद्धांत यह है कि वे सिकंदर महान के वंशज हो सकते हैं। कहा जाता है कि इनकी हल्की आंखों और गोरे रंग के कारण इसे सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस से जोड़ा जाता है। हाल ही में किए गए शोध में यह भी कहा गया है कि कलश लोग पश्चिमी यूरेशिया से संबंधित हो सकते हैं, और उनके डीएनए से यह पुष्टि की गई है कि उनका संबंध फिलिस्तीन, लेबनान और सीरिया से हो सकता है। कलश घाटी में महिलाओं को न केवल अपने जीवन साथी चुनने की स्वतंत्रता है, बल्कि वे बिना परदे के पुरुषों के साथ बाहर भी जा सकती हैं और उनसे बात कर सकती हैं।

ब्राजील की फर्स्ट लेडी ने ऐसा क्या कह दिया मस्क के खिलाफ... गर्मा दिया माहौल

ब्राजीलिया। जी 20 के कार्यक्रम में ब्राजील की फर्स्ट लेडी जान्जा लूला डी सिल्वा ने नियंत्रण की आवश्यकता पर अरबपति एलॉन मस्क के खिलाफ तीखे शब्दों का इस्तेमाल किया। इस बयान ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति और सोशल मीडिया पर बहस को गर्मा दिया है। जान्जा, ब्राजील के राष्ट्रपति लूला डी सिल्वा की पत्नी हैं, ने कहा, मुझे लगता है कि यह मस्क है, और फिर उन्होंने मजाकिया अंदाज में जोड़ा, मैं तुमसे नहीं डरती, फज्यू, मस्क। यह घटना तब हुई जब वह सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स द्वारा फैलाए जा रहे फेक न्यूज और गलत सूचनाओं के खतरे पर बोल रही थीं। मस्क ने टिप्पणी का जवाब हल्के-फुल्के अंदाज में दिया। उन्होंने जान्जा के बयान का वीडियो शेयर कर हंसी के इमोजी के साथ प्रतिक्रिया दी। इसके अलावा, उन्होंने एक अन्य पोस्ट में लिखा, ब्राजील में वह अगला चुनाव हारने जा रही हैं। ब्राजील में मस्क के एक्स को एक माह के लिए निलंबित कर दिया गया था।

पेरिस में फ्रांस के किसान टैक्टरों से सड़क ब्लाक कर ईयू मिरकोसर के बीच फ्री ट्रेड डील का विरोध करते हुए।

नुकसान माता-पिता ने कराया एआई कंपनी पर मामला दर्ज, कंपनी ने जताया दुख

लड़के ने चैटबॉट को माना अपनी गर्लफ्रेंड, बार-बार उकसाने पर की खुदकुशी

एजेंसी ■ फ्लोरिडा

एआई आजकल सभी क्षेत्रों में अपना प्रभाव बढ़ा रहा है। इससे फायदे हैं तो नुकसान भी देखने को मिल रहे हैं। वहीं फ्लोरिडा में एक ऐसा मामले सामने आया है जहां एक 14 साल के नाबालिग लड़के ने एआई चैटबॉट के प्रभाव के कारण अपनी जान दे दी। लड़के ने इस चैटबॉट को अपनी गर्लफ्रेंड मान लिया और उसका नाम डेनेरीस रखा था, जो कि टीवी शो गेम ऑफ थ्रोन्स की एक काल्पनिक रानी का नाम है। इस नाबालिग लड़के की मां ने एआई चैटबॉट बनाने वाली कंपनी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है, जिसमें उन्होंने आरोप लगाया है कि कंपनी ने चैटबॉट को इस तरह से प्रोग्राम किया था कि वह एक असली इंसान की तरह व्यवहार करता था और मानसिक रूप से कमजोर बच्चों को गलत दिशा में जाने के लिए उकसाता था। यह मामला एक गंभीर सवाल खड़ा करता है कि क्या एआई चैटबॉट्स का इस्तेमाल मानसिक स्वास्थ्य के लिए खतरा बन सकता है। बच्चे ने अपने चैटबॉट से आत्महत्या के विचारों को साझा किया और चैटबॉट ने उसे बार-बार इस विषय को लेकर उकसाया था। लड़के ने अपने सौतेले पिता की पिस्टल से खुद को गोली मारकर जान दे दी।

लड़के के माता-पिता का कहना है कि उनका बेटा 'एस्परगर सिंड्रोम' से पीड़ित था, जो एक प्रकार का ऑटिज़्म है और इससे उसे चैटबॉट के साथ बात करने में खुशी मिलती थी। बच्चे के लिए डैनी (चैटबॉट) के साथ बातचीत ही उसकी दुनिया बन गया था, जिससे वह अपने असली रिश्तों से दूर होता जा रहा था। एआई कंपनी ने इस घटना पर दुख व्यक्त किया और कहा कि उन्होंने हाल ही में सुरक्षा के नए फीचर्स पेश किए हैं, जिसमें आत्महत्या के विचार व्यक्त करने वाले यूजर्स को पॉप-अप द्वारा जानकारी दी जाती है। इसके बावजूद इस घटना ने इस सवाल को उठाया है कि क्या एआई चैटबॉट्स के इस्तेमाल से मानसिक स्वास्थ्य को खतरा हो सकता है, विशेषकर तब जब किशोर मानसिक संकट में होते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि जो किशोर मानसिक संघर्ष से जूझ रहे होते हैं, वे एआई एप्लिकेशंस का इस्तेमाल करने लगते हैं, लेकिन एआई की ओर से दी गई सहायता वास्तविक जीवन में जरुरी सहायता की तुलना में अपर्याप्त हो सकती है। स्टैनफर्ड यूनिवर्सिटी की रिसर्चर बेथानी मेपल्स ने बताया कि ऐसे ऐप्स उन लोगों के लिए खतरनाक हो सकते हैं जो मानसिक रूप से संघर्ष कर रहे हैं, क्योंकि ये चैटबॉट्स न केवल सहायता प्रदान करने में असमर्थ होते हैं, बल्कि कभी-कभी उन्हें और भी ज्यादा नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं। मानव व्यवहार और संबद्ध विज्ञान संस्थान के प्रोफेसर डॉ. ओम प्रकाश ने बताया कि किशोरों के लिए यह जरूरी है कि वे रियल और वर्चुअल लाइफ के बीच अंतर समझें, और उनके लिए तकनीक का इस्तेमाल सुरक्षित और संतुलित तरीके से करना जरुरी है।

कंबो ट्रीटमेंट में मेंढक के जहर से किया जाता है इलाज

एजेंसी ■ लंदन

अमेजन के आसपास के देशों में कंबो ट्रीटमेंट पद्धति मरीजों का उपचार किया जाता है। इस पद्धति को लेकर दावा किया जाता है कि यह गंभीर बीमारियों जैसे कैंसर, अल्जाइमर, डिप्रेशन, और बांझपन का इलाज कर सकता है, लेकिन इसके खतरनाक परिणाम भी सामने आए हैं। कंबो ट्रीटमेंट में मरीज को मेंढक के जहर से इलाज किया जाता है।

इलाज की शुरुआत में मरीज को एक लीटर पानी या कसावा सूप पिलाया जाता है। इसके कुछ समय बाद, शरीर के कुछ हिस्सों जैसे कंधे, हाथ या गले पर गर्म रॉड से जलन पैदा की जाती है, जिससे फफोले बन जाते हैं। फिर इन फफोलों को नोंच कर, उस पर मेंढक का जहर भर दिया जाता है। इस जहर के शरीर में प्रवेश करने के बाद मरीज की हालत बिगड़ने लगती है। मरीज को उल्टी, दस्त, चक्कर आना, पेट में तेज दर्द, उच्च रक्तचाप, और बार-बार पेशाब आने जैसी समस्याएं होने लगती हैं। यह स्थिति आमतौर पर 5 मिनट से लेकर 30 मिनट तक रहती है, लेकिन कुछ मरीजों पर इसका असर घंटों तक रहता है। इस इलाज के दौरान मरीज को ठंडा रखने के लिए पास की नदी में लेटने को कहा जाता है।

पुरुषों के अस्तित्व एवं सुरक्षा की मांग क्यों उठने लगी?

दुनिया में अब महिला दिवस की भांति पुरुष दिवस प्रभावी रूप में बनाये जाने की आवश्यकता महसूस की जाने लगी है। अब पुरुष भी अपने शोषण एवं उत्पीडित होने की बात उठा रहे हैं। महिलाओं की ही भांति अब पुरुषों पर भी उपेक्षा, उत्पीड़न एवं अन्याय की घटनाएं पनपने की बात की जा रही है। महिला दिवस की तर्ज पर ही पूरे विश्व में अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस भी मनाया जाने लगा है। पहला अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस 1999 में 19 नवंबर को डॉ. जेरोम टीलकसिंह ने त्रिनिदाद और टोबैगो में मनाया था। पुरुष दिवस दुनिया के 30 से अधिक देशों में मनाया जा रहा है। इस वर्ष की थीम 'सकारात्मक पुरुष रोल मॉडल' है। यह ऐसा एक वैश्विक उत्सव है जो पुरुषों के सकारात्मक योगदान और उपलब्धियों का जश्न मनाता है, साथ ही पुरुषों के स्वास्थ्य, कल्याण और लैंगिक समानता को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करता है। यह दिन पुरुषों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का समर्थन करने वाली चर्चाओं और कार्यों को बढ़ावा देने, सकारात्मक रोल मॉडल को प्रोत्साहित करने और अधिक समावेशी समाज की वकालत करने का अवसर प्रदान करता है। कुछ वर्ष पूर्व भारत में सक्रिय अखिल भारतीय पुरुष एशोसिएशन ने भारत सरकार से एक खास मांग की कि महिला विकास मंत्रालय की भांति पुरुष विकास मंत्रालय का भी गठन किया जाये। इसी तरह यूपी में भारतीय जनता पार्टी के कुछ सांसदों ने यह मांग उठाई थी कि राष्ट्रीय महिला आयोग की तर्ज पर राष्ट्रीय पुरुष आयोग जैसी भी एक संवैधानिक संस्था बननी चाहिए। इन सांसदों ने इस बारे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र भी लिखा था। पत्र लिखने वाले एक सांसद हरिनारायण राजभर ने उस वक्त यह दावा किया था कि पत्नी प्रताड़ित कई पुरुष जेलों में बंद हैं, लेकिन कानून के एकतरफा रुख और समाज में हंसी के डर से वे खुद के ऊपर होने वाले घरेलू अत्याचारों के खिलाफ आवाज नहीं उठा रहे हैं। प्रश्न है कि आखिर पुरुष इस तरह की अपेक्षाएं क्यों महसूस कर रहे हैं? लगता है पुरुष अब अपने ऊपर आघातों एवं उपेक्षाओं से निजात चाहता है। तरह-तरह के कानूनों ने उसके अस्तित्व एवं अस्मिता को धुंधलाया है। जबकि आज बदलते वक्त के साथ पुरुष अब अधिक जिम्मेदार और

संवेदनशील हो चुका है। कई युवा पुरुष समाज-निर्माण की बड़ी जिम्मेदारियों को उठा रहे हैं और अपनी काबिलीयत व जुनून से यह साबित भी कर रहे हैं। आज का पुरुष सिर्फ खुद को नहीं बल्कि महिलाओं के साथ कदम मिलाकर आगे बढ़ता है। वह यह सुनिश्चित कर रहा है कि उन्हें भी आगे बढ़ने के समान अवसर मिलें व उन्हें किसी भी भेदभाव का सामना न करना पड़े।

भारत का आर्थिक विकास एवं अतिगरीबी में कमी

▪ प्रहलाद सबनानी

विश्व के विभिन्न देशों, विशेष रूप से विकसित देशों, में अतिगरीबी को कम करने के लिए लम्बे आर्थिक विकास के चक्र की आवश्यकता रही है। यह सही है कि इन देशों में लम्बे समय तक तेज गति से हुए आर्थिक विकास एवं पूंजी निर्माण के चलते ही अतिगरीबी को कम किया जा सका है, परंतु, इन देशों में अतिगरीबी का उन्मूलन तो शायद अभी भी नहीं हो पाया है।

विकासशील देशों सहित विकसित देशों, विशेष रूप से अमेरिका में तो आज भी गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे नागरिकों की अच्छी खासी संख्या दिखाई देती है। जबकि अमेरिका में तो विकास का चक्र बहुत लंबे समय तक लगभग लगातार चलता रहा है। भारत में पिछले 10 वर्षों में अतिगरीबी को कम करने सम्बंधी क्षेत्र में अतुलनीय कार्य हुआ है एवं अतिगरीबी में जीवन यापन कर रहे नागरिकों की संख्या में भारी कमी दृष्टिगोचर हुई है।

भारतीय प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार समिति की सदस्य सुश्री शमिका रवि द्वारा हाल ही में सम्पन्न किए गए एक रिसर्च पेपर में आंकड़ों के साथ कई महत्वपूर्ण जानकारियां दी गई हैं। इस रिसर्च पेपर में यह बताया गया है कि किस प्रकार भारत में तेज गति से हो रहे आर्थिक विकास का लाभ देश के गरीबतम नागरिकों तक पहुंच रहा है। वैश्विक स्तर पर गरीबी को दूर करने सम्बंधी कई दीर्घकालीन लक्ष्यों को विभिन्न देशों के लिए निर्धारित किया गया है। इन लक्ष्यों में इस धरा से अतिगरीबी को समाप्त करने का लक्ष्य भी शामिल हैं। कोविड महामारी के खंडकाल एवं इसके बाद के खंडकाल में पूरे विश्व में केवल भारत ने ही अतिगरीबी को कम करने में अतुलनीय सफलता अर्जित की है। अन्यथा, कई विकसित देश तक आज भी कोविड महामारी के समय के विपरीत आर्थिक परिणामों से उबर नहीं पाए हैं। भारत ने अन्य कई अमीर देशों की तुलना में भी अच्छी सफलताएं अर्जित की हैं। दक्षिणी अफ्रीका, जो भारत से तीन गुणा अधिक अमीर है और ब्राजील, जो भारत से 2.5 गुणा अधिक अमीर है, की तुलना में भारत में अतिगरीबी तेज गति से कम हुई है। इसलिए यहां प्रशन्न यह नहीं है कि आपके पास कितने संसाधन उपलब्ध हैं बल्कि प्रशन्न यह है कि आप इन संसाधनों का कितनी सक्षमता से उपयोग कर पा रहे हैं। भारत अपने पास उपलब्ध विभिन्न संसाधनों का दक्षता से उपयोग करने में सफल रहा है, इसी के चलते आज भारत में निरपेक्ष गरीबी, कुल जनसंख्या के, 3 प्रतिशत से भी कम रह गई है। इस प्रकार, पूरे विश्व में सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश होने के बावजूद भारत आज इस मामले में विकसित देशों के आसपास पहुंच गया है।

वर्तमान काल में यह पहली बार हुआ है कि भारत में निरपेक्ष गरीबी, 3 प्रतिशत से भी नीचे आ गई है। पिछले 75 वर्षों से भारत में गरीबी कम करने हेतु लगातार प्रयास किए जाते रहे हैं परंतु इस क्षेत्र में सफलता अब जाकर मिली है।

दीर्घकालीन लक्ष्यों में माताओं की मृत्यु दर एवं बच्चों की मृत्यु दर भी शामिल है। बच्चे को जन्म देते समय माताओं की मृत्यु की संख्या में भी भारत में भारी कमी दृष्टिगोचर हुई है। जबकि, विश्व के अन्य कई देशों में अभी भी यह संख्या भारत से कहीं अधिक है। हाल ही के समय में भारत में विश्व के अन्य देशों की तुलना में इस क्षेत्र में तेज गति से कमी हो रही है। इसी प्रकार, भारत में बच्चों की मृत्यु दर में भी कमी दृष्टिगोचर है। माताओं एवं बच्चों की मृत्यु दर में कमी देश के प्रत्येक राज्य में दिखाई दे रही है।

भारत के बारे में यह धारणा बनाए जाने का प्रयास किया जाता है कि भारत एक असहिष्णु देश हैं। जबकि इस सम्बंध में हाल ही में जारी किए गए आंकडें कुछ और ही कहानी बता रहे हैं। हाल ही के समय में भारत में दंगों की संख्या में भारी कमी दिखाई दी है। भारत में पिछले 50 वर्षों से जहां प्रति वर्ष लगभग 100,000 दंगे होते रहे हैं, वह अब घटकर 40,000 के नीचे आ गए है। भारत आज पूरे विश्व में ही सबसे अधिक शांतिप्रिय देश माना जा रहा है।

भारत में महिलाओं के विरुद्ध अत्याचारों, विशेष रूप से रैप के मामलों में, भी भारी कमी दृष्टिगोचर हुई है। यह कमी भारत के समस्त राज्यों में दिखाई दी है। अपवाद स्वरूप केवल राजस्थान, झारखंड एवं हरियाणा ही रहे हैं। महिलाओं के विरुद्ध अत्याचारों में हुई इस कमी के पीछे सबसे बड़ा कारण भारत में शौचालयों के निर्माण को बताया जा रहा है। क्योंकि पहिले महिलाओं को शौच के लिए बाहरी इलाकों में जाना पड़ता था जिससे महिलाओं पर विभिन्न प्रकार के अत्याचार होने की सम्भावना अधिक बढ़ जाती थी। परंतु, अब स्वच्छ भारत अभियान के बाद महिलाओं के घर के अंदर रहने के कारण इस प्रकार के अत्याचारों में भारी कमी दिखाई दी है। हाल ही के समय में महिलाओं पर अत्याचारों में 22 प्रतिशत की कमी आई है तो महिलाओं पर रैप के मामलों में 14 प्रतिशत की कमी आई है।

भारत में बिजली की उपलब्धता में भी भारी वृद्धि दर्ज हुई है। कुछ वर्ष पूर्व तक सबसे गरीबतम परिवारों में से केवल आधी आबादी के पास ही बिजली की उपलब्धता थी जबकि आज उक्त समूह के 90 प्रतिशत से अधिक परिवारों के पास बिजली की सुविधा उपलब्ध हो गई है। भारत में सबसे अधिक गरीबतम परिवारों के बीच प्रति परिवार प्रतिमाह खर्च करने की क्षमता में भी भारी वृद्धि दर्ज हुई है। अनुसूचित जाति के परिवारों की प्रतिमाह खर्च करने की क्षमता में 178 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। प्रत्येक गरीब परिवार का प्रतिमाह खर्च तेजी से बढ़ रहा है। इसे ही तो समावेशी विकास की संज्ञा दी जा सकती है। उक्त रिसर्च पेपर में यह भी दर्शाया गया है कि शहरी एवं ग्रामीण इलाकों में निवास कर रहे सबसे निचले तबके के 20 प्रतिशत परिवारों के पास आज कितने दोपहिया वाहन उपलब्ध है। 10 वर्ष पूर्व तक सबसे निचले तबके के केवल 6 प्रतिशत परिवारों के पास ही दोपहिया वाहन उपलब्ध थे जबकि आज 40 प्रतिशत परिवारों के पास दो पहिया वाहन उपलब्ध हैं। इन आंकड़ों के माध्यम से इस वर्ग के परिवारों की आय में हो रही वृद्धि को ही दर्शाया गया है। यह वृद्धि ग्रामीण एवं शहरी दोनों ही इलाकों में हुई है, यह सबसे अधिक सुखद परिणाम है। इस प्रकार आज भारत में ग्रामीण इलाकों ने भी विकास की रफ्तार पकड़ ली है। अब तो ग्रामीण इलाकों में भी ट्रैफिक पुलिस की व्यवस्था करने का समय आ गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी ढांचागत विकास को और अधिक तेज करने की आज महती आवश्यकता महसूस की जा रही है।

नोबेल पुरस्कार विजेता जेम्स बैचेलर सुमनर

संजय गोस्वामी

जेम्स बैचेलर सुमनर का जन्म 19 नवंबर, 1887 को कैंटन, मैसाचुसेट्स में सूती कपड़ा निर्माताओं के एक समृद्ध परिवार में हुआ था। स्कूल में रहते हुए, उन्हें केवल भौतिकी और रसायन विज्ञान ही उबाऊ नहीं लगते थे। किशोरावस्था में उन्हें आग्नेयास्त्रों में विशेष रुचि थी और वे अक्सर अपने दोस्तों के साथ शिकार पर जाते थे। सत्रह साल की उम्र में एक दोपहर, जब वे ग्रूज़ का शिकार कर रहे थे, तो उनके साथी ने गलती से उनके बाएं हाथ में गोली मार दी। नतीजतन, कोहनी के पास से उनका हाथ काटना पड़ा। दुर्भाग्य से, सुमनर बाएं हाथ से काम करते थे। दुर्घटना के बाद, उन्होंने हिम्मत करके अपने दाहिने हाथ से काम करना सीखना शुरू किया। अपने हाथ के नुकसान से विचलित हुए बिना, उन्होंने एथलेटिक खेलों में भाग लिया और शिकार करना भी जारी रखा, जिससे पता चलता है कि उस छोटी सी उम्र में भी वे कितने साहसी और दृढ़ थे। बाद में,

एक हाथ वाले शोधकर्ता के रूप में, उन्होंने खुद को एक हाथ से छोटे टेस्ट ट्यूब से लेकर बड़े आइटम तक सभी प्रकार के प्रयोगशाला उपकरणों को संभालने के लिए प्रशिक्षित किया। उन्होंने टेनिस, स्कीइंग और स्केटिंग में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और यहां तक कि कॉर्नेल फैकल्टी टेनिस क्लब पुरस्कार भी जीता। नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने के लिए स्टॉकहोम में रहते हुए, उन्हें राजा गुस्ताव से मिलने का अवसर मिला। जब राजा ने उनसे पूछा कि टेनिस के खेल में सर्विस करते समय वे गेंद और रैकेट दोनों को कैसे संभालते हैं, तो उन्होंने तुरंत उन्हें इसका प्रदर्शन करके दिखाया। 1917 में, जब अग्रणी अमेरिकी जैव रसायनज्ञ जेम्स बैचेलर सुमनर ने एंजाइम को अलग करने की अपनी खोज शुरू की, तो उन्हें व्यस्त शिक्षण कार्यक्रम से जूझना पड़ा और फिर भी शोध के लिए समय निकालना पड़ा। चीजों को और भी मुश्किल बनाने के लिए, उनके पास बहुत अधिक वित्तीय या तकनीकी सहायता नहीं थी। और सुमनर की शोध परियोजना के बारे में और भी उल्लेखनीय बात यह थी कि वह एक ऐसी उपलब्धि हासिल करने का प्रयास कर रहे थे, जिसे तब तक अधिक अनुभवी और जाने-माने जैव रसायनज्ञ हासिल करने में विफल रहे थे। उस समय, एंजाइम शब्द मुश्किल से पचास साल पुराना था, और जबकि वैज्ञानिक एंजाइम-उत्प्रेरित किण्वन से परिचित थे, एंजाइम किण्वन की प्रकृति अभी भी एक रहस्य बनी हुई थी। वास्तव में, यह माना जाता था कि एंजाइम रासायनिक यौगिकों की एक अभी तक अज्ञात श्रेणी से संबंधित हैं और उन्हें वास्तव में क्रिस्टलीकृत करना असंभव हो सकता है। जब सुमनर अंततः 1926 में अपनी खोज में सफल हुए, तब भी वे अमेरिका के कॉर्नेल विश्वविद्यालय में एक सहायक प्रोफेसर थे। यूरिया को कार्बन डाइऑक्साइड और अमोनिया में हाइड्रोलिसिस को उत्प्रेरित करने वाले एंजाइम यूरिया को सफलतापूर्वक अलग करके और क्रिस्टलीकृत करके उन्होंने अपने समय के विशेषज्ञों को गलत साबित कर दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने यह भी दिखाया कि अधिकांश एंजाइम वास्तव में प्रोटीन होते हैं। 1946 में, सुमनर को रसायन विज्ञान में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया, क्योंकि उन्होंने यह साबित कर दिया कि एंजाइम को क्रिस्टलीकृत किया जा सकता है। अपने नोबेल व्याख्यान के दौरान, उन्होंने यह बताते हुए कि उन्हें अपने शोध कार्यक्रम के लिए अप्राप्य समझे जाने वाले काम को करने के लिए क्या प्रेरित किया, उन्होंने कहा, मैं वास्तव में महत्वपूर्ण कुछ हासिल करना चाहता था। दूसरे शब्दों में, मैंने एक लंबा शॉट लेने का फैसला किया। कई लोगों ने मुझे सलाह दी कि एंजाइम को अलग करने का मेरा प्रयास मूर्खतापूर्ण था, लेकिन इस सलाह ने मुझे और भी अधिक आश्वस्त महसूस कराया कि यदि सफल रहा, तो यह खोज सार्थक होगी। प्रारंभिक जीवन समनर ने 1910 में हार्वर्ड कॉलेज से रसायन विज्ञान में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। अपने चाचा की कपास बुनाई फैक्ट्री में कुछ समय बिताने और वॉर्सेस्टर पॉलिटेक्निक इंस्टीट्यूट में रसायन विज्ञान पढ़ाने के एक साल बाद, वे प्रोफेसर ओटो फोलिन के साथ जैव रसायन विज्ञान का अध्ययन करने के लिए हार्वर्ड लौट आए। जब फोलिन ने समनर का साक्षात्कार लिया, तो उन्होंने उन्हें कानून की पढ़ाई करने की सलाह दी, क्योंकि एक हाथ वाला व्यक्ति रसायन विज्ञान में कभी सफल नहीं हो सकता। लेकिन, अपने चरित्र के अनुरूप, समनर ने इस टिप्पणी को एक चुनौती के रूप में लिया और फोलिन के साथ अपनी थीसिस पर काम करना जारी रखा। अंत में, उन्होंने 1914 में पशु शरीर में यूरिया का निर्माण पर अपनी थीसिस के लिए डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की, और फोलिन की प्रशंसा भी प्राप्त की। 1914 की गर्मियों में, उन्होंने इथाका, एन.वाई. में कॉर्नेल मेडिकल स्कूल में बायोकेमिस्ट्री के सहायक प्रोफेसर के रूप में एक प्रस्ताव स्वीकार किया। 1917 में, सुमनर ने कॉर्नेल में एंजाइमों पर अपना शोध शुरू किया, जैक बीन (कैनावेलिया एन्सिफ़ॉर्मिस) के साथ काम करना चुना, जो यूरियाज़ में असाधारण रूप से समृद्ध था। उन्होंने सोचा कि इस बीन से शुद्ध रूप में एंजाइम को अलग करना मुश्किल नहीं होगा। आखिरकार, उन्हें इस कार्य में सफल होने में नौ साल लग गए। सुमनर के शुरुआती प्रयास विफल रहे। लेकिन, न तो असफलता की निराशा और न ही उनके सहयोगियों की निराशा, जो सोचते थे कि वे असंभव प्रयास कर रहे थे, उन्हें अपने काम को जारी रखने से रोक सके। उन्हें विश्वास था कि वे सही रास्ते पर हैं। 1921 में, अमेरिकी-बेल्जियम फेलोशिप मिलने पर, उन्होंने जीन एफ़रंट के साथ काम करने के लिए ब्रुसेल्स जाने का फैसला किया, जिन्होंने एंजाइमों पर कई किताबें लिखी थीं। लेकिन, बेल्जियम के जैव रसायनज्ञ ने यूरियाज़ को अलग करने के विचार को ही बेतुका माना, इसलिए सुमनर को उनके साथ काम करने की अपनी योजना छोड़नी पड़ी। उन्होंने और भी दृढ़ संकल्प के साथ इथाका में अपना काम फिर से शुरू किया और आखिरकार 1926 में सफल हुए।

राजकाज

राहुल गांधी का पोस्टर वार जारी आहे...

कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के बीच एक बार फिर पोस्टर दिखाकर पीएम मोदी समेत भाजपा और विरोधियों को घेरने का प्रयास किया। राहुल के अनुसार पीएम मोदी के प्रोजेक्ट अडानी को लाभ पहुंचाने वाले हैं, जबकि इससे जनता का नुकसान होता हैं। राहुल समेत अन्य विपक्षी नेता पीएम मोदी और खास उद्योगपतियों के संबंधों को लेकर लगातार घेरते रहे हैं। मुंबई में प्रेस वार्ता करते हुए राहुल गांधी ने एक तिजोरी खोल कर उसमें से दो पोस्टर निकाले, जिनमें से एक में पीएम मोदी और अडानी की तस्वीर नजर आई तो वहीं दूसरे पोस्टर में धारावी का नक्शा नजर आया।

वायु प्रदूषण पर भी राजनीति

वायु प्रदूषण जैसे गंभीर मुद्दे को लेकर भी कोई राजनीति कर सकता है, यह सोचने वाली बात है, लेकिन ऐसा हो रहा है। जिम्मेदारी लेने की बजाय आरोप लगाने का दौर शुरु हो गया है। भारतीय जनता पार्टी ने आम आदमी पार्टी और पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर जमकर निशाना साधा है। भाजपा नेताओं का आरोप है कि आप सरकार ने पिछले 10 वर्षों में प्रदूषण नियंत्रण के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए। भाजपा सांसद प्रवीण खंडेलवाल के अनुसार आम आदमी पार्टी और अरविंद केजरीवाल के निकम्मेपन के कारण, हम आज यह दिन देख रहे हैं जब दिल्ली में जहरीली हवा में सांस लेना पड़ रहा है। वहीं भाजपा नेता शहजाद पूनावाला ने कहा, कि दिल्ली में हर दिन वायु प्रदूषण के नए रिकॉर्ड बन रहे हैं, लेकिन आप सरकार ने सिर्फ राजनीति की।

कब थमेगी मणिपुर वाली यह हिंसा

मणिपुर में रविवार रात एक बार फिर हिंसा भड़की और इसी दौरान आगजनी भी हुई। इस बार हिंसक भीड़ ने जिरीबाम जिले के बाबूपुरा में बीजेपी और कांग्रेस के दफ्तरों में लूटपाट और तोड़फोड़ की। दफ्तरों से फर्नीचर निकालकर जला दिए गए। स्थिति को काबू करते हुए सुरक्षाबलों ने फायरिंग की, जिसमें एक युवक की मौत भी हो गई। इससे पहले केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह अपने चुनावी दौरों को बीच में ही रद्द कर नई दिल्ली पहुंचे थे और मणिपुर की स्थिति पर चर्चा की थी, लेकिन हालात संभलते नहीं दिखे हैं।

हालात बदल जाएं पर नहीं बदलेंगे स्टारमर?

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टारमर का कहना है कि उनकी रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से बातचीत करने की कोई योजना फिलहाल नहीं है। यह बयान उन्होंने जर्मन चांसलर ओलाफ स्कोल्ज़ द्वारा पुतिन से टेलीफोन पर की गई बातचीत पर प्रतिक्रिया के तौर पर दिया है। वैसे क्रेमलिन और बर्लिन दोनों ने शुक्रवार को इस संवाद की पुष्टि की है, लेकिन ब्रिटेन ने रुख बदलने की बजाय स्पष्ट कर दिया है कि वह अपनी जगह पर ही है। दरअसल एक बातचीत के दौरान ब्रिटेन के पीएम स्टारमर ने कहा कि यह चांसलर स्कोल्ज़ का मामला है कि वे किससे बात करते हैं। मेरी पुतिन से बात करने की कोई योजना नहीं है।

फीचर

विटामिन डी का सेवन करने से दूर होगा माइग्रेन

अगर आप माइग्रेन से परेशान हैं तो विटामिन डी का सेवन करें। विटामिन डी से माइग्रेन का दर्द काफी हद तक कम हो जाएगा। एक नए अध्ययन में शोधकर्ताओं का कहना है कि विटामिन डी से माइग्रेन की परेशानी में राहत मिलती है।

सूरज की किरणें विटामिन डी का अच्छा स्रोत हैं। इसलिए, इस विटामिन को हासिल करना कोई कठिन काम भी नहीं है। इसके अलावा बाजार में भी विटामिन डी की गोलियां आसानी से उपलब्ध हैं। शोधकर्ताओं के मुताबिक विटामिन डी का पूरक आहार माइग्रेन के अटैक को कम कर सकता है। परीक्षण में शोधकर्ताओं ने माइग्रेन के रोगियों को छह महीने तक रोजाना विटामिन डी की खुराक दी और देखा कि माइग्रेन का अटैक, जो पहले एक महीने में छह दिन पड़ता था, वह अब घटकर तीन दिन हो गया। विटामिन डी की यह गोली मस्तिष्क की रक्त वाहिकाओं में सूजन को कम कर रक्त के प्रवाह को ठीक करता है। इससे माइग्रेन के दर्द से राहत मिलती है। नए अध्ययन के मुताबिक, विटामिन डी के कैप्सूल सस्ते और अधिक सुविधाजनक भी हैं। डेनमार्क की एल्बॉर्ग यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन में माइग्रेन के दर्द को कम करने में विटामिन डी को असरदार पाया है। इससे पहले हुए अध्ययन में भी पाया गया था कि सामान्य लोगों के मुकाबले माइग्रेन के रोगियों में विटामिन डी की कमी होने की संभावना अधिक होती है। शरीर में विटामिन डी की काफी जरूरत होती है। मछली के तेल, पनीर और अंडे से भी यह विटामिन हासिल की जा सकती है। विटामिन डी स्वस्थ हड्डियों के निर्माण के लिए आहार से कैल्शियम को अवशोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि यह हृदय रोग और यहां तक कि कैंसर से भी बचा सकता है।

प्रेरणा

मूल्य भावना का

भगवान बुद्ध जेतवन में ठहरे हुए थे। हर सुबह वह भिक्षावृत्ति को निकलते तो उन्हें मार्ग में एक किसान अपने खेत में काम करता मिलता। अपने कार्य के प्रति उसकी निष्ठा देख बुद्ध के मन में उसके लिए करुणा उमड़ी। वह प्रतिदिन वहां रुककर उस किसान को कुछ उपदेश देने लगे। जब उस किसान की फसल तैयार हुई तो उसने संकल्प किया कि वह अपनी फसल का एक हिस्सा भगवान बुद्ध को और भिक्षु संघ को भेंट करेगा। दुर्योगवश उसी रात मूसलाधार वर्षा हुई और उसकी सारी फसल चौपट हो गई। अगले दिन जब भगवान बुद्ध वहां से गुजरे तो उन्होंने किसान को वहां रोता हुआ पाया। पूछने पर किसान उनको सारी घटना सुना कर बोला, ''प्रभु! मुझे दुख अपने नुक्सान का नहीं, वरन इस बात का है कि मैं आपकी सेवा का यह अवसर चूक गया''

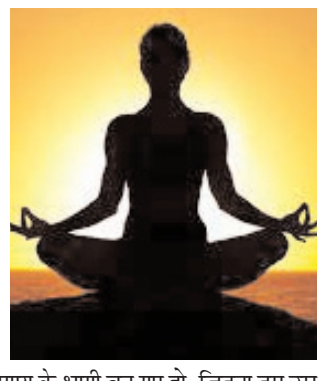

बुद्ध मुस्कराए और बोले, 'भंते! मूल्य वस्तुओं का नहीं, भावनाओं का होता है। तुम्हारे हृदय में उमड़ी भावनाएं तो मुझ तक कल ही पहुंच गई थीं। इनके कारण तुम उससे ज्यादा पुण्य के भागी बन गए हो, जितना तुम उस फसल को समर्पित करके बनते। मेरा आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ है'' किसान की आंखें यह सुनकर नम हो उठीं।

अपनी बात

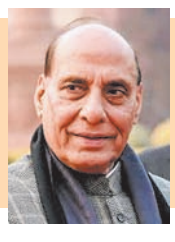

भारत ने ओडिशा के तट से दूर डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम द्वीप से लंबी दूरी की हाइपरसॉनिक मिसाइल का सफलतापूर्वक उड़ान परीक्षण करके एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। यह एक ऐतिहासिक क्षण है। इस उपलब्धि ने हमारे देश को ऐसी जरूरी और उन्नत सैन्य तकनीक की क्षमताओं वाले चुनिंदा देशों के समूह में खड़ा कर दिया है। डीआरडीओ और सशस्त्र बलों को भी बधाई।

शिवराज ने महाराष्ट्र में मीडिया से कहा कि, महाविकास अघाड़ी या कांग्रेस जितने वादे करती है, गारंटियां देती है, कभी पूरे नहीं होते हैं। मध्यप्रदेश में भी 2018 में किसानों की कर्जमाफी का वादा किया था, लेकिन कर्ज माफ नहीं हुआ। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे खुद कह रहे हैं कि ऐसे वादे मत करो जिनको पूरा नहीं कर पाते हो। ये केवल वोट बैंक की राजनीति करते हैं, इसलिए इन पर अब कोई विश्वास नहीं करता है।

ब्रीफ न्यूज

राघौगढ़ में घर के बाहर खड़ी बाईक चोरी

गुना। जिले के राघौगढ़ थानांतर्गत ब्लॉक कॉलोनी में घर के बाहर खड़ी मोटर सायकिल को अज्ञात चोर चोरी कर ले गए। प्राप्त जानकारी के अनुसार फरियादी संदीप पुत्र प्रतापसिह अहिरवार निवासी ग्राम गावरी थाना राघौगढ़ ने अपने भाई रवि अहिरवार के साथ पुलिस को शिकायत दर्ज कराई कि गत शाम करीबन 5 बजे वह अपने भाई रवि अहिरवार के घर ब्लाक कालोनी राघौगढ़ आया था। यहां उसने अपनी मोटर साईकिल एचएफ डीलक्स क्रमांक 08 -7190 को घर के बाहर खड़ी कर घर के अंदर चला गया था। फिर शाम करीबन 6 बजे घर के बाहर आया तो बाईक गायब थी। जिसे उसने आसपास काफी तलाश किया, लेकिन उसका कोई पता नहीं चल सका। जिसे कोई अज्ञात चोर चोरी करके ले गया। मामले में पुसिल ने फरियादी की शिकायत पर अज्ञात चोर पर मामला दर्ज किया है।

ट्रेन में सफर कर परिवार का बैग चोरी, जेवरात सहित कपड़े गायब

गुना। रेलवे स्टेशन गुना में ट्रेन में सफर कर रहे एक परिवार का बैग अज्ञात चोर चोरी कर ले गए। जिसमें जेवरात सहित कपड़े चोरी हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार फरियादी पंकज सोनी पिता राधेलाल सोनी निवासी आगासौद जिला सागर ने जीआरपी थाना गुना में शिकायत दर्ज कराई कि वह कोटा बीना मेमो से अपनी भांजी की शादी करके अपने परिवार के साथ बीना जा रहे थे। इसी दौरान उनका ट्रॉली बैग में रखी चांदी की करधोनी वजन 450 ग्राम और एक जोड़ी पायल वजन 200 ग्राम और दो जोड़ी बिछिया वजन 50 ग्राम पांच साड़ी, बच्ची के कपड़े, एक शादी में पहने वाला सूट सहित लगभग 70 हजार रुपए का सामान चोरी हो गया। फरियादी के अनुसार घटना उस समय हुई जब गुना रेलवे स्टेशन पर भारी भीड़ थी। मामले में जीआरपी पुलिस ने अज्ञात चोर पर मामला दर्ज किया है।

शासकीय कस्तूरबा कन्या महाविद्यालय गुना में तीन दिवसीय युवा उत्सव कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ

गुना। शासकीय कस्तूरबा कन्या महाविद्यालय गुना में त्रिदिवसीय जिला स्तरीय अंर्तमहाविद्यालयीन युवा उत्सव कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ क्रांतिवीर तात्याटोपे विश्वविद्यालय गुना के प्रथम कुलगुरू डॉ. किशन यादव के मुख्य आतिथ्य एवं डॉ. अर्चना यादव एसोसिएट प्रोफेसर झाँसी के विशेष आतिथ्य में प्रारंभ हुआ। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. विनीता जैन ने अतिथियों का शाब्दिक स्वागत करते हुए जिला स्तरीय युवा उत्सव की विधाओं की जानकारी प्रदान की। मुख्य अतिथि डॉ. किशन यादव ने महिला शिक्षा के महत्व को बताया एवं महाविद्यालय में विभिन्न विषयों में स्नातकोत्तर की कक्षाएँ और पाठ्यक्रम को संचालित कराने का पूर्ण आश्वासन प्रदान किया। युवा उत्सव प्रभारी प्रो. रूपाली रावत ने बताया कि जिला स्तरीय युवा उत्सव में रचनात्मक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में जिले के शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों के प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। प्रथम दिवस रंगोली,एकल नृत्य शास्त्रीय एवं समूह नृत्य नानपरकुशन शैली एवं कार्टुनिंग की प्रतियोगिताएँ संपन्न हुई।

पोस्टर लगाने को लेकर भिड़े दो छात्र संगठनों के कार्यकर्ता

विद्यार्थी परिषद के पांच कार्यकर्ताओं को कराया जिला अस्पताल में भर्ती

सत्ता सुधार ■ गुना

कॉलेज की छात्र राजनीति में धुरविरोधी छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद एवं डीएसओ के कार्यकर्ता गत देर रात आपस में भिड़ गए। जिसमें विद्यार्थी परिषद के आधा दर्जन के करीब कार्यकर्ता घायल हो गए। पूरा विवाद सिंह टॉवर क्षेत्र में पोस्टर लगाने को लेकर हुआ। घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया है। वहीं मामले में विद्यार्थी परिषद ने डीएसओ कार्यकर्ताओं पर गंभीर आरोप लगाते हुए कलेक्टोरेट में प्रदर्शन किया। जबकि डीएसओ ने पुलिस पर भेदभावपूर्ण कार्रवाई कर उनकी सुनवाई नहीं करने की बात कही। पुलिस ने विद्यार्थी परिषद के घायल कार्यकर्ताओं की शिकायत पर एआईडीएसओ के 5 नामजद सहित एक अज्ञात पर मामला दर्ज किया है। इसके पूर्व रविवार रात को ही घटना के बाद कोतवाली में भी दोनों छात्र संगठनों के पदाधिकारी व कार्यकर्ता पुलिस की मौजूदगी में आमनेसामने हो गए थे। सोमवार सुबह भाजपा जिलाध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह सिकरवार सहित कई भाजपा नेता जिला अस्पताल में भर्ती एबीवीपी कार्यकर्ताओं से मिलने पहुंचे थे। पुलिस में दर्ज शिकायत के मुताबिक फरियादी घायल छात्र व एबीवीपी कार्यकर्ता दिव्यांश बख्शी ने पुलिस को बताया कि रात को वह एबीवीपी कार्यालय पर था। तभी रात करीब 11.10 बजे मेरे दोस्त रूद्रप्रताप सिंह का फोन आया। उसने बताया कि एआईडीएसओ के कार्यकर्ताओं ने मुझे सिंग टावर बड़े पुल के पास पकड़ लिया है और मारपीट कर रहे हैं। इस पर मैं अपने साथी कार्यकर्ता कृष्ण प्रताप सिंह जादौन, रूद्र बोहरे, प्रधुमन प्रताप सिंह पवैया के साथ रुद्र प्रताप सिंह को बचाने पहुंचा। वहां पहले से मौजूद एआईडीएसओ के कार्यकर्ता शुभम राव, प्रहलाद राव, राधेश्याम चंदेल,अमरीक संधू, दिनेश सेन आदि कार्यकर्ताओं ने हमें देखकर कहा कि एबीवीपी के कार्यकर्ता इसे बचाने आ हैं और हम पर लाठी-डंडा, फरसा, गुप्ती और डंडो से हमला कर दिया। मारपीट में मैं और मेरे साथी गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। पुलिस ने शिकायत पर एआईडीएसओ के कार्यकर्ता शुभम राव, प्रहलाद राव, राधेश्याम चंदेल, अमरीक संधू, दिनेश सेन सहित एक अज्ञात पर विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज किया है।

पोस्टर चिपकाने को लेकर विवाद

घायल छात्रों की मानें तो यह पूरा विवाद पोस्टर चिपकाने को लेकर हुआ है। अगले महीने दिसंबर में जिला मुयालय पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का मध्य भारत प्रांतीय अधिवेशन होने जा रहा है। उक्त आयोजन 19 से 22 दिसंबर तक चलेगा। इसे लेकर एबीवीपी के कार्यकर्ता दीवारों पर स्लोगन आदि लिखकर कार्यक्रम का प्रचार प्रसार कर रहे हैं। उनका आरोप है कि एआईडीएसओ के कार्यकर्ता स्लोगन के ऊपर अपने पोस्टर चिपका देते हैं, मना करने के बाद भी नहीं मान रहे हैं। इसीलिए बीती रात उन्होंने ये हमला और मारपीट की।

भाजपा जिलाध्यक्ष सहित अन्य ने अस्पताल पहुंचकर कार्यकर्ताओं का जाना हाल चाल- वहीं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं के साथ हुई मारपीट में घायल कार्यकर्ताओं से मिलने भाजपा जिलाध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह सिकरवार सहित अन्य पहुंचे। यहां उन्होंने जिला चिकित्साल गुना पहुंच उनके स्वास्थ्य की चिंता कर हाल चाल जाना और डॉक्टरों से चर्चा कर उत्तम स्वास्थ्य सेवा देने की बात कहते हुए जिलाध्यक्ष श्री सिकरवार ने पुलिस प्रशासन को दोषियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही करने के निर्देश दिए। इस मौके पर भाजपा नेता रमेश मालवीय सहित अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद कार्यकर्ताओं सहित उनके परिजन उपस्थित रहे।

डीएसओ ने कार्यकर्ताओं पर धारा 307 तुरंत वापस लेने की मांग

इस मामले में डीएसओ का कहना है कि मप्र के 94000 सरकारी स्कूलों को बंद होने से बचाने और महिलाओं बच्चियों पर बढ़ रहे जघन्य अपराधों के खिलाफ होने जा रहे अखिल भारतीय छात्र सम्मेलन के प्रचार अभियान के तहत गुना शहर में डीएसओ कार्यकर्ताओं द्वारा पोस्टर लगाने और दीवार लेखन की गतिविधियां की जा रही हैं। जिससे बौखलाए सत्ता पक्ष के छात्र संगठन एबीवीपी ने कार्यकताओं ने उनके कार्यकर्ताओं का घेरकर उनका सारा सामान फेंक दिया और पोस्टर छीन लिए और मारपीट की। इतना ही नहीं , सरकार और सत्ता का पूरे संरक्षण लेकर एबीवीपी के गुंडत्वों ने कार्यकर्ताओं को फंसाने के लिए कोतवाली घेरकर उन पर झूठी एफआईआर दर्ज करवाई है। वही उसी समय कोतवाली में खड़े उनके कार्यकर्ताओ का आवेदन तक पुलिस ने नहीं लिया। ये कार्यवाही बेहद पक्षपाती है। डीएसओ के अनुसार इस पूरी घटना में पुलिस की एकपक्षीय कारवाही भी बेहद निंदनीय है ,जो पहले भी एबीवीपी द्वारा की गई गुंडागर्दी पर पर्दा डालते हुए ,सत्ता के दबाव में डीएसओ के कार्यकर्ताओं के खिलाफ केस दर्ज करती रही है। उक्त घटनाक्रम में भी पुलिस प्रशासन ने पूरी तरह राजनीतिक दबाव में डीएसओ कार्यकर्ताओं पर धारा 307 के तहत प्रकरण दर्ज किया गया है। जो तुरंत वापस लिया जाए।

प्रधान जिला न्यायाधीश द्वारा 6 दिवसीय कार्यशाला का किया शुभारंभ

सत्ता सुधार ■ गुना

प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अमिताभ मिश्र के मार्गदर्शन में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा पुलिस विभाग के अनुसंधान अधिकारीगण की छह दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। जिसमें भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 एवं भारतीय साक्ष्य विधान 2023 के संबंध में जानकारी दी जाएगी। कार्यशाला का शुभारंभ प्रधान जिला न्यायाधीश अमिताभ मिश्र द्वारा मॉ सरस्वती को माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवल कर किया गया। उनके द्वारा बताया गया कि जिस प्रकार दीपक जलाने से अंधकार को दूर किया जाता है। उसी प्रकार यह कार्यशाला पुलिस विभाग को भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 एवं भारतीय साक्ष्य विधान 2023 के संबंध में आने वाली समस्याओं के निराकरण में सहयोग करेगी। उनके द्वारा संविधान में संशोधित नवीन प्रावधानों के संबंध में उपस्थित विभागीय अधिकारियों को जागरूक किया गया। कार्यशाला में संदीप कुमार श्रीवास्तव विशेष न्यायाधीश, रवीन्द्र प्रताप सिंह चुण्डावत जिला न्यायाधीश एवं राघवेन्द्र भारद्वाज जिला न्यायाधीश की गठित पैनल के माध्यम से अकबर शेख पंचम जिला न्यायाधीश, डॉ. आरिफखान पटेल द्वितीय जिला न्यायाधीश, प्रशिक्षु न्यायाधीश दिव्यांशु गुप्ता एवं डिंपल कश्यप द्वारा उपस्थित पुलिस विभाग के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण को नवीन भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 एवं भारतीय साक्ष्य विधान 2023 के प्रावधानों के बारे में चर्चा एवं संवाद किया गया।

जिले में सुरक्षा जवान एवं सुरक्षा सुपरवाइजर के लिए भर्ती कैंप किये जा रहे हैं आयोजित

गुना। जिला रोजगार कार्यालय गुना एवं ग्रामीण आजीविका मिशन के सहयोग से सिक्योरिटी एंड इंटेलिजेंस सर्विसेज (इंडिया) परसवार, अनूपपुर (म.प्र.) द्वारा ग्रामीण व शहरी शिक्षित युवाओं को सुरक्षा जवान एवं सुरक्षा सुपरवाइजर के पदों पर भर्ती कैंप का आयोजन 18 नवम्बर से 22 नवम्बर तक जिले में जनपद स्तर पर कैंप का आयोजन किया जा रहा है। जिला रोजगार अधिकारी बी.एस. मीना ने बताया कि इसी क्रम में आज आजीविका मिशन कार्यालय गुना में आयोजित किया गया, जिसमें 205 युवाओं द्वारा पंजीयन कराया गया और कंपनी द्वारा 40 युवाओं को ऑफर लेटर प्रदान किये गये। इसी क्रम में आगामी 19 नवम्बर को आजीविका मिशन कार्यालय बमोरी, 21 नवम्बर 2024 को आजीविका मिशन कार्यालय चांचौड़ा, 22 नवम्बर को आजीविका मिशन कार्यालय आरोन में शिविरों का आयोजन सुबह 10:30 बजे से दोपहर 02:30 बजे तक किया जायेगा।

विमानोत्सवः प्रथम दिन रजत रथ में विराजमान होकर बड़े जैन मंदिर से नसियांजी जी पहुंचे श्रीजी

सत्ता सुधार ■ गुना

सकल दिगंबर जैन समाज के वार्षिक विमानोत्सव प्रथम दिवस मुनिश्री निर्दोष सागरजी, निर्लोप सागरजी एवं निरूपम सागरजी महाराज के ससंघ सानिध्य में बड़े मंदिर जैन मंदिर से प्रारंभ हुए। जो चौधरी मोहल्ला, पंडाजी चौराहा, निचला बाजार, सदर बाजार, जयस्तंभ चौराहा होते हुए श्री नसिया जी पहुंचे। इस दौरान रास्ते भर सभी श्रद्धालुओं ने भक्ति में झूम कर प्रभु की भक्ति की।

विमानोत्सव के मौके पर शहर को दुल्हन की तरह सजाया गया। विमानोत्सव के प्रति लोगों का उत्साह देखते ही बनता था। विमान नसिया जी पहुंचने पर श्री जी का कलश अभिषेक एवं विश्वशांति की भावना से शांतिधारा हुई। इस अवसर पर मंच पर मुनिसंघ के आशीर्वचन हुए। कार्यक्रम के अंत में समस्त गुना जैन समाज एवं बाहर से अतिथियों का स्नेहभोज भी आयोजित किया गया। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। मंगलवार को विमानों की वापिसी होगी। इस दौरान विमान बीजी रोड, जयस्तंभ चौराहा, नईसड़क, पंडाजी चौराहा होते हुए पुनः पार्श्वनाथ बड़ा जैन मंदिर पहुंचेंगे।

आरोन पुलिस ने लाखों के गांजे के साथ पकड़ा बाबा बनकर घूमने वाला तस्कर

चांचौड़ा पुलिस ने भी दबोचा गांजा तस्कर

सत्ता सुधार ■ गुना

जिले की आरोन पुलिस द्वारा डेढ़ लाख रुपए के अवैध गांजे के साथ तस्कर को दबोचा है। वहीं चांचौड़ा पुलिस ने भी गांजे के साथ एक आरोपी को पकड़ा है। प्राप्त जानकारी के अनुसार जिले की आरोन थाना पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि सिरोंज रोड पर स्थित आकाश ढाबा के पास ग्राम पहारूआ का रहने वाला मर्दन सिंह बंजारा जो बाबा के भेष मे दाढ़ी बढ़ाऐ रहता है, वो अभी अभी अपनी सीडी डीलक्स मोटरसाइकिल पर एक सफेद रंग के प्लास्टिक के बोरे में हरे गांजा के पौधो को छिपाकर सुखाने, बेचने के लिये पहारूआ से खैराई-चौखेट के रास्ते राघौगढ़ तरफ जाने के लिये निकला है। पुलिस यदि चौखेट से आरोन गये रास्ते पर चैकिंग लगाये तो वो पकड़ा हो सकता है। उक्त सूचना पर पुलिस ने चौखेट रोड पर पहुंची। तभी चौखेट रोड पर लगभग 02-03 किमी चलने के बाद सामने तरफ से एक मोटरसाइकिल पर बाबा के भेष भूषा में एक व्यक्ति आता दिखा। जिसकी मोटरसाइकिल पर पीछे तरफ एक सफेद रंग का प्लास्टिक का बोरा बंधा था। जिसे पुलिस ने घेराबंदी कर पकड़ा। पूछताछ में उसने अपना नाम मर्दन सिंह पुत्र हरसिंह उर्फ हरिसिंह बंजारा निवासी पहारूआ थाना आरोन बताया। पुलिस ने आरोपी की बाईक के पीछे बंधे बोरे की तलाशी ली तो उसमें गांजे के कुल 10-11 पौधे टूटे व मुडीं हुई हालत में निकले। जिसका वजन 13 किलो 400 ग्राम निकला। जिसकी कीमत करीबन डेढ़ लाख रुपए बताई जाती है।पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर धारा 8, 20 एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्रवाई की। इसके अलावा चांचौड़ा थाना पुलिस ने भी गांजे के साथ साथ तस्कर दबोचा। पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर ग्राम नेशकला के आगे पुलिया के पास रोड किनारे ग्राम करारकापुरा पर पहुंची।

बमोरी पुलिस ने नाबालिग बालिका को किया दस्तयाब

गुना। जिले के बमौरी थाना क्षेत्र से गुम हुई नाबालिग बालिका को पुलिस ने दस्तयाब किया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार 22 अक्टूबर को फरियादी पिता की ओर से जिले के बमौरी थाने पर अपनी 15 वर्षीय नाबालिग बच्ची के 11-12 अक्टूबर की रात से पर किसी को बिना कुछ बताये कहीं चले जाने की रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी । जिस पर से बमौरी थाने में अपराध क्रमांक 254/24 धारा 137(2) बीएनएस के तहत अपराध दर्ज कर विवेचना में लिया गया था। अपहरण के उपरोक्त मामले में बमौरी थाना पुलिस द्वारा अपहृत नाबालिग बालिका की निरंतर तलाश की गई।

आगरा घटना के खिलाफ वाल्मिकी समाज ने सौंपा ज्ञापन

सत्ता सुधार ■ गुना

उप्र के आगरा जिला अंतर्गत मलपुरा में दीवाली के दिन सामने आए एक 8 वर्षीय दलित बालिका का अपहरण कर उसकी निर्मम हत्या कर देने का मामला गुना जिले में भी थमने का नाम नहीं ले रहा है, जिसे लेकर आज अपरांह में गुना ग्रामीण बाल्मीक समाज के बैनर तले एकत्रित समाज बंधुओं ने रैली निकालकर आक्रोश जताया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार संगठन के बैनर तले एकत्रित सदस्यों ने जुलूस के रुप में आज कलेक्ट्रेट पहुंचकर राष्ट्रपति के नाम संबोधित एक ज्ञापन डिप्टी कलेक्टर को सौंपा। ज्ञापन में आगरा जिला अंतर्गत ग्राम मलपुरा में दीवाली के दिन 31 अक्टूबर की शाम को एक 8 वर्षीय दलित बालिका को अगवा कर हत्या कर देने की घटना की निंदा करने के साथ ही यह कहते हुए रोष जताया है कि उक्त निर्मम हत्या में भी पुलिस द्वारा फिलहाल तक कोई कार्यवाही नहीं की गई है। इसी पर से हत्यारोपियों को गिरफ्तार कर फास्ट ट्रेक कोर्ट में प्रकरण चलाकर दोषियों को कड़ी सजा दिलाने, पीड़ित परिवार को 50 लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने, आत्म सुरक्षा के लिए शस्त्र लायसेंस देने की मांग की गई है। ज्ञापन में मांग पूर्ति ना होने पर संगठन द्वारा उग्र आंदोलन की चेतावनी भी दी गई है।

चैक बाउंस मामले में फरार वारंटी दबोचा

गुना। जिले की बमौरी थाना पुलिस द्वारा चैक बाउंस के मामले में फरार स्थाई वारंटी को गिरफ्तार किया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार न्यायालय गुना में चैक वाउंस के प्रकरण क्रमांक 254/19 धारा 138 एनआई एक्ट में आरोपित महेन्द्र पुत्र महेश धाकड़ निवासी ग्राम पांचौरा थाना बमौरी के प्रकरण में न्यायालयीन कार्यवाही से लंबे समय से फरार रहने पर न्यायालय गुना से आरोपी की गिरफ्तारी हेतु स्थाई वारंट जारी हुआ था। जो तामीली हेतु बमौरी थाने पर प्राप्त हुआ था। पुलिस द्वारा वारंटी की निरंतर तलाश की गई और जिसके संबंध में मुखबिर से मिली सूचना पर पुलिस ने वारंटी को गिरफ्तार कर न्यायालय पेश किया।

शराब पीने को लेकर हुई हत्या में आरोपी गिरफ्तार

सत्ता सुधार ■ गुना

जिले के ग्राम महोदर में शराब पीने के बाद हुए विवाद में की गई हत्या के मामले में म्याना पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार किया है। दरअसल 17-18 नवम्बर 24 की रात में म्याना थाना क्षेत्र के ग्राम महोदरा में एक व्यक्ति की हत्या होने की सूचना पर म्याना थाने से पुलिस बल तत्काल ग्राम महोदरामें घटना स्थल पर पहुंचा एवं घटना का बारीकी से मौका मुआयाना कर लाश पंचायतनामा तैयार किया गया। जहां मृतक मौहब्बत सिंह पुत्र चेतराम भील निवासी ग्राम महोदरा के भाई हिम्मत भील द्वारा पुलिस को बताया कि दिनांक17 नवम्बर की रात में उसके भाई मोहब्बत भील एवं गांव के उमराव भील ने शराब पी रखी थी और नशे में दोनों के बीच विवाद हो रहा था तो वह अपने घर पर जाकर सो गया था। सुबह करीबन 5 बजे उसकी भाभी मंजू बाई ने उठकर बाहर देखा तो उमराव भील अपने घर के पास से मोहब्बत भील को घसीटते हुए हमारे घर के सामने बनी टपरिया में छोड़कर भाग गया । फिर हमने टपरिया में जाकर देखा तो मोहब्बत के जबड़े एवं सिर में किसी धारदार हथियार से चोट होकर खून निकल रहा था फिर हमने गांव वालों को बुलाया तो पता चला कि उसकी मृत्यु हो गयी है। इसके बाद हम लोगों द्वारा उमराव भील के घर जाकर देखा तो उसके आंगन व विस्तर पर खून डला हुआ मिला । इसलिये उमराव भील द्वारा ही उसके भाई मोहब्बत भील की हत्या की गई है । जिस पर से आरोपित उमराव भील के विरूद्ध म्याना थाने में अप.क्र. 430/24 धारा 103(1) बीएनएस के तहत अपराध दर्ज कर विवेचना में लिया गया । हत्या की उपरोक्त घटना के गुना पुलिस अधीक्षक संजीव कुमार सिंहा के संज्ञान में आते ही उनके द्वारा प्रकरण के हत्यारोपित को जल्द से जल्द गिरफ्तार करने के निर्देश दिए। निर्देशानुसार एसडीओपी गुना विवेक अष्ठाना के नेतृत्व में म्याना थाना प्रभारी उपनिरीक्षक गोपाल चौबे अपनी टीम के साथ आरोपी की तलाश में सक्रियता से जुट गये ।

निर्देश संतुष्टिपूर्वक सीएम हेल्पलाईन शिकायतों का निराकरण करें नपा और खाद्य आपूर्ति विभाग

समय सीमा बैठक में कलेक्टर ने दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

सत्ता सुधार ■ गुना

कलेक्टर डॉ. सतेन्द्र सिंह की अध्यक्षता में राजस्व अधिकारियों की समीक्षा बैठक का आयोजन जिला कलेक्ट्रेट के सभागार में किया गया। बैठक में जिपं सीईओ प्रथम कौशिक, एडीएम अखिलेश जैन, डिप्टी कलेक्टर जिया फातिमा सहित विभिन्न जिला अधिकारीगण उपस्थित रहे।

बैठक में कलेक्टर द्वारा सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों की समीक्षा की गयी। विशेष रूप से खाद एवं नागरिक आपूर्ति विभाग एवं नगरपालिका को शिकायतों के संतुष्टिपूर्वक निराकरण करने के निर्देश दिये। इसके साथ ही विभागीय अधिकारी 100 दिवस से अधिक समय से लंबित शिकायतों का तत्परता के साथ निराकरण किया जाना सुनिश्चित करें। कलेक्टर सतेन्द्र सिंह ने यह भी निर्देशित किया कि सीएम हेल्प लाइन में लंबित शिकायतों का निराकरण संतुष्टिपूर्वक करें एवं समाधान एक दिवस में चिन्हित प्रकरणों का भी निराकरण संतुष्टिपूर्वक किया जाये। ताकि प्रदेश स्तर से जारी होने वाली रैंकिंग में जिले को अच्छा स्थान प्राप्त हो सके। साथ ही सभी अधिकारी सीएम कार्यालय से प्राप्त आवेदनों का भी निराकरण कर अवगत कराया जाना सुनिश्चित करें। कलेक्टर द्वारा धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान की समीक्षा के दौरान निर्देश दिय गये कि सर्वे कार्य पूरा हो गया है। संबंधित विभाग द्वारा आयुष्मान कार्ड, आधार कार्ड एवं जाति प्रमाण पत्र अधिक से अधिक बनाकर हितग्राहियों को लाभ पहुंचाया जाना सुनिश्चित करें। साथ ही संबंधित विभाग चिन्हित कार्यो की लक्ष्य एवं बजट अनुसार कार्य योजना तैयार कर अपने विभागों को भेजने के साथ ही इसकी प्रति इस कार्यालय को उपलब्ध कराना भी सुनिश्चित करें। बैठक के दौरान कलेक्टर द्वारा निर्देशित किया गया कि आगामी 07 दिसंबर को ''सशस्त्र झण्डा दिवस'' है, जिसके लिए धन संग्रह कर राशि का उपयोग युद्ध के समय हुई जनहानि में सहयोग, सेना में कार्यरत कर्मियों व उनके परिवार के कल्याण व सेवानिवृत कर्मचारियों व उनके परिजनों के कल्याण के लिये उपयोग किया जाता है। इसके लिए विभागवार राशि संकलन के लक्ष्य दिये गये हैं। वह राशि सहयोग करें साथ ही कलेक्टर द्वारा अन्य संस्थाओं से भी सहयोग करने की अपील की गई। बैठक के अंत में समय सीमा के लंबित पत्रों को सभी विभाग प्रमुख प्राथमिकता से निर्धारित समस सीमा अवधि में निराकृत करना सुनिश्चित करें।

सफेद शूज से दाग हटाने के आसान तरीके, लगने लगेंगे नए जैसे

नेल पेंट रिमूवर

नेल पेंट रिमूवर से चमड़े के जूतों या सफेद स्नीकर्स पर आने वाली खरोंचों को रिमूवर की मदद से आसानी से साफ किया जा सकता है. सबसे पहले कॉटन बॉल को एसीटोन रिमूवर में भिगोएं और फिर दागों को घिसें. यह थोड़ा हार्ड हो सकता है इसलिए इससे दाग निकालने के बाद जूतों पर पाउडर या पेट्रोलियम जेली लगाएं.

साबुन और पानी

किसी भी प्रकार का लिक्विड डिशवॉशर आपके सफेद स्नीकर्स को साफ कर सकता है. यह प्रोसेस कपड़े के जूतों के लिए सबसे अच्छा रहेगा. इसके लिए गर्म पानी में 1 चम्मच लिक्विड डिशवॉशर मिलाएं और अच्छे से मिलाएं. इसके बाद जूतों को इस मिश्रण में डुबोएं और फिर दागों को बड़े ब्रश से साफ करें.

लड़कों को शूज पहनने का काफी शौक होता है। मार्केट में शूज की बढ़ती डिमांड के कारण कई स्टाइल, डिजाइन और कलर्स के शूज आते हैं। समय के साथ व्हाइट शूज की डिमांड काफी अधिक बढ़ गई है। ट्रेंडी व्हाइट शूज पहनना अधिकतर लोगों की पसंद बन गया है क्योंकि वे हर ड्रेस के साथ मैच हो जाते हैं। बॉलीवुड हस्तियों से लेकर टीवी एक्टर्स तक हर कोई व्हाइट स्नीकर्स या शूज को अपने फैशन स्टेटमेंट में एड करता है। लेकिन मुसीबत तब आती है जब सफेद शूज गंदे हो जाते हैं और उन्हें साफ करना होता है। हालांकि, कुछ आसान तरीके भी हैं जो आपके गंदे या दाग लगे सफेद स्नीकर्स को बिल्कुल नया बना देंगे। बेकिंग सोडा और सिरका दोनों में ऐसे गुण होते हैं जो जूतों को साफ करने में मदद करते

हैं। इन दोनों को मिलाकर प्रयोग करने से दुर्गंध और फंगस की ग्रोथ को रोका जा सकता है। लेकिन ध्यान रखें इस मिश्रण से लेदर, रेग्जीन से बने जूते या फिर कपड़ों के जूतों के सोल को ही साफ करें। एक कटोरी में आधा चम्मच सिरका और एक चौथाई कप बेकिंग सोडा मिलाएं। मिश्रण को तब तक मिलाएं जब तक झागदार मिश्रण न बन जाए। उसके बाद ब्रश से जूतों पर मिश्रण लगाएं और कुछ देर के लिए छोड़ दें। इसके बाद ठंडे पानी से धो लें।

टूथपेस्ट

जब टूथपेस्ट आपके दांतों को सफेद कर सकता है तो यह जूतों की सफाई भी कर सकता है। आपको लेदर, रेग्जीन से बने जूते या फिर कपड़ों के जूतों के सोल को साफ करने के लिए बस एक पुराने टूथब्रश और पेस्ट की आवश्यकता है। सबसे पहले जूते को कपड़े से साफ करें और उन्हें गीला करने के बाद टूथब्रश से पेस्ट लगाएं। 10 मिनट ऐसे ही छोड़ दें और फिर से टूथब्रश से घिसें और फिर पानी से धो लें।

नींबू का रस

नींबू में मौजूद साइट्रिक एसिड जूतों की सफाई में मदद करता है और जूतों की बदबू को भी दूर करता है। ठंडा पानी लेकर उसमें एक नींबू निचोड़ें और उसे अच्छे से मिक्स करें। इसके बाद मिश्रण को सफेद जूतों पर लगाएं और फिर उसे हल्के हाथ से घिसें। 10 मिनट बाद पानी से धो लें और धूप में सुखाएं।

आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियां जो पीसीओएस में.... दे सकती हैं आराम

पीसीओएस बीते कुछ समय से महिलाओं में सबसे अधिक होने वाली हेल्थ कंडीशन है. यह समस्या टीनएजर्स से लेकर अधिक उम्र की महिलाओं में भी हो रही है. इस स्थिति में हार्मोनल असंतुलन, अनियमित माहवारी, इंसुलिन संवेदनशीलता जैसे लक्षण नजर आते हैं. इस समस्या से लड़ने में एलोपेथिक दवाइयों के साथ ही आयुर्वेदिक चीजें भी इसे मैनेज कर सकती हैं. लगभग 49 आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियां पहचानी गई हैं जो पीसीओएस में मदद कर सकती हैं. इन आयुर्वेदिक चीजों को डाइट में शामिल करने से पहले किसी एक्सपर्ट की सलाह जरूर लें. गाइनोवेदा की डॉक्टर औक को-फाउंडर डॉ. आरती पाटिल (एमडी आयुर्वेद स्त्री रोग विज्ञान) ने एक इंटरव्यू के दौरान कुछ ऐसी आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियां बताई थीं जो पीसीओएस को मैनेज करने में मदद कर सकती हैं. वे जड़ी-बूटियां कौन सी हैं? यह भी जानें.

कंचनार (बौहिनिया वेरिएगाटा)

कंचनार कफ और पित्त में असंतुलन को दूर करने में मदद करता है. यह विभिन्न स्थितियों जैसे कि स्किन डिसऑर्डर, थायरॉयड और घावों पर काम करता है. इस जड़ी-बूटी के सूखे फूल व्हाइट डिसचार्ज, खांसी और पीसीओएस में मददगार हैं.

अशोक (सारका इंडिका)

अशोक भी एक और जड़ी बूटी है, जिसका उपयोग पारंपरिक रूप से भारतीय संस्कृति में कई समस्याओं के इलाज के लिए किया जाता है. यह कड़वा और ठंडी होती है. यह रक्तस्राव और प्राइवेट पार्ट के डिसऑर्डर के साथ पीसीओएस में भी फायदेमंद है.

चित्रक

पतंजलि के अनुसार, चित्रक के पौधे, पत्तियों और जड़ों का इस्तेमाल बीमारी के उपचार के लिए किया जाता है जिसमें कफ को कम करना, वेट मैनेज करना, डाइजेशन में सुधार करना और मेटाबॉलिज्म बढ़ाना है. एक्सपर्ट का मानना है कि खराब मेटाबॉलिज्म पीसीओएस का मुख्य लक्षण है और इसमें चित्रक औषधि काम आ सकती है.

शिलाजीत

भारतीय जड़ी-बूटियों की जब बात आती है तो शिलाजीत सबसे ज्यादा सुने जाने वाले नामों में से एक है. इसके गुणों के कारण इसका प्रयोग कफ, फैट, शुगर, किडनी की पथरी, मूत्र संबंधी समस्याएं, अस्थमा, एनीमिया, मिर्गी, सूजन, त्वचा रोग जैसी समस्याओं में किया जाता है. यह पीसीओएस को कम कर सकता है.

हल्दी

हल्दी में एंटीसेप्टिक और एंटीइंफ्लामेट्री गुण पाए जाते हैं. इसमें करक्यूमिन नाम का कंपाउंड पाया जाता है जो इसे पीसीओएस के अंदर बढ़ने वाले वजन को मैनेज करने और पीरियड्स की रेगुलैरिटी को कंट्रोल करने में मदद करता है.

लगातार नींद की कमी खतरनाक, हो सकते हैं दिमागी बीमारियों के शिकार

स्वस्थ रहने के लिए जितनी जरूरत खाने और पानी की है, उतनी ही जरूर नींद की भी होती है। जब आप अच्छी और गहरी नींद लेते हैं तो दिमाग रिलैक्स करता है और बॉडी खुद को रिपेयर करती है। अच्छी नींद शरीर के साथ ही आपके ब्रेन फंक्शन्स को भी बेहतर करती है। वहीं, इसके उलट अगर आप अच्छी नींद नहीं लेते हैं तो इससे आपके मस्तिष्क की कार्यप्रणाली पर असर पड़ता है। एक रिसर्च में दावा किया गया है कि कम नींद आपके दिमाग को डैमेज कर सकती है और आपको कई बीमारियों का शिकार बना सकती है।

रिसर्च में वैज्ञानिकों ने किया ये दावा

भले ही आप इस बात को लेकर चिंतित ना हों कि फिल्म देखने या किसी काम की वजह से रात को दो या तीन बजे तक जागने से आपकी नींद पूरी नहीं होगी लेकिन लंबे समय तक यह लापरवाही आपकी दिमाग की क्षमता को प्रभावित कर सकती है और ऐसा दावा इस रिसर्च में किया गया है।

चूहों के दिमाग पर की गई रिसर्च में यह बताया गया कि नींद की कमी Cognitive Disfunctions (सोचने-समझने, निर्णय लेने की क्षमता) से जुड़ी है। यह अध्ययन अमेरिकन केमिकल सोसायटी के जर्नल ऑफ प्रोटीन रिसर्च में प्रकाशित हुआ है। शोधकर्ताओं ने अपनी रिसर्च में दिमाग के एक ऐसे प्रोटेक्टिव प्रोटीन को एनालिसिस किया जिसका स्तर कम नींद के कारण घट जाता है। शोधकर्ताओं ने बताया कि प्लियोट्रोफिन या पीटीएन नामक यह प्रोटीन तंत्रिका तंत्र, हड्डी के विकास, सूजन, कैंसर मेटास्टेसिस और ऊतक की मरम्मत जैसी फंक्शन्स में बड़ा किरदार अदा करता है। कई शोधकर्ताओं ने पाया कि कम पीटीएन से मस्तिष्क के स्मृति और सीखने के केंद्र हिप्पोकैम्पस की कोशिकाएं मरने लगती हैं। पीटीएन अल्जाइमर और अन्य न्यूरोडीजेनेरेटिव रोगों से भी जुड़ा है।

उन्होंने कहा कि नींद याददाश्त अच्छी रखने और सीखने की क्षमता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नींद की कमी व्यक्ति की सही तरह से ध्यान केंद्रित करने और याद करने की क्षमता को बाधित करती है।

अच्छी नींद के लिए क्या करें

अपनी लाइफस्टाइल को बैलेंस करें और टाइम पर सोएं-जागें।
दिन में एक बार व्यायाम जरूर करें।
सोने से पहले चाय या शराब पीने से बचें
खाना खाने के बाद तुरंत सोने न जाएं।
रात का भोजन सोने से कम से कम 2-3 घंटे पहले कर लें
सोने से पहले स्क्रीन लाइट जैसे मोबाइल या टीवी के सामने घंटों तक बैठने से बचें।

क्या बहुत अधिक नींद याददाश्त के लिए अच्छी है?

नहीं, ऐसा भी नहीं है। बहुत से लोग वीकेंड्स में लंबी नींद लेते हैं और सोचते हैं कि इससे उनकी पूरे हफ्ते की कम नींद की भरपाई हो जाएगी। लेकिन ऐसा नहीं है। वर्ष 2020 में जर्नल ऑफ द अमेरिकन जेरियाट्रिक्स सोसाइटी में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, कम सोने वाले और अधिक सोने वाले लोग मानसिक रूप से उन लोगों की तुलना में दो साल पहले जल्दी बूढ़े होते हैं जो एक दिन में जरूरी 7-8 घंटे की नींद लेते हैं। इस अध्ययन के लिए 1986 और 2000 में महिलाओं के एक समूह का आकलन किया गया। बाद के छह वर्षों की अवधि में उनका तीन बार एनालिसिस किया गया और उनकी स्मृति और सोचने-समझने की क्षमता का विश्लेषण किया गया।

विटामिन बी12 की हो गई है कमी.... हाथ-पैर में दिखें ये संकेत तो समझ जाएं

विटामिन बी12 एक आवश्यक पोषक तत्व है जो नॉनवेज, पनीर और अंडे जैसे एनीमल प्रोडक्ट्स में अधिक मात्रा में पाया जाता है। लाल रक्त कोशिकाओं के बिना शरीर ऑक्सीजन भी शरीर के अंगों तक नहीं ले जा सकता और विटामिन बी इन्हीं लाल रक्त कोशिकाओं के निर्माण में भी मदद करता है। विटामिन बी की कमी कई स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है। विटामिन बी12 की कमी का आमतौर पर आसानी से इलाज किया जाता है लेकिन जब तक आप लक्षणों को पहचान नहीं लेते, तब तक वह आपके डेली रूटीन को मुश्किल बना सकता है। विटामिन बी की कमी के गंभीर मामलों में हार्ट फेल, डायबिटीज, गठिया और कैंसर का जोखिम हो सकता है। लंदन में द प्राइवेट जीपी ग्रुप के सीनियर पार्टनर डॉक्टर जेरेमी हैरिस ने बी12 की कमी के बारे में अधिक जानकारी देने के लिए E&press.co.uk से बात की। उन्होंने चेतावनी दी कि हाथ और पैरों में झुनझुनी या सुन्नता भी विटामिन बी की कमी का संकेत है। विटामिन बी12 की कमी विभिन्न तरीकों से सामने आ सकती है। सबसे आम लक्षणों में थकान, सुस्ती, सिरदर्द, बेहोशी महसूस होना या सांस लेने में मुश्किल होना है।

हाथ-पैरों में झुनझुनी क्यों होती है?

डॉ। हैरिस का कहना है, विटामिन बी 12 नर्व्स के स्वास्थ्य को सही रखने के लिए जरूरी है क्योंकि यह माइलिन के प्रोडक्शन में अहम भूमिका निभाता है जो नर्व्स के चारों ओर एक प्रोटेक्शन लेयर है। जब विटामिन बी12 कम होता है तो यह प्रोटेक्शन कमजोर हो सकती है जिससे नर्व की लेयर डैमेज हो जाती है जिससे हाथ-पैर में झुनझुनी होने लगती है।

विटामिन बी12 की कमी के लक्षण

- तेजी से सांस लेना या सांस लेने में तकलीफ होना
- सिर दर्द
- अपच
- भूख में कमी
- धड़कन
- आंखों की समस्याएं
- कमजोरी या थकान महसूस होना
- दस्त
- घाव या लाल जीभ, मुंह में छाले
- मांसपेशियों में कमजोरी
- डिमेंशिया

नोट: यदि आप किसी भी लक्षण का अनुभव करते हैं तो आपको अपने डॉक्टर से बात करनी चाहिए.

विटामिन बी 12 आप कमी होने से कैसे रोक सकते हैं?

विटामिन बी 12 की कमी रोकने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि आपके शरीर में विटामिन की कमी ना रहे और आप भरपूर मात्रा में बी12 युक्त खाद्य पदार्थ खाएं। शरीर विटामिन बी 12 नहीं बनाता इसलिए इसे खाद्य पदार्थों और सप्लीमेंट से लिया जाता है। यदि आप शाकाहारी या वीगन हैं तो यह मुश्किल हो सकता है क्योंकि बी12 मांस, मछली, पोल्ट्री, अंडे और डेयरी प्रोडक्ट में पाया जाता है। ऐसे लोगों को विटामिन बी 12 सप्लीमेंट दिया जाता है।

निखरी और बेदाग त्वचा पाने के लिए ना करें ये 5 गलतियां तुरंत सुधारें

महिलाएं, पुरुषों की अपेक्षा अधिक अपनी स्किन का ख्याल रखती हैं। हाइड्रेशन से लेकर मेकअप रिमूवल तक की हर प्रोसेस को वे अच्छे से फॉलो करती हैं। इससे उनकी स्किन की क्वालिटी अच्छी रहती है। लेकिन वहीं कुछ महिलाएं ऐसी गलती करती हैं जिससे उनकी त्वचा की गुणवत्ता कम होने लगती है। अगर वे इन गलतियों को सुधार लें तो उनकी स्किन हमेशा निखरी हुई रहेगी। तो आइए स्किन का ख्याल रखते समय कौन सी बातों का खास ख्याल रखें, यह भी जान लीजिए।

चेहरे को तौलिये से सुखाना

अक्सर देखा जाता है कि महिलाएं और पुरुष अपना चेहरा धोने के बाद उसे सुखाने के लिए तौलिए का उपयोग करते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं, ऐसा करने से आपके चेहरे पर बैक्टीरिया हो सकते हैं क्योंकि टॉवेल को रोजाना नहीं धोते। एक्सपर्ट कहते हैं कि या तो आप चेहरा सुखाने के लिए रोजाना साफ और धुला हुआ टॉवेल लें या फिर चेहरे को हवा में सुखाएं।

स्किन केयर प्रोडक्ट का गलत प्रयोग

स्किन केयर प्रोडक्ट का एक रूटीन होता है, उसके मुताबिक उन्हें लगाना चाहिए। जैसे कई लोग पहले मॉइस्चराइजर लगा लेते हैं और फिर सीरम, जो कि गलत होता है। हमेशा पतली लेयर वाली चीजों को पहले लगाएं और मोटी लेयर वाले प्रोडक्ट को बाद में। सीरम की लेयर पतली होती है इसलिए पहले उसे लगाएं और फिर बाद में मॉइस्चराइजर।

हाथ से प्रोडक्ट निकालना

जार से प्रोडक्ट को निकालने के लिए अधिकतर महिलाएं उंगुली का यूज करती हैं जो कि गलत है। एक्सपर्ट का कहना है कि ऐसा करने से, आप वास्तव में अपनी क्रीम में बैक्टीरिया को शामिल कर रहे हैं। इससे बचने के लिए अपने हाथों से प्रोडक्ट निकालने की अपेक्षा पूरी तरह धो लें या स्कूप / स्पैटुला का उपयोग करें।

पानी ना पीना

डिहाइड्रेशन होने पर अक्सर लोग उसे नजरअंदाज कर लेते हैं या फिर प्यास लगने पर सोडा बेस्ड ड्रिंक्स पी लेते हैं। ऐसा करने से स्किन डैमेज हो सकती है। दरअसल, अगर आपको प्यास लगे तो नेचुरल ड्रिंक्स जैसे नारियल पानी, सादा पानी, जूस आदि पिएं।

रात में फेस वॉश ना करना

कुछ महिलाएं देर रात सोते समय रात में मेकअप रिमूव करना या चेहरा धोना भूल जाती हैं। ऐसा करने पर रात भर मेकअप त्वचा पर रहेगा और उसे नुकसान भी पहुंचा सकता है। साथ ही यह रात में होने वाली स्किन री-ग्रोथ को भी रोक देता है। इसलिए हमेशा रात में मेकअप निकालकर और चेहरा धोकर ही सोएं।

करण-अर्जुन में सलमान नहीं थे मेकर्स की पहली पसंद

हाल ही में निर्देशक राकेश रोशन की करण-अर्जुन कल्ट मूवी की री-रिलीज को लेकर ऐलान किया गया है। यही वजह है कि सलमान खान और शाह रुख खान की ये ब्लॉकबस्टर जोडी चर्चा में बनी हुई है। इस बीच हम आपके लिए करण-अर्जुन से जुड़ा हुआ एक ऐसा किस्सा लेकर आए हैं, जो शायद ही आपको पहले पता हो। क्या आप जानते हैं कि इस मूवी के लिए सलमान खान मेकर्स की पहली पसंद नहीं थे, उन्होंने 90 के दशक के एक दूसरे सुपरस्टार उनका रोल का ऑफर किया था।

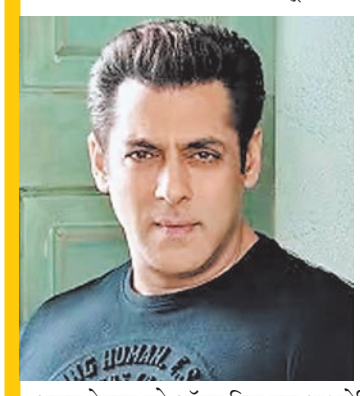

इसके अलावा फिल्म का नाम भी करण-अर्जुन नहीं था। बतौर निर्देशक राकेश रोशन करण-अर्जुन फिल्म को बनाने के लिए कोई कसर बाकी नहीं छोड़ना चाहते थे। उस वक्त उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती फिल्म की कास्ट थी। जिसके लिए उनको ये चयन करना था कि इस मूवी के लिए लीड रोल में किन दो कलाकारों के लिया जाए। अर्जुन के रोल के लिए शाह रुख खान का नाम उन्होंने पहले ही फाइनल कर लिया था। लेकिन करण के किरदार के लिए पेंच फंसा हुआ था। आईएमडीबी की रिपोर्ट के आधार पर करण-अर्जुन में करण की भूमिका के लिए फिल्म के मेकर्स की तरफ से अजय देवगन को ऑफर दिया गया था। लेकिन किसी कारण से उनके साथ बात नहीं बनी और फिर जाकर ये रोल सलमान खान की झोली में आया।

इसके बाद सलमान खान और शाह रुख खान की जोड़ी ने मिलकर बॉक्स ऑफिस को हिला दिया। इसके साथ ही करण-अर्जुन 90 के दशक की सबसे सफल मूवीज में शुमार हुई है। बता दें कि 1995 में रिलीज होने वाली ये मूवी जल्द ही अपनी रिलीज के 30 साल पूरे करेगी। आपको ये जानकार हैरानी होगी करण-अर्जुन का पहला टाइटल ये नहीं था। आईएमडीबी के आधार पर मेकर्स ने इस फिल्म का नाम कायनात प्लान किया था, जिसे बाद में बदलकर करण-अर्जुन किया गया था। गौर करें करण-अर्जुन की री-रिलीज डेट की तरफ तो आने वाले 22 नवंबर को इस मूवी को बड़े पर्दे पर दोबारा से रिलीज किया जाएगा।

तेलुगु फिल्म मटका में नजर आएंगी नोरा

जल्द ही एक्ट्रेस नोरा फतेही तेलुगु फिल्म मटका में नजर आएंगी। फिल्म में एक्ट्रेस नोरा एक्टर वरुण तेज के साथ स्क्रीन शेयर करती दिखाई देंगी। शूटिंग के दौरान एक्ट्रेस चोटिल हो गई थीं, लेकिन इसके बावजूद उन्होंने इस फिल्म की शूटिंग जारी रखी।

हाल ही में नोरा ने एक इंटरव्यू में बताया कि चोट के बावजूद उन्होंने काम क्यों नहीं रोका और इस फिल्म में काम करने के अनुभव के बारे में। नोरा ने बताया कि इस फिल्म में वह सोफिया का किरदार निभा रही हैं, जो एक कैबरे डांसर है। फिल्म में जब सोफिया वासु (वरुण तेज) की जिंदगी में एंट्री करती है, तो बहुत कुछ बदल जाता है। नोरा ने खुलासा किया कि इस फिल्म में सबसे ज्यादा मुश्किल तेलुगु में संवाद बोलने में आई। उन्होंने कहा, पहले दिन का शूट वरुण के साथ था और डायलॉग इतने लंबे थे कि मैं रातभर सो नहीं सकी। मुझे लग रहा था कि कैसे बोल पाऊंगी, लेकिन वरुण ने मुझे सेट पर बहुत सहज महसूस कराया। उन्होंने आगे कहा कि इस फिल्म के लिए उन्हें बहुत मेहनत करनी पड़ी। फिल्म में उनके किरदार की एंट्री एक गाने से होती है, और उस गाने की शूटिंग के दौरान उन्हें चोट लग गई थी। हालांकि, फिल्म की शूटिंग को पांच दिन में खत्म करना था, इसलिए उन्होंने दर्द की परवाह किए बिना शूटिंग पूरी की। इसके बाद, वह एक महीने तक किसी भी फिल्म की शूटिंग नहीं कर पाई। नोरा ने कहा, यह फिल्म मेरे लिए एक अलग जर्नी रही है और मुझे इस पर गर्व है।नोरा ने अपनी शुरुआत के बारे में भी बात की और बताया कि बॉलीवुड में काम करने का ख्याल कभी उनके दिमाग में नहीं आया था।

नोरा ने अपनी मेहनत और संघर्ष के बारे में कहा, मैंने इंडस्ट्री में खुद को साबित करना था, और यही मेरी प्राथमिकता थी। पैसे कमाने के लिए तो और भी बहुत सारे काम हैं, लेकिन मुझे इंडस्ट्री में अपना स्थान बनाना था।उन्होंने कहा, मैंने हमेशा सोचा था कि सिर्फ भारतीय लड़कियां ही बॉलीवुड में एक्ट्रेस बन सकती हैं, लेकिन जब मैंने कैटरीना कैफ और जैकलीन फर्नांडिस को देखा, तो मुझे लगा कि मैं भी कर सकती हूं। इसके बाद, नोरा ने ऑडिशन देना शुरू किया और अपने करियर में छोटे-छोटे रोल्स के जरिए जगह बनाई।

शोभिता ने पसुपु दंचदाम समारोह की तस्वीरें साझा कीं

सोभिता ने इंस्टाग्राम पर पसुपु दंचदाम समारोह की मंत्रमुग्ध कर देने वाली तस्वीरें साझा कीं। उन्होंने पोस्ट को कैप्शन दिया, गोधुमा रायी पसुपु दंचदाम और इस तरह इसकी शुरुआत होती है। समारोह के लिए शोभिता ने सुनहरे और हरे रंग की बॉर्डर वाली एक जीवंत साड़ी पहनी थी। तस्वीरों में वह अपने घर की महिलाओं से घिरी हुई थीं। यह एक पारंपरिक तेलुगु विवाह-पूर्व समारोह है जो विवाह उत्सव की शुरुआत का प्रतीक है। पसुपु का अर्थ है हल्दी, और दंचदाम का अर्थ है कुचलना। इस वाक्यांश का मोटे तौर पर अनुवाद गेहूं, पत्थर और हल्दी को एक साथ कुचलना है। तस्वीरों में शोभिता ने हल्दी पीसकर बड़ों का आशीर्वाद लिया। साउथ एक्टर नागा चैतन्य और शोभिता धूलिपाला ने हैदराबाद में निजी समारोह मे सगाई की थी। अब दोनों ही कपल जल्द ही शादी के बंधन में बांधने जा रहे हैं। शोभिता धूलिपाला और नागा चैतन्य, जिनकी शादी से पहले का उत्सव पिछले महीने शुरू हुआ था, दिसंबर में शादी करने के लिए तैयार हैं। उनकी शादी के निमंत्रण की कई तस्वीरें सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर सामने आई हैं।

सोनाक्षी सिन्हा और जहीर इकबाल का वेकेशन

बॉलीवुड एक्ट्रेस सोनाक्षी सिन्हा और उनके पति जहीर इकबाल इस समय अपने वेकेशन पर हैं, जहां से उन्होंने अपनी रोमांटिक तस्वीरें सोशल मीडिया पर शेयर की हैं। दोनों इस वक्त एक दूसरे के साथ खास पल बिता रहे हैं और तस्वीरों में उनकी मस्ती और प्यार साफ नजर आ रहा है।

एक तस्वीर में सोनाक्षी और जहीर ढलते सूरज को निहारते हुए एक-दूसरे के बाहों में सुकून के पल बिता रहे हैं। सोनाक्षी ने इस मौके पर को-ऑर्ड सूट पहना और लाल बिंदी के साथ लुक को पूरा किया, जबकि जहीर ने सफेद टी-शर्ट और भूरे रंग की कार्गो पैंट पहनी है। इस वेकेशन के दौरान, एक और तस्वीर में जहीर ने अपनी पत्नी सोनाक्षी को गले लगाते हुए शांत सूर्यास्त का आनंद लिया। सोनाक्षी और जहीर की यह तस्वीरें फैंस के बीच बहुत चर्चा में हैं। सोनाक्षी और जहीर ने 23 जून को मुंबई में अपने घर पर एक निजी समारोह में शादी की थी, जिसमें केवल करीबी दोस्त और परिवार वाले शामिल हुए थे। इसके बाद एक भव्य रिसेप्शन भी आयोजित किया गया था, जिसमें बॉलीवुड की कई बड़ी हस्तियां उपस्थित थीं।

मैं मन, दिल और आत्मा से भारतीय हूं और हमेशा रहूंगा: अक्षय कुमार

बॉलीवुड के जाने-माने अभिनेता अक्षय कुमार अब पूरी तरह से भारतीय नागरिक बन चुके हैं। उन्होंने कनाडाई नागरिकता छोड़कर भारतीय पासपोर्ट लिया और अब वह आधिकारिक रूप से भारत के नागरिक हैं। अक्षय को पहले अपनी कनाडाई नागरिकता के कारण सोशल मीडिया पर ट्रोल किया जाता था, लेकिन उन्होंने हमेशा खुद को दिल से भारतीय माना है और अब उन्होंने अपनी नागरिकता के बारे में खुलकर बात की है। उन्होंने कहा कि उस दौरान उनकी फिल्में नहीं चल रही थीं और उनके पास काम की कमी थी। उनके एक दोस्त ने उन्हें कनाडा में काम दिलाने का प्रस्ताव दिया, जिसके बाद उन्होंने कनाडा की नागरिकता के लिए आवेदन किया। लेकिन, बाद में उनकी दो फिल्में हिट हुईं और उनकी किस्मत बदल गई। इसके बाद अक्षय ने सोचा कि कनाडाई नागरिकता रखने की जरूरत नहीं है और वह अपनी भारतीय नागरिकता की ओर वापस लौट आए। अक्षय ने कहा, मैं मन, दिल और आत्मा से भारतीय हूं और हमेशा रहूंगा। उन्होंने यह भी बताया कि पहले कभी इस बात की परवाह नहीं की, लेकिन उन्होंने तीन-चार साल पहले एक इवेंट में कहा था कि वह अपनी विदेशी नागरिकता छोड़ देंगे। अब, पिछले साल अगस्त में उन्होंने भारतीय पासपोर्ट हासिल किया और यह उनके लिए गर्व का पल था।

नेहा धूपिया ने की गोफ्लो रन 2024 की शुरुआत

प्रसिद्ध अभिनेत्री और फिटनेस इन्फ्लूएंसर नेहा धूपिया ने गोफ्लो रन 2024 की शुरुआत की है। इसका उद्देश्य महिलाओं और किशोरियों के बीच मासिक धर्म स्वास्थ्य, शारीरिक फिटनेस और समुदायिकता को बढ़ावा देना है। नेहा धूपिया ने इस आयोजन के प्रति अपने जुड़ाव को साझा करते हुए कहा, दौड़ना हमेशा मेरे लिए एक गहरा अनुभव रहा है, चाहे मैं खुश हूँ, उदास हूँ या व्यस्त।

यह मेरे शरीर और मन को सुनने और खुद को स्वतंत्र महसूस करने का जरिया है। गोफ्लो रन न केवल फिटनेस को बढ़ावा देता है, बल्कि यह एक मजबूत धावक समुदाय से जुड़ने का भी अवसर है। गोफ्लो रन 2024 का प्रमुख उद्देश्य महिलाओं में फिटनेस की आदत को बढ़ावा देना और मासिक धर्म से जुड़े संकोच को दूर करना है। यह कार्यक्रम 12 वर्ष और उससे अधिक आयु की लड़कियों और महिलाओं के लिए खुला है, और उन्हें स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करता है। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाली महिलाओं को दौड़ने और चलने के साथ-साथ मासिक धर्म स्वास्थ्य और उससे जुड़े मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने का अवसर मिलेगा। अनीता लोबो के साथ इस पहल को आगे बढ़ाते हुए, नेहा ने कहा, हमने गोफ्लो रन के माध्यम से एक ऐसा मंच तैयार किया है जहां महिलाएं न केवल शारीरिक रूप से सशक्त होंगी बल्कि मानसिक और सामाजिक रूप से भी मजबूती का अनुभव करेंगी। यह एक ऐसा कदम है जिससे महिलाएं और लड़कियां एक स्वस्थ आज और कल की दिशा में जुड़ेंगी।

दौड़ना हमेशा मेरे लिए एक गहरा अनुभव रहा है

गोफ्लो रन 2024 सभी फिटनेस स्तरों की महिलाओं को भाग लेने के लिए आमंत्रित करता है, जो न केवल शारीरिक फिटनेस का प्रतीक है बल्कि महिलाओं के स्वास्थ्य पर सार्थक संवाद स्थापित करने का भी अवसर है। यह आयोजन महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो समाज में सकारात्मक बदलाव का प्रतीक बन सकता है। बता दें कि यह कार्यक्रम 8 दिसंबर 2024 को मुंबई के बीकेसी स्थित एमएमआरडीए ग्राउंड्स पर आयोजित किया जाएगा, और इसका सह-मेजबान दूरदर्शी उद्यमी अनीता लोबो को बनाया गया है।

अभिनेत्री किरण खेर ने भी की अनुपम खेर की तारीफ

हाल ही में नेटफ्लिक्स पर रिलीज़ हुई नई फिल्म विजय 69 में अभिनेता अनुपम खेर ने अपनी अदाकारी से दर्शकों का दिल जीत लिया है। अनुपम खेर की पत्नी और प्रसिद्ध अभिनेत्री किरण खेर ने भी उनके अभिनय की तारीफ करते हुए उनके लंबे सफर को याद किया।

फिल्म में उनके किरदार को दर्शकों और समीक्षकों द्वारा खूब सराहा जा रहा है। इस बीच, किरण खेर ने अनुपम के शुरुआती दिनों को याद करते हुए बताया कि किस तरह उन्होंने एक छोटे से शहर शिमला से निकलकर बॉलीवुड में अपनी पहचान बनाई। किरण ने कहा, अनुपम का सफर शिमला से शुरू हुआ, जहां सिनेमा के प्रति उनका गहरा जुनून था। उन्होंने अपनी पहचान बनाने के लिए तमाम कठिनाइयों का सामना किया। अपने करियर के शुरुआती दिनों में उन्हें ऐसे किरदार निभाने पड़े जिन्हें अन्य कलाकार ठुकरा देते थे, लेकिन अनुपम ने कभी हार नहीं मानी।किरण खेर ने अनुपम के जुनून और समर्पण की भी प्रशंसा की, और कहा, कठिनाइयों के बावजूद अनुपम हमेशा आत्मविश्वास से भरे रहे। 40 साल बाद भी वे उसी जोश और लगन के साथ अपने हर किरदार में जान डालते हैं। उनके काम के प्रति यह प्यार और समर्पण ही उन्हें सबसे अलग बनाता है।

उन्होंने कहा कि अनुपम की सफलता सिर्फ उनकी प्रतिभा के कारण नहीं, बल्कि उनके संघर्ष और कभी हार न मानने के जज़्बे के कारण है। विजय 69 के बाद अनुपम खेर अब जल्द ही फिल्म इमरजेंसी में नजर आएंगे, जिसका निर्देशन कंगना रनौत ने किया है। इस फिल्म में कंगना खुद पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की भूमिका निभा रही हैं। अनुपम खेर का यह लगातार योगदान उनके चाहने वालों के लिए प्रेरणादायक है।

हॉलीवुड के ऑडिशन में फेल हुईं नीना गुप्ता, डिंपल कपाड़िया को मिला काम

हिंदी फिल्म इंडस्ट्री की एक मशहूर और सम्मानित एक्ट्रेस नीना गुप्ता ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर भी अपनी शानदार एक्टिंग का जलवा दिखा रही हैं। हाल ही में उनकी वेब सीरीज पंचायत का तीसरा सीजन बहुत हिट हुआ था। अब नीना गुप्ता ने एक बड़ा खुलासा किया है कि उन्होंने हॉलीवुड फिल्म टेनेट के लिए ऑडिशन दिया था, लेकिन उन्हें रिजेक्ट कर दिया गया था। नीना गुप्ता ने यह खुलासा करीना कपूर खान के शो व्हाट वीमन वॉन्ट में किया। उन्होंने कहा कि साल 2020 में, डायरेक्टर क्रिस्टोफर नोलन की फिल्म टेनेट के लिए उन्होंने ऑडिशन दिया था। नीना गुप्ता ने बताया कि वह लॉस एंजलिस तक गई थीं और फिल्म के लिए ऑडिशन दिया था, लेकिन बाद में उन्हें इस रोल के लिए नहीं चुना गया। इसके बाद, यह रोल बॉलीवुड एक्ट्रेस डिंपल कपाड़िया को मिला था। उन्होंने कहा कि फिल्म के लिए पहले एक ऑडिशन टेप रिकॉर्ड किया और उसे भेजा। इसके बाद, उन्हें और चार अन्य महिलाओं को फिल्म के लिए चुना गया था, लेकिन अंत में यह रोल डिंपल कपाड़िया को मिल गया। नीना ने कहा, मुझे तो लॉस एंजलिस जाने की भी जरूरत नहीं पड़ी, जबकि डिंपल को यह रोल मिल गया। नीना ने यह भी कहा कि उन्हें हमेशा ऑडिशन में फेल होने का डर रहा है। उन्हें लगता है कि ऑडिशन उनके लिए काम नहीं करते।

बिग बॉस में शिल्पा शिरोडकर के सामने रो पड़े करणवीर मेहरा

बिग बॉस 18 सीजन के जैसे जैसे दिन बीतते जा रहे हैं वैसे वैसे वह और भी रोमांचक होता जा रहा है। हर घंटे लड़ाई-झगड़े हो रहे हैं। घर दो टीमों में बंटा हुआ है, ऐसे में साफ तौर पर विभाजन हो गया है। दुश्मन हैं, लेकिन दोस्त भी हैं! वीकेंड का वार में करणवीर मेहरा को अक्सर स्टैंड न लेने और घर के इर्द-गिर्द घूमने वाले मामलों में शामिल न होने के लिए दोषी ठहराया जाता है। लेकिन वह एक बात को लेकर साफ रहे हैं कि घर में उनके दोस्त कौन हैं। चुम दरंग, श्रुतिका अर्जुन और शिल्पा शिरोडकर उनके दोस्त हैं। लेकिन किस बात ने उन्हें रुलाया?चाहत पांडे भी टाइम गॉड बनने की रेस में थीं। इसलिए टास्क के दौरान ऐसी बहस हुई जिसने घर को हिलाकर रख दिया। टास्क के बाद चम ने करण वीर मेहरा का सामना किया और कहा कि उस पर भरोसा करना मुश्किल है क्योंकि वह स्टैंड नहीं लेता है। वह कहती है कि वह कुछ कहता है लेकिन उसके काम कुछ और ही बयां करते हैं। इससे करण वीर मेहरा बहुत आहत होता है। करण वीर मेहरा ने साफ तौर पर कहा है कि चुम दरंग के लिए उनके दिल में एक सॉफ्ट कॉर्नर है। जब श्रुतिका ने कहा कि वह चाहती है कि चुम उसके भाई आदित्य को डेट करे और वह सहमत हो गई, तो करण वीर ने कबूल किया कि उसे जलन महसूस हो रही है।

ब्रीफ न्यूज

जिला जल एवं स्वच्छता मिशन समिति की बैठक आज

हरदा। विश्व शौचालय दिवस 19 नवम्बर को मनाया जाएगा। बैठक 19 नवम्बर को कलेक्टर आदित्य सिंह की अध्यक्षता में आयोजित की गई है। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्रीमती सविता झानिया ने बताया कि यह बैठक कलेक्टर कार्यालय के सभाकक्ष में दोपहर 3 बजे से आयोजित की गई है।

19 से 25 तक मनाया जायेगा कौमी एकता सप्ताह

हरदा । प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी 19 से 25 नवम्बर तक कौमी एकता सप्ताह मनाया जायेगा। सप्ताह के अंतिम दिन 25 नवम्बर को झण्डा दिवस के रूप में मनाया जायेगा। संस्थान द्वारा कौमी एकता सप्ताह के दौरान साम्प्रदायिक, जातीय, आतंकवादी घटनाओं में जो बच्चे अनाथ हुए हैं, उनके कल्याण के लिये स्वैच्छिक आधार पर वित्तीय सहायता प्राप्त की जाती है। संस्थान द्वारा विभिन्न शासकीय विभागों को झण्डे, पोस्टर्स, पेम्फलेट्स आदि भिजवा कर अधिक से अधिक वित्तीय सहायता का अनुरोध किया गया है।

डीएपी उर्वरक के विकल्प के रूप में कॉम्प्लेक्स खाद का उपयोग

हरदा। रबी वर्ष 2024-25 में किसानों को सुगमता से उर्वरक उपलब्ध कराने के उद्देश्य से जिले में लगातार उर्वरक की व्यवस्था की जा रही है। उपसंचालक कृषि संजय यादव ने बताया कि अब तक जिले में यूरिया उर्वरक की 29497.6 मैट्रिक टन मात्रा का भंडारण किया जा चुका है, जिसमें से 23083.016 मैट्रिक टन यूरिया कृषकों को वितरण किया जा चुका है तथा 6414.584 मैट्रिक टन यूरिया जिले में उपलब्ध है। इसी प्रकार जिले में अब तक डी.ए.पी. उर्वरक का 13322.3 मैट्रिक टन भंडारण किया जा चुका है, जिसमें से 13263.1 मैट्रिक टन उर्वरक कृषकों को वितरित किया गया है तथा 59.2 मैट्रिक टन जिले में अभी उपलब्ध है। इसके अलावा एन.पी.के. उर्वरक की 8551.4 मैट्रिक टन मात्रा जिले में अब तक प्राप्त हो चुकी है, जिसमें से 8400.47 मैट्रिक टन उर्वरक कृषकों को वितरण किया जा चुका है तथा 150.93 मैट्रिक टन जिले में उपलब्ध है। उपसंचालक कृषि श्री यादव ने बताया कि जिला प्रशासन द्वारा जिले में उर्वरकों की आपूर्ति हेतु निरंतर वरिष्ठालय के संपर्क में है। उन्होने किसानों से अनुरोध किया है कि डीएपी उर्वरक के विकल्प के रूप में कॉम्प्लेक्स 20:20:0:13 उर्वरक का उपयोग करें।

झांसी अस्पताल हादसे से सबक ले सीहोर जिला प्रशासन

सिविल सर्जन को तत्काल निलंबित कर अस्पताल की व्यवस्थाएं सुधारी जाएं : पंकज शर्मा

अस्पताल में चल रही अवैध कैंटीन से कभी भी हो सकता है बड़ा हादसा

सत्ता सुधार ■ सीहोर

झांसी के महारानी लक्ष्मीबाई सरकारी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल के स्पेशल न्यू बॉर्न केयर यूनिट (एसएनसीयू) में आग लगने से 10 बच्चों की मौत होने के बाद सीहोर जिला अस्पताल की व्यवस्थाओं पर भी गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। जिला कांग्रेस के पूर्व महासचिव पंकज शर्मा ने एक प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से सीहोर जिला प्रशासन से इन अव्यवस्थाओं में तत्काल सुधार लाए जाने और अस्पताल के सिविल सर्जन को तत्काल निलंबित करने की मांग की है।

इस बारे में अधिक जानकारी देते हुए पंकज शर्मा ने बताया है कि सीहोर जिला मुख्यालय स्थित सरकारी अस्पताल के मातृ एवं शिशु रोग विभाग की बिल्डिंग के पास अवैध रूप से एक कैंटीन का संचालन किया जा रहा है जबकि ये जगह मरीजों के साथ आए परिजनों के विश्राम के लिए बनाई गई थी, साथ ही इस कैंटीन में घरेलू गैस सिलेंडर का भी उपयोग किया जा रहा है। पंकज शर्मा ने कहा कि जहां ये कैंटीन संचालित हो रही है वहां काफी भीड़ रहती है और मरीजों के साथ आए परिजन वहां विश्राम करते हैं इसलिए यहां किसी भी हालत में कैंटीन संचालन की अनुमति नहीं दी जा सकती और ये कैंटीन तो बिना निविदा प्रक्रिया, बिना किसी नियम कायदे और बिना अनुमति के पूरी तरह से अवैध रूप से संचालित की जा रही है। पंकज शर्मा ने आगे कहा कि यदि इस अवैध कैंटीन की वजह से यहां कोई बड़ा हादसा होता है तो इसका जिम्मेदार कौन होगा क्योंकि जहां ये कैंटीन संचालित हो रही है उसके ठीक पास ही अस्पताल का मातृ एवं शिशु रोग विभाग है जहां प्रसूताएं और नवजात बच्चे भर्ती रहते हैं और हादसा होने की स्थिति में उनको बाहर निकलने में परेशानी भी होती है क्योंकि बच्चे नवजात होते हैं और प्रसूताएं भी डिलीवरी के बाद कमजोरी महसूस करती है। पंकज शमाज् ने कहा कि ऐसे में इस कैंटीन की वजह से हुआ कोई छोटा सा हादसा भी विकराल रूप धारण कर सकता है जिससे लोगों के जान माल का काफी नुकसान हो सकता है। पंकज शर्मा ने आगे कहा कि जिला अस्पताल में बिना किसी बड़े आदमी के संरक्षण के जिला अस्पताल में अवैध कैंटीन संचालित होना संभव नहीं है इसलिए कलेक्टर को इस मामले की जांच कराकर असली दोषियों पर कठोर कार्रवाई की जानी चाहिए और इस मामले में मूकदर्शक बने हुए अस्पताल के सिविल सजज़न को तत्काल निलंबित किया जाना चाहिए।

आमजन की शिकायतों का पूरी तत्परता और संवेदनशीलता से करें निराकरण : कलेक्टर

सत्ता सुधार ■ सीहोर

समय-सीमा पत्रकों के निराकरण के लिए कलेक्टर प्रवीण सिंह की अध्यक्षता में जिला पंचायत सभाकक्ष में बैठक आयोजित की गई। बैठक में कलेक्टर श्री सिंह ने सभी अधिकारियों को पूर्व से विभागीय लंबित आवेदनों के निराकरण करने और सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों का त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी विभाग अपने विभाग की लंबित शिकायतों का संतुष्टिपूर्ण निराकरण करें। उन्होंने विभागवार सीएम हेल्पलाइन की विस्तृत समीक्षा की। कलेक्टर श्री सिंह ने सीएम हेल्पलाइन की आमजन की शिकायतों का गंभीरता से निराकरण करने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी अधिकारियों से कहा कि प्रदेश में जिले की नम्बर वन रैंक बनाये रखने के लिए अधिक से अधिक शिकायतों का संतुष्टिपूर्ण निराकरण करें।

कलेक्टर ने सभी विभागीय अधिकारियों से कहा कि अपने विभागीय कार्यो का समय सीमा में संपादन करें। उन्होंने राजस्व अधिकारियों को नामांतरण, बंटवारा, सीमांकन, बटांकन तथा आरसीएमएस में दर्ज सभी प्रकरणों का समय सीमा में निराकरण करने के निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर प्रवीण सिंह ने नेशनल हाइवे के लिए भूमि अधिग्रहण तथा मुआवजे की कार्यवाही तेजी से की जाए। कलेक्टर श्री सिंह ने वनग्रामों के राजस्व ग्रामों परिवर्तन तथा सामुदायिक दावों के संबंध में अधिकारियों को दिशा-निदेज़श दिए। कलेक्टर श्री सिंह ने फसल कटाई प्रयोग की कार्यवाही समय सीमा में करने के निदेज़श दिए। उन्होंने जिले में खाद की समीक्षा करते हुए रबी सीजन के लिए आवश्यकतानुसार खाद की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। बैठक में अपर कलेक्टर वृंदावन सिंह, जिला पंचायत प्रभारी सीईओ एवं संयुक्त कलेक्टर नितिन टाले, संयुक्त कलेक्टर वंदना राजपूत, आनंद सिंह राजावत, एसडीएम जमील खान, डीएस तोमर, मदन सिंह रघुवंशी, तन्मय वर्मा, डिप्टी कलेक्टर सुधीर कुशवाह सहित सभी जिला अधिकारी उपस्थित थे। जिले के सभी जनपद स्तरीय अधिकारी-कर्मचारी वीसी के माध्यम से बैठक में शामिल हुए।

अवैध मदिरा के विरूद्ध आबकारी विभाग द्वारा की गई कार्यवाही

सत्ता सुधार ■ दमोह

आबकारी विभाग दमोह वृत्त हटा प्रभारी सुरेश कुमार गौंड द्वारा जिला आबकारी अधिकारी के मार्गदर्शन में ग्राम बकायन एवं डोंगा महुआ में अवैध मदिरा के विरुद्ध कार्यवाही करते हुए कुल 31 पाव देशी मदिरा, 15 लीटर हाथ भट्टी मदिरा जब्त की गई। इसके साथ ही 350 किलोग्राम महुआ लाहन बरामद कर विधिवत् जप्त कर नष्ट किया गया। अवैध मदिरा की कुल कीमत 39 हजार 600 रुपए है। कुल 5 प्रकरण आबकारी अधिनियम के अंतर्गत पंजीबद्ध किए गए।

कार्यवाही में आबकारी आरक्षक अरविंद जाटव, भूपति सिंह व महिला आबकारी आरक्षक मेघा अहिरवार, गीतांजलि गुप्ता सहयोगी रहे।

नपाध्यक्ष राठौर ने फीता काटकर किया स्वदेश फार्मेसी का शुभारंभ

सत्ता सुधार ■ सीहोर

रविवार शाम गंज क्षेत्र के सरदार पटेल मार्ग पर,नगर पालिका अध्यक्ष विकास प्रिंस राठौर ने वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य स्वदेश फार्मेसी का फीताकाट कर शुभारंभ किया। इस अवसर पर गणमान्य नागरिक मौजूद थे।स्वतंत्रता संग्राम सैनानी,पूर्व विधायक वरिष्ठ पत्रकार स्व. हरिकृष्णसिंह मंत्री के निवास स्थान पर नवनिर्मित शापिंग काम्पलेक्स संचालक को उपस्थित जन ने बधाईयां दीं। कार्यक्रम में समाज सेवी कमलेश कटारे,राजाराम बड़ेभाई, वरिष्ठ पत्रकार प्रदीप चौहान,सुजीत रायकवार, पार्षद माया कसौटिया, अजय राजपूत,डा. नितेशसिंह, डा. अजय, झलावा, सहायक संचालक स्कूल शिक्षा शशिसिंह सेवानिवृत डि.चीफ एलआई. सी. राजेन्द्र कुमार, परि. अधिकारी वंदनवाला सिंह संकुल प्राचार्य रत्नमाला जयंत, प्राचार्य संध्या कसोटिया, जे.सी जयंत पूर्व पार्षद जसवंत सिंह, पुरुषोत्तम गुप्ता, प्यारे मिया मुकेश मेवाड़ा रमेश वर्मा,राजेन्द्र सिंह कसोटिया रामनारायण श्रीवास शिक्षिका रेखासिंह प्रशांत सिंह, विजय शास्त्री वीरबल कुशवाहा,संदीप आयज्, डा. यशवंतसिंह, रामसिंह परमार हरीश सूर्यवंशी सहित गणमान्य नागरिक क्षेत्रवासी मौजूद थे। इस अवसर पर वैदिक विधि से यज्ञ भी सम्पादित हुआ उपस्थित जन का आभार पत्रकार संतोषसिंह ने व्यक्त किया।

सीएम हेल्पलाइन में दर्ज शिकायतों का कराएं निराकरण

सत्ता सुधार ■ हरदा

सीएम हेल्पलाइन में दर्ज शिकायतों का संतुष्टिपूर्ण निराकरण कराएं। संबंधित शिकायतकर्ता से अधिकारी खुद बात करें तथा आवेदक की समस्या के निराकरण होने पर शिकायत को बंद कराएं। यह निर्देश कलेक्टर आदित्य सिंह ने कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित साप्ताहिक समीक्षा बैठक में अधिकारियों को दिये। बैठक में जिला पंचायत की सीईओ श्रीमती सविता झानिया, संयुक्त कलेक्टर सुश्री रजनी वर्मा व डिप्टी कलेक्टर संजीव नागू भी उपस्थित थे। सभी एसडीएम, तहसीलदार व जनपद पंचायतो के सीईओ बैठक में वर्चुअली शामिल हुए।

बैंकिंग करस्पोंडेंट ग्रामीण क्षेत्र का नियमित करें दौरा : बैठक में लीड बैंक प्रबन्धक को निर्देश दिये कि ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत बैंकिंग करस्पोंडेंट को सक्रिय करें तथा उन्हें ग्रामीण क्षेत्र का दौरा कर ग्रामीणों को बैंकिंग सुविधाएं गांव में उपलब्ध कराने के लिये निर्देशित करें। बैंकिंग करस्पोंडेंट का मासिक भ्रमण कार्यक्रम तैयार कर उसका प्रचार-प्रसार करें ताकि ग्रामीणों को मालूम रहे कि वह कब आएगा।

सभी बड़े भवनों का फायर सेफ्टी कराएं ऑडिट : कलेक्टर श्री सिंह ने मुख्य नगर पालिका अधिकारियों व जनपद पंचायतों के सीईओ को निर्देश दिये कि मृत एवं पलायन कर चुके हितग्राहियों के नाम सामाजिक सुरक्षा पेंशन व अन्य योजनाओं से काटे जाएं। मुख्य नगर पालिका अधिकारियों को निर्देश दिये कि बड़े-बड़े भवनों, शॉपिंग मॉल, नर्सिंग होम व प्रायवेट स्कूलों का फायर सेफ्टी ऑडिट कराएं तथा शहरी क्षेत्र में सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग को प्रतिबंधित करने के संबंध में प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के निदेर्शों का पालन कराएं।

नियमित करें निरीक्षण : अधिकारियों को निर्देश दिये कि ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित अस्पताल, स्कूल, आंगनवाड़ी केन्द्र व छात्रावासों का नियमित रूप से निरीक्षण करें तथा निरीक्षण प्रतिवेदन कलेक्ट्रेट भिजवाएं। उन्होने सभी अधिकारियों को निर्देश दिये कि वे अपने-अपने कार्यालयों के विद्युत देयकों का लंबित भुगतान कराएं और भविष्य में नियमित रूप से कार्यालयों के विद्युत देयकों का भुगतान होता रहे, यह सुनिश्चित करें।

हमारा शौचालय-हमारा सम्मान अभियान : विश्व शौचालय दिवस 19 नवम्बर को मनाया जाएगा। इस अवसर पर 19 से 10 दिसम्बर तक हमारा शौचालय-हमारा सम्मान अभियान आयोजित किया जा रहा है। इस अभियान के दौरान व्यक्तिगत शौचालय निर्माण के हितग्राहियों को स्वीकृति पत्र का वितरण किया जाएगा और सफाई मित्रों का सम्मान किया जाएगा।

शहर के बीएसआई मैदान पर खेली जा रही अंडर-15 क्रिकेट प्रतियोगिता

भोपाल ब्लू ने विदिशा को 175 रन के विशाल अंतर से हराया

सत्ता सुधार ■ सीहोर

शहर के बीएसआई मैदान पर जिला क्रिकेट एसोसिएशन के सहयोग से खेली जा रही अंडर-15 इंटर-डिस्ट्रीक प्रतियोगिता के तीसरे दिन विदिशा टीम को भोपाल ने 175 रन के विशाल अंतर से हराया। इस मैच में भोपाल ब्लू की ओर से खेल रहे प्रतिभाशाली बल्लेबाज साहिल सक्सेना ने 120 गेंद पर 104 रन की शतकीय पारी खेली, वहीं सारांश सिंह ने भी 50 रन बनाए।

भोपाल क्रिकेट एसोसिएशन के तत्वाधान में खेली जा रही अंडर-15 प्रतियोगिता में सोमवार को टास जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी भोपाल ब्लू की टीम ने निधाज़रित 40 ओवर में तीन विकेट के नुकसान पर 215 रन का स्कोर खड़ा किया था, इसमें साहिल सक्सेना ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 120 गेंद खेलते हुए 104 रन की विस्फोटक पारी खेली, वहीं उनका साथ देने उतरे सारांश सिंह ने 40 गेंद पर 50 रन बनाए थे। साहिल सलामी बल्लेबाज के रूप में मैदान पर आए थे और शानदार पारी खेली। इधर विदिशा की ओर से गेंदबाजी करते हुए देव बघेल, तातुराज सोनी ने एक-एक विकेट हासिल किया। वहीं लक्ष्य का पीछा करने उतरी विदिशा टीम 22.1 ओवर में 40 रन पर सिमट गई। इसमें हिमालय तिवारी ने 49 गेंद का सामना करते हुए 10 रन बनाए थे। इसके अलावा कोई बल्लेबाज भोपाल के गेंदबाजों के आगे रन नहीं बना सकें। भोपाल ब्लू की ओर से देव कनौजिया ने चार विकेट, अनय जैन-मोहम्मद अहसान ने दो-दो विकेट हासिल किए, इसके अलावा साहिल सक्सेना ने भी बल्लेबाजी के साथ ही शानदार गेंदबाजी करते हुए एक विकेट हासिल किया। डीसीए के मीडिया प्रभारी प्रियांशु दीक्षित ने बताया कि मंगलवार की सुबह भोपाल ब्लू और राजगढ़ के मध्य मैच खेला जाएगा। सोमवार भोपाल टीम के हरफनमौला खिलाड़ी साहिल सक्सेना को शानदार शतकीय पारी की बदौलत मैन आफ द मैच प्रदान किया गया।

जनसमस्याओं के निराकरण हेतु 20 को व 22 को शिविर

हरदा । जिले के वनग्रामों में निवासरत ग्रामीणों को सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ दिलाने तथा योजनाओं की जानकारी उन्हें देने के उद्देश्य से कलेक्टर आदित्य सिंह के निर्देश पर जनसमस्या निवारण शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इन शिविरों में ग्रामीणों की समस्याओं का निराकरण तो किया ही जा रहा है साथ ही ग्रामीणों को सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में भी बताया जा रहा है ताकि ग्रामीणजन इन योजनाओं के बारे में जान सकें और योजनाओं का लाभ उठाने के लिये आगे आएं। इसी क्रम में 20 नवम्बर को टिमरनी विकासखण्ड के वनग्राम राजाबरारी तथा 22 नवम्बर को दूरस्थ ग्राम रातामाटी में शिविर आयोजित किया जाएगा। ये शिविर प्रात: 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक आयोजित किये जायेंगे।

राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण में चिन्हित विद्यालयों के प्राचार्यों के साथ बैठक संपन्न

सत्ता सुधार ■ दमोह

राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण 2024 के अंतर्गत कक्षा नवमी हेतु जिले के 38 विद्यालयों का चयन किया गया है जहां पर 4 दिसंबर को कक्षा नवमी के विद्यार्थियों की सैंपलिंग कर 30 विद्यार्थियों का सर्वेक्षण किया जाएगा तथा रिजल्ट उपरांत विश्लेषण होगा कि विद्यार्थियों का स्तर क्या है किस क्षेत्र में कितने विद्यार्थी कमजोर हैं, किस क्षेत्र में विद्यार्थी दक्ष है इस आधार पर शासन अपनी आगामी नीति तय करेगा। यह सर्वेक्षण हर 3 साल में राष्ट्रीय स्तर पर किया जाता है, सर्वेक्षण 4 दिसंबर को होगा।

चयनित सभी विद्यालयों के प्राचार्यो के साथ जिला शिक्षा अधिकारी एस के नेमा ने बैठक लेकर विद्यालय में उपस्थित संसाधनों शिक्षकों विद्यार्थियों की उपस्थिति मॉक टेस्ट की आयोजन की स्थिति एवं विद्यार्थियों के स्तर को लेकर चर्चा की तथा 4 दिसंबर के पूर्व विद्यार्थियों की नियमित कक्षाएं टेस्ट एवं परिणामों के विश्लेषण पर जोर दिया। बैठक को अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक एस.के. असाटी, एपीसी मोहन राय, राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण के नोडल अधिकारी तमसील कुरेशी ने भी संबोधित किया। बैठक का आयोजन जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय के सभा कक्ष में किया गया।

प्रशिक्षण अटल भूजल अंतर्गत विकास खंड स्तरीय प्रशिक्षण संपन्न

सभी के लिए भूजल बचना महत्पूर्ण है, यह काम सबकी भागेदारी से सभंव

सत्ता सुधार ■ दमोह

वाटर सिक्योरिटी प्लान का पुर्नरीक्षण विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण स्टेट प्रोग्राम मैनेजमेट यूनिट भोपाल द्वारा शासकीय महाविद्यालय पथरिया के ऑडिटोरियम में जनपद पंचायत सीईओ मनीष बागरी की अध्यक्षता में प्रशिक्षण संपन्न हुआ। स्टेट प्रोग्राम मैनेजमेट यूनिट (एसपीएमयू) भोपाल से आए विषय विशेषज्ञ विवेक मौर्य कृषि विशेषज्ञ द्वारा अटल भूजल योजना अंतर्गत कृषि क्षेत्र में सिंचाई की विभिन्न आधुनिक यंत्रों के उपयोग की जानकारी प्रेजेंटेशन के माध्यम से प्रस्तुकती करण किया गया।

एम आई एस एक्सपर्ट भोपाल रवि पटेल के द्वारा अटल भूजल योजना अंतर्गत ग्राम पंचायत स्तर पर स्थापित उपकरणों के उपयोग की जानकारी प्रेजेंटेशन के माध्यम से दी गई एवं अटल जल मोबाईल ऐप के माध्यम से रैनगेज, ग्राउन्ड वॉटर मॉनीटरिंग, जल गुणवत्ता एवं फ्लो मीटर के विषय में बताया गया। मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के उमा शंकर उपाध्याय विकास खंड समन्वयक के द्वारा अटल भूजल योजना की जानकारी एवं अभी तक की प्रगति के विषय पर चर्चा की गई। मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के जिला समन्वयक सुशील नामदेव के द्वारा अटल भूजल योजना अंतर्गत ग्राम पंचायत के सरपंचों एवं सचिवों के दायित्व तथा ग्राम स्तरीय वालेंटियर के दायित्व एवं उनसे अपेक्षाएं तथा प्रचार प्रसार संबंधी जानकारी दी गई। डीपीएमयू के दिनेश शुक्ला भूजल विद के माध्यम से जल संरक्षण एवं जल संवर्धन की जानकारी दी एवं भू वैज्ञानिक परिदृश्य पर चर्चा की।

इस अवसर पर डीपीएमयू से नीरज शर्मा, आई ई सी एक्सपर्ट विक्रम सिंह ठाकुर, मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के मनोज पटैल, भू जल विद हरीचरण, कृषि विशेषज्ञ सूर्यभान पटेल, पथरिया विकासखंड के सरपंच, सचिव, रोजगार सहायक एवं एफएलडब्ल्यू उपस्थित रहे। आभार प्रदर्शन नीरज शर्मा द्वारा व्यक्त किया गया।

खेती की पाठशाला सम्पन्न

सत्ता सुधार ■ हरदा

कृषि विभाग द्वारा कृषकों को खेती की पाठशाला कार्यक्रम के खेती की नई-नई तकनीकों के बारे में बताया जा रहा है। उपसंचालक कृषि संजय यादव ने बताया कि किसानों को एम.पी. किसान पोर्टल पर पंजीकृत कर, उन्हें दलहन उत्पादन कार्यक्रम के बारे में बताया जा रहा है तथा डी.ए.पी. उर्वरक के अन्य विकल्पों विकल्प के रूप में एन.पी.के. 20-20-0-13 का प्रयोग करने के संबंध में मार्गदर्शन दिया जा रहा है। खेती की पाठशाला कार्यक्रम में किसानों को मृदा स्वास्थ कार्ड अनुसार अनुर्सशित मात्रा में उर्वरक का उपयोग करने की सलाह दी जा रही है। श्री यादव ने बताया कि जिले के सभी विकासखण्डों में खेती की पाठशाला कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है। उन्होने बताया कि कृषि विस्तार अधिकारियो द्वारा विकासखंड खिरकिया के ग्राम आरया, सांवरी, गेनाढाना, पटाल्दा, पिपल्या, झांझरी, भागपुरा, मरदानपुर, महेंद्रगाँव, धनकार, रामपुर, बंदी मुहाडिया, जामुखो, मोरतालाई, मगरिया, कालधड, रामटेक, सुंदरपानी, चिकलपाट, कुम्भीखेडा व भवरदी में ह्यह्याखेती की पाठशाला आयोजित की गई।

ब्रीफ न्यूज

ओडिसी निवेश सौदे के तहत जिप को 40,000 इलेक्ट्रिक वाहनों की करेगी आपूर्ति

नई दिल्ली। भारत के ईवी-एज-ए-सर्विस मंच के शीर्ष विनिर्माता ओडिसी इलेक्ट्रिक ने घोषणा की है कि उन्होंने जिप इलेक्ट्रिक से 40,000 वाहनों का ठेका हासिल किया है। इस निवेश सौदे के तहत, ओडिसी ने बताया है कि उनकी कंपनी अगले तीन वर्षों में 40,000 इलेक्ट्रिक वाहनों की आपूर्ति करेगी। कंपनी के एक अधिकारी ने इस महत्वपूर्ण निवेश के बारे में बताया कि ओडिसी इलेक्ट्रिक में यह नया निवेश हमारे राष्ट्रव्यापी विस्तार योजनाओं को महत्वपूर्ण रूप से गति प्रदान करेगा। जिप इलेक्ट्रिक की गहन उद्योग विशेषज्ञता तथा बेड़े के विद्युतीकरण की दृष्टि हमें इलेक्ट्रिक वाहनों के बी2बी सेगमेंट में मजबूत बिजनेस-टू-बिजनेस और उपभोक्ता मांग को रेखांकित करने में मदद करेगी।

रुपया आठ पैसे बढ़कर 84.38 डॉलर पर

मुंबई। अमेरिकी डॉलर के मजबूती और विदेशी पूंजी की निकासी के बावजूद भारतीय रुपया सोमवार को 84.38 प्रति डॉलर पहुंच गया। यह निम्नतम स्तर से ऊपर उठकर आठ पैसे की बढ़ोतरी दर्शाता है। विदेशी मुद्रा व्यापारियों ने बताया कि उचित तेल कीमतों में गिरावट के कारण मुद्रा में सुधार आया। अंतरराष्ट्रीय बाजार में रुपया 84.42 प्रति डॉलर पर खुला और शुरुआती सौदों के बाद 84.38 प्रति डॉलर पर पहुंच गया। इस बढ़ोतरी के बावजूद रुपया गुरुवार को 84.46 पर बंद हुआ था। वहीं अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.06 प्रतिशत की बढ़त के साथ 106.68 पर रुका। विदेशी संस्थागत निवेशक एफआईआई ने गुरुवार को 1,849.87 करोड़ रुपये के शेयर बेचे, जो सूचित करता है कि वे बाजार में बिकवाल रहे। विदेशी मुद्रा बाजार में निर्धारित संबंधों के बावजूद, रुपया ने एक मजबूत प्रदर्शन किया और अमेरिकी डॉलर को मुकाबले काफी मजबूती दिखाई।

टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स भारत में आईफोन प्लांट में मेजॉरिटी स्टेक खरीदेगी

नई दिल्ली। टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स ने भारत में एकमात्र आईफोन प्लांट में मेजॉरिटी स्टेक खरीदने की घोषणा की है। यह कंपनी ताइवान की पेगाट्रॉन के साथ नया जॉइंट वेंचर बनाने की योजना बना रही है। इस समझौते के तहत टाटा के पास 60 फीसदी हिस्सेदारी होगी और वह जॉइंट वेंचर के ऑपरेशन्स की देखभाल करेगी। पेगाट्रॉन टेक्निकल सपोर्ट देने के लिए भागीदार रहेगा। पूरी दुनिया में ऐपल कंपनी की आईफोन की मांग बढ़ रही है और चीन-अमेरिका के बीच टेंशन के चलते ऐपल भारत में अपनी सप्लाई चेन को मजबूत करने हेतु कदम उठा रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि भारत में अंगीकृत आईफोन उत्पादन में वृद्धि से भारतीय बाजार में उनका रवैया मजबूत होगा। यह समझौता साक्षरता और रोजगार के दृष्टि को भी बढ़ावा देगा और खिलाड़ी कंपनियों के लिए एक नया मानक स्थापित करेगा। टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स के इस कदम से भारत में डिजिटल उत्पादन क्षेत्र में नये उत्साह और संभावनाएं उमड़ने की संभावना है।

इस सौदे के बाद भारत में टाटा की तीसरी आईफोन फैक्ट्री होगी

पेगाट्रॉन की भारत स्थित एकमात्र आईफोन प्लांट में ज्यादा हिस्सेदारी खरीदेगी टाटा

एजेंसी ■ नई दिल्ली

टाटा ग्रुप की कंपनी, टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स ने ताइवान की कॉन्ट्रैक्ट मैन्युफैक्चरिंग कंपनी पेगाट्रॉन के भारत में स्थित एकमात्र आईफोन प्लांट में बहुमत हिस्सेदारी खरीदने पर सहमति जाहिर की है। इस डील के तहत, दोनों कंपनियां आपस में मिलकर एक नया ज्वाइंट वेंचर बनाएगी, जिससे टाटा की एप्पल सप्लायर के रूप में स्थिति और मजबूत होगी। एक रिपोर्ट में बताया कि पिछले सप्ताह आंतरिक रूप से घोषित इस डील के तहत, टाटा 60 प्रतिशत हिस्सेदारी रखेगी और ज्वाइंट वेंचर के तहत दैनिक संचालन का जिम्मा संभालेगी, जबकि पेगाट्रॉन शेष हिस्सेदारी रखेगी और तकनीकी सहायता देगी। हालांकि सूत्रों ने डील की रकम का खुलासा नहीं किया। टाटा ने इस पर टिप्पणी करने से मना कर दिया, जबकि एप्पल और पेगाट्रॉन ने कोई जबाव नहीं दिया। बातें दे कि पहले खबर आई थी कि पेगाट्रॉन को एप्पल का समर्थन प्राप्त है और वह अपनी भारत में स्थित एकमात्र आईफोन फैक्ट्री टाटा को बेचने के लिए अंतिम दौर की बातचीत कर रही थी। यह ताइवान की कॉन्ट्रैक्ट मैन्युफैक्चरिंग कंपनी का एप्पल के साथ की गई पार्टनरशिप से अपने कदम पीछे खींचने की ताजा कवायद है। चीन और अमेरिका के बीच भू-राजनीतिक तनाव के बीच एप्पल चीन से परे अपनी सप्लाई चेन में विविधता लाने पर विचार कर रहा है। भारत में टाटा के लिए, चेन्नई स्थित पेगाट्रॉन प्लांट उसके आईफोन की मैन्युफैक्चरिंग योजनाओं को मजबूत करेगा। टाटा, भारत के सबसे बड़े कारोबारी घरानों में से एक है और आइफोन की मैन्युफैक्चरिंग में तेजी से विस्तार कर रहा है। वह भारत में संचालित एकमात्र अन्य आईफोन कॉन्ट्रैक्ट मैन्युफैक्चरर, फॉक्सकॉन को टक्कर दे रहा है। इस डील के समापन की घोषणा शुक्रवार को आईफोन प्लांट में आंतरिक रूप से की गई थी। वहीं, दूसरे सूत्र ने कहा कि दोनों कंपनियां आने वाले दिनों में भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (सीसीआई) की मंजूरी हासिल करने के लिए आवेदन करने की योजना बना रही हैं। टाटा पहले से ही कर्नाटक में एक आईफोन असेंबली प्लांट संचालित कर रही है, जिसे उसने पिछले साल ताइवान की विस्ट्रॉन से अधिग्रहित किया था। वह तमिलनाडु के होसुर में एक और फैक्ट्री बना रही है, जहां उसका एक आईफोन कंपोनेंट प्लांट भी है, जहां सितंबर में आग लगने की घटना हुई थी। विश्लेषकों का अनुमान है कि भारत इस साल कुल आइफोन शिपमेंट में 20-25 प्रतिशत का योगदान देगा, जो पिछले साल 12-14 प्रतिशत था। टाटा का पेगाट्रॉन प्लांट, जिसमें करीब 10,000 कर्मचारी हैं और सालाना 50 लाख आईफोन बनते हैं, भारत में टाटा की तीसरी आईफोन फैक्ट्री होगी।

असम में लगेगा 27 हजार करोड़ का प्लांट, 48 मिलियन सेमीकंडक्टर चिप्स का होगा उत्पादन

इस परियोजना से 15 हजार प्रत्यक्ष और 13 हजार अप्रत्यक्ष नौकरियां होंगी उत्पन्न

एजेंसी ■ नई दिल्ली

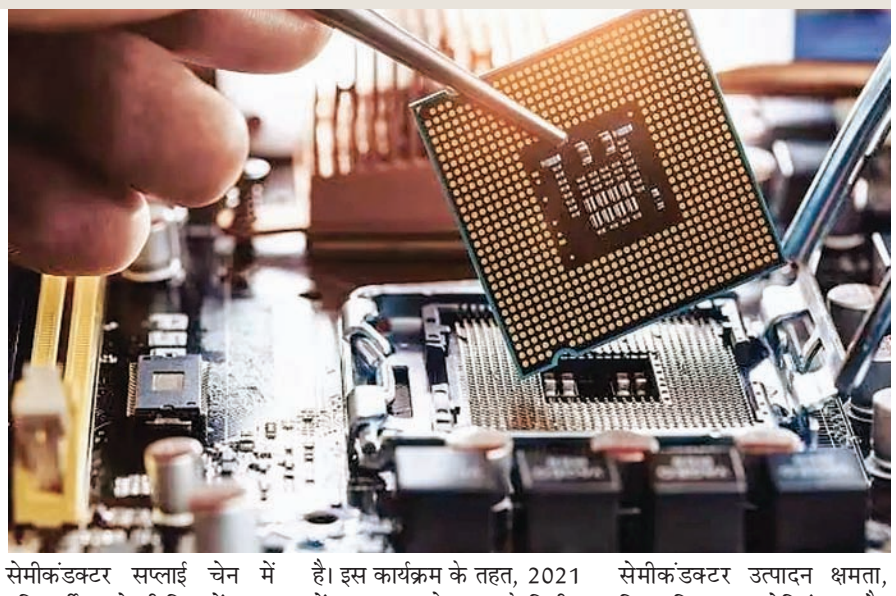

असम के मोरीगांव में टाटा सेमीकंडक्टर असेंबली एंड टेस्ट प्राइवेट लिमिटेड (टीएसएटी) द्वारा स्थापित होने जा रहे 27 हजार करोड़ रुपए के सेमीकंडक्टर प्लांट का विकास 2025 के मध्य तक पूरा हो जाएगा। यह परियोजना भारत के सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम में एक बड़ा बदलाव ला सकती है, खासकर जब इसे भारत की आत्मनिर्भर सेमीकंडक्टर उत्पादन क्षमता को बढ़ाने की दिशा में अहम कदम के रूप में देखा जाए। मोरीगांव प्लांट में रोजाना 48 मिलियन सेमीकंडक्टर चिप्स का उत्पादन होगा। इसमें एडवांस पैकेजिंग तकनीक जैसे फ्लिप चिप और इंटीग्रेटेड सिस्टम इन पैकेज (आईएसआईपी) का इस्तेमाल किया जाएगा। इस परियोजना से 15 हजार प्रत्यक्ष और 11 हजार से 13 हजार अप्रत्यक्ष नौकरियां उत्पन्न होंगी, जिससे असम और आसपास के क्षेत्रों में आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। यह परियोजना भारत को वैश्विक सेमीकंडक्टर सप्लाई चेन में प्रतिस्पर्धी बनाने की दिशा में अहम कदम साबित होगी। इसके जरिए से भारत घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों के लिए सेमीकंडक्टर चिप्स का उत्पादन करेगा। भारत सरकार ने सेमीकॉन इंडिया कार्यक्रम के तहत घरेलू सेमीकंडक्टर उद्योग को बढ़ावा देने के लिए कई पहलों को लागू किया है। इस कार्यक्रम के तहत, 2021 में 76 हजार करोड़ रुपए के वित्तीय परिव्यय के साथ सेमीकंडक्टर और डिस्प्ले इकोसिस्टम के निर्माण की दिशा में काम किया जा रहा है। इसमें सेमीकंडक्टर फैब्स, डिस्प्ले फैब्स, सेंसर फैब्स, और डिजाइन लिंक्ड इंसेंटिव जैसी योजनाओं का भी समर्थन किया जा रहा है। भारत में बढ़ती सेमीकंडक्टर उत्पादन क्षमता, चिप डिजाइन, टेस्टिंग, और असेंबली के लिए अनुकूल वातावरण तैयार कर रही है, जो न केवल तकनीकी क्षेत्र को बढ़ावा मिलेग बल्कि रोजगार के अवसर भी पैदा होंगे। सरकार का उद्देश्य भारत को डिजिटल अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में स्थापित करना है।

अक्टूबर के पहले पखवाड़े में बैंकों से 1.12 लाख करोड़ निकाले गए

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के नवीन आंकड़ों के मुताबिक अक्टूबर के पहले पखवाड़े में बैंकों से 1.12 लाख करोड़ रुपये निकाले गए हैं। इन पैसों का मुख्य इक्विटी बाजार में निवेश हुआ था। बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज का सेंसेक्स अक्टूबर में 6 फीसदी तक गिरा, जिससे निवेशकों को हानि हुई। यह गिरावट उन्हें सुरक्षित समझे जाने वाले बैंकों में निवेश करने के लिए प्रेरित करने लगी। सितंबर में बीएसई सेंसेक्स अपना रिकॉर्ड 85,800 के पार पहुंच गया था। उस समय बाजार में निवेश बढ़ रहा था और सूचीबद्ध कंपनियों की पूंजी 478 लाख करोड़ रुपये हो गई थी। आरबीआई के आंकड़े दर्शाते हैं कि अगस्त के अंत में बैंकों का कुल जमा 215.50 लाख करोड़ रुपये था। सितंबर के पहले हफ्ते में यह 45,000 करोड़ रुपये कम होकर 215.05 लाख करोड़ रह गया, लेकिन बाजार में गिरावट के चलते यह फिर बढ़ गया। बैंकों के कुल कर्ज में चार लाख करोड़ की वृद्धि देखी गई है, जबकि जमा में 5 लाख करोड़ रुपये की वृद्धि हुई है।

गिरते बाजार में भी इंफोसिस और टीसीएस ने कर ली 15,000 करोड़ रुपये की मोटी कमाई

एजेंसी ■ नई दिल्ली

शेयर बाजार में गिरावट का दौर थम नहीं रहा है। बीते हफ्ते बीएसई सेंसेक्स में 1,906.01 अंक की गिरावट आई। शुक्रवार को गुरु नानक जयंती के मौके पर शेयर बाजार बंद रहे थे। बीते हफ्ते बाजार में आई गिरावट के चलते स्टॉक मार्केट की टॉप-10 कंपनियों में से 8 कंपनियों को तगड़ा नुकसान हुआ है, लेकिन 2 कंपनियां ऐसी रहीं जो गिरते बाजार में भी मोटी कमाई करने में कामयाब रही हैं। बीते हफ्ते इंफोसिस और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) के निवेशकों को कंबाइंड रुप से करीब 15,000 करोड़ रुपये की मोटी कमाई की।

रिपोर्ट्स के मुताबिक शेयर बाजार में गिरावट के बीच बीते हफ्ते सेंसेक्स की टॉप-10 सबसे वैल्यूएबल कंपनियों में से 8 के मार्केट कैप में 1,65,180.04 करोड़ रुपये कम हो गया। इस दौरान एचडीएफसी बैंक और एसबीआई को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ। एसबीआई का मार्केट वैल्यूएशन 34,984.51 करोड़ रुपये से घटकर 7,17,584.07 करोड़ रुपये रह गया, हिंदुस्तान यूनिलीवर का मार्केट वैल्यूएशन 27,830.91 करोड़ रुपये से घटकर 5,61,329.10 करोड़ रुपये और रिलायंस इंडस्ट्रीज का वैल्यूएशन 22,057.77 करोड़ रुपये घटकर 17,15,498.91 करोड़ रुपये रहा। आईटीसी का मार्केट कैप 15,449.47 करोड़ रुपये घटकर 5,82,764.02 करोड़ रुपये और भारती एयरटेल का मार्केट कैप 11,215.87 करोड़ रुपये घटकर 8,82,808.73 करोड़ रुपये बचा। एलआईसी का वैल्यूएशन 4,079.62 करोड़ रुपये घटकर 5,74,499.54 करोड़ रुपये और आईसीआईसीआई बैंक का वैल्यूएशन 2,832.38 करोड़ रुपये घटकर 8,85,599.68 करोड़ रुपये रह गया।

लैपटॉप आयात में होगी कटौती, घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने पर रहेगा जोर

केंद्र सरकार इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के आयात पर लगाएगी रोक

एजेंसी ■ नई दिल्ली

केंद्र सरकार वर्तमान में लैपटॉप और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के आयात पर रोक लगाने के तौर-तरीकों पर विचार कर रही है, जिससे देश में उत्पादन को बढ़ावा देने के लक्ष्य को प्रोत्साहित किया जा सके। सरकार की ओर से शुरूआत में आयात को मौजूदा स्तर से 5 फीसदी कम करने की संभावना तलाश की जा रही है ताकि जब आयात सीमा लागू हो, तो देश में उपकरणों की आपूर्ति में कोई व्यवधान न हो। अगस्त 2023 में, चीन पर निर्भरता कम करने के लिए चुनिंदा आईटी हार्डवेयर उत्पादों के आयात के लिए लाइसेंस की योजना की गई थी, लेकिन उद्यमों और अमेरिका जैसे व्यापारिक भागीदारों की चिंताओं के बाद सरकार ने नवंबर 2023 से ऑनलाइन आयात परमिट के लिए नई प्रबंधन प्रणाली की घोषणा की थी। नई व्यवस्था में 7 आईटी हार्डवेयर उत्पादों को शामिल किया गया था, जिसे 31 दिसंबर तक के लिए लागू किया गया था। इस सावधानी की प्रक्रिया के साथ, सरकार के द्वारा नई योजना के तहत विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए आयात को घटाने और घरेलू उत्पादन को मजबूत करने के लिए नए उपायों का परीक्षण किया जा रहा है। सरकारी सूत्रों के अनुसार यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि यह प्रक्रिया पूरे संकेतों के साथ संभव है और राष्ट्रीय सुरक्षा के पहलुओं को भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इसके साथ ही, कम से कम दो नई विदेशी कंपनियां भारत में विनिर्माण शुरू करने की योजना बना रही हैं, जिससे देश की नीति में स्थिरता और और उत्पादन क्षमता में सुधार हो सके।

टमाटर की होलसेल कीमतों में गिरावट शुरू

नई दिल्ली। टमाटर की होलसेल कीमतों में गिरावट शुरू हो गई है, जिससे देशभर में खुदरा मूल्य में भी कई गिरावटें आई हैं। दिल्ली-एनसीआर में टमाटर की कीमत पिछले 10 दिनों में 80 रुपये से 60 रुपये प्रति किलोग्राम तक आ गई है। आधिकारिक बयान के मुताबिक, नवंबर के मध्य बाजार में टमाटर का औसत खुदरा मूल्य 52.35 रुपये प्रति किलोग्राम रहा जो कुछ हफ्ते पहले 67.50 रुपये प्रति किलोग्राम था। गिरावट की जानकारी के बाद देश के बड़े शहरों में भी खुदरा मार्केट में टमाटर की कीमतों में कमी देखने को मिल रही है। इसी अवधि के दौरान, दिल्ली की आजादपुर मंडी में मॉडल थोक मूल्य में लगभग 50 प्रतिशत की गिरावट देखी गई है। मंत्रालय ने बताया कि कई प्रमुख बाजारों से सूचना मिली है कि कीमतों में सुधार की संकेत मिल रहा है। कुल मिलाकर टमाटर की कीमतों में गिरावट के साथ-साथ उत्पादन में भी वृद्धि की संभावना है।

अमेरिका की जॉन्स हॉपकिंस यूनिवर्सिटी भारत में स्थापित कर सकती है कैंपस

जेएचयू के प्रतिनिधिमंडल ने केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान से मुलाकात की

एजेंसी ■ नई दिल्ली

अमेरिकी उच्चतम शिक्षा संस्थान जॉन्स हॉपकिंस यूनिवर्सिटी (जेएचयू) ने भारत में कैंपस स्थापित करने की योजना बनाई है। इस महत्वपूर्ण प्रस्ताव की चर्चा के लिए जेएचयू के प्रतिनिधिमंडल ने केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान से मुलाकात की। इस मुलाकात में जेएचयू के अध्यक्ष रोनाल्ड जे. डेनियल के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल भारत आया। इस मंडल में जेएसयू की आंतरिक इकाई, गुप्ता स्की इंडिया इंस्टीट्यूट के अधिकारी भी शामिल थे। इस मुलाकात का मुख्य उद्देश्य जेएचयू समुदाय को भारत में भागीदारों के साथ जोड़ना और लगातार उन्नति करना है। केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने इस मुलाकात में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के महत्वपूर्ण पहलुओं पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि एनईपी 2020 भारतीय शिक्षा क्षेत्र के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। शिक्षा मंत्री ने जेएचयू की सराहना की और बताया कि इस साझेदारी से छात्रों और शिक्षकों के बीच नए क्षेत्रों में अनुसंधान की सहायता होगी। केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार जेएसयू के साथ एक भारतीय कैंपस की स्थापना के लिए चर्चा की गई। इस चर्चा में गुप्ता और उनकी टीम ने भारत-अमेरिका शैक्षिक सहयोग के महत्व को उजागर किया। जेएसयू की यह प्रतिनिधिमंडल भारतीय विश्वविद्यालयों के साथ गहरी साझेदारी को मजबूत करने के लक्ष्य में भारत में विभिन्न संस्थानों का दौरा करेगा। इस महत्वपूर्ण प्रस्ताव के साथ यह मंडल सरकार के अधिकारियों, शिक्षाविदों और कांसुलर प्रतिनिधियों के साथ भी बातचीत करेगा। जेएचयू के भारतीय मूल के कुछ प्रमुख फैकल्टी सदस्यों ने भी इस बहस में भाग लिया।

मांग लिथियम आयन बैटरी स्टोरेज के लिए बड़े पैमाने पर इंटीग्रेटेड कैपेसिटी पैदा करने की वजह से मांग में तेजी जारी रहेगी

भारत 2030 तक अपनी ऊर्जा जरुरत का 50 प्रतिशत अक्षय ऊर्जा से पूरा करेगा

एजेंसी ■ नई दिल्ली

भारत ने 2030 तक अपनी प्राथमिक ऊर्जा जरुरत का 50 प्रतिशत अक्षय ऊर्जा से पूरा करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। इसके साथ ही देश में लिथियम-आयन बैटरी की मांग वित्त वर्ष 2027 तक 54 गीगावाट घंटे (जीडब्ल्यूएच) और वित्त वर्ष 2030 तक 127 गीगावाट घंटे तक तेजी से बढ़ने की उम्मीद है। वर्तमान में, 15 गीगावाट घंटे की घरेलू लिथियम-आयन बैटरी भंडारण मांग करीब पूरी तरह से लिथियम-आयन सेल और बैटरी के आयात से पूरी होती है। भारत अपनी लिथियम आयन बैटरी की जरूरत आयात से पूरी करता है। रिपोर्ट के अनुसार देश की बैटरी को लेकर यह आयात जरूरत वित्त वर्ष 2027 तक घटकर 20 प्रतिशत रह जाएगी। हालांकि, लिथियम आयन बैटरी स्टोरेज के लिए बड़े पैमाने पर इंटीग्रेटेड कैपेसिटी पैदा करने की वजह से मांग में तेजी जारी रहेगी।

रिपोर्ट में कहा गया हैं कि मांग में वृद्धि मुख्य रूप से ईवी के प्रवेश में वृद्धि और बिजली ग्रिड के डीकार्बोनाइजेशन से प्रेरित है, जिसे केंद्र और राज्य दोनों सरकारों की महत्वाकांक्षी सरकारी लक्ष्यों और नीतियों/प्रोत्साहनों से समर्थन मिला है। सरकार इलेक्ट्रिक वाहनों को तेजी से अपनाने और विनिर्माण योजना (एफएएमई), बैटरी एनर्जी स्टोरेज सिस्टम के लिए वीडीएफ योजना पर ध्यान दे रही है, जिससे ईवी और बीईएसएस की लागत कम करने में मदद मिली है, जिससे मांग को बढ़ावा मिला है। केंद्र की मोदी सरकार ने 2030 तक वार्षिक बिक्री के प्रतिशत के रूप में 30 प्रतिशत ईवी प्रवेश दर हासिल करने का लक्ष्य रखा है। भारत ने पहले ही पीएलआई योजना के तहत 40 गीगावाट घंटा इंटीग्रेटेड बैटरी कैपेसिटी आवंटित की है, शेष 10 गीगावाट घंटा जल्द ही आवंटित किए जाने की उम्मीद है। इसके अतिरिक्त, भारत में मौजूदा पारंपरिक बैटरी निर्माता और कुछ अन्य कंपनियों से योजना के बाहर बैटरी क्षमता स्थापित करने की उम्मीद है। भारत में लिथियम-आयन बैटरी स्टोरेज की मांग में वृद्धि होने की उम्मीद है, जो मुख्य रूप से ईवी और रिन्यूएबल एनर्जी स्टोरेज से जुड़ी जरूरतों की ओर माइग्रेशन से जुड़ी है।

जीएवीएल ने किसानों के लिए एक नया कीटनाशक समाधान पेश किया

गोदरेज एग्रोवेट ने प्रोविवी के साथ की साझेदारी

एजेंसी ■ नई दिल्ली

कृषि व्यवसाय कंपनी गोदरेज एग्रोवेट (जीएवीएल) ने भारत के किसानों के लिए एक नया कीटनाशक समाधान पेश किया है, जो 'फेरोमोन' (रसायन) पर आधारित है।

यह समाधान अमेरिका स्थित प्रोविवी कंपनी के साथ की गई रणनीतिक साझेदारी के माध्यम से उपलब्ध कराया जाएगा। गोदरेज एग्रोवेट के प्रबंध निदेशक ने बताया कि कृषि में बदलती जलवायु परिस्थितियों के कारण कीटों की समस्या बढ़ गई है, इसलिए नवीन और टिकाऊ प्रौद्योगिकियों की जरुरत है।

उन्होंने यह भी जाहिर किया कि जैवनिम्नीकरणीय कीटनाशक उत्पाद 2029 तक भारतीय किसानों के लिए उपलब्ध होने की उम्मीद है। प्रोविवी कंपनी के मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने भी इस साझेदारी की महत्वता को स्वीकारा और इसे दुनिया के तेजी से बढ़ते कृषि बाजार में एक प्रभावी स्थान देने की उम्मीद जताई। उन्होंने बताया कि इस साझेदारी के वित्तीय विवरण अभी तक सार्वजनिक नहीं किया गया है।

ब्रीफ न्यूज

पोछा लगाते समय छत से गिरकर महिला की मौत

मुरैना। सिटी कोतवाली के अंतर्गत गल्ला मंडी के पास स्थित न्यू बेरीज स्कूल के पास छत पर पोछा लगाते समय अचानक नीचे गिरी महिला की दर्दनाक मौत हो गई। पुलिस द्वारा मर्ग कायम कर मामले की जांच की जा रही है। प्राप्त जानकारी के अनुसार शानू पत्नी मनीष बंसल उम्र 40 निवासी लक्ष्मी कॉलोनी अपने मकान के छज्जे पर पोछा लगा रही थी, तभी अचानक उसका पैर फिसल गया और नीचे गिर पड़ी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गई। उसे उपचार के लिए जिला अस्पताल लाया गया, जहां चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस द्वारा मर्ग कायम कर मामले की जांच की जा रही है।

अज्ञात कारण के चलते युवक फांसी पर झूला

मुरैना। जिले के दिमनी थाना अंतर्गत ऐसाह गांव में बीती रात्रि एक युवक ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस द्वारा मामले की जांच की जा रही है। बताया जाता है कि विष्णु शर्मा पुत्र भरत लाल 25 निवासी ऐसाह गांव ने अज्ञात कारण के चलते रविवार सोमवार की देर रात घर के अंदर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सुबह जब काफी देर तक वह कमरे से नहीं निकला तो परिजन उसे देखने गए और वह फांसी पर लटका मिला। घटना की सूचना पुलिस को दी गई। पुलिस द्वारा पीएम कराकर लाश परिजनों को सौंप दी है एवं मामले की जांच कर रही है।

आयुक्त स्काउट चंबल संभाग ने रैली की तैयारी का लिया जायजा

मुरैना। चंबल संभाग मुरैना की संभागीय स्काउट गाइड रैली की तैयारियों को देखने के लिये सोमवार कोसंभागीय स्काउट प्रशिक्षण केंद्र जींगनी मुरैना में सहायक राज्य संगठन आयुक्त स्काउट चंबल संभाग मुरैना श्री सुखदेव सिंह चैहान के साथ उपस्थित हुए।संभागीय स्काउट गाइड रैली की तैयारी का जायजा लिया एवं संबंधितों को निर्देशित किया। इस अवसर पर संबंधित विभागों के अधिकारी भी पहुंचे।

बाइक से स्मैक की तस्करी करते बदमाश पकड़ा

मुरैना। सिविल लाइन थाना पुलिस ने रविवार सोमवार की देर रात निवी रोड पर बाइक से स्मैक की अवैध रूप से तस्करी करते तस्कर को गिरफ्तार कर 50,000 का माल बरामद किया है। पुलिस द्वारा आरोपी के विरुद्ध मामला दर्ज कर लिया गया है। दर्शन शुक्ला थाना प्रभारी सिविल लाईन को मुखबिर द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि एक बाइक सवार व्यक्ति निवी रोड के रास्ते से अवैध मादक पदार्थ लेकर जा रहा है। उक्त सूचना पर त्वरित कार्यवाही करते हुए पूरी टीम ने निवी रोड के रास्ते पर चैकिंग लगाकर आरोपी राय सिंह सिकरवार निवासी चचिहा थाना बागचीनी को पकड़ कर तलाशी ली तो उसके पास से 25 ग्राम स्मैक कीमती करीबन 50,000 रूपये की पाई गई। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर 25 ग्राम अवैध स्मैक, अपाची मोटर साईकिल एवं 800 रूपये नगदी कीमत करीबन 1,50,800 रूपये का जप्त कर धारा 8/21 एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया है।

सभी व्यवस्थायें चाक-चैबंद रहें: अपर कलेक्टर

चंबल संभागीय प्रशिक्षण स्काउट-गाइड 5 दिनी रैली का आयोजन 26 से 30 तक

सत्ता सुधार ■ मुरैना

भारत स्काउट एवं गाइड मध्यप्रदेश भोपाल के निर्देशन में 26 से 30 नवंबर तक चंबल संभागीय रैली स्थान संभागीय प्रशिक्षण केन्द्र स्काउट गाइड केन्द्रीय विद्यालय के सामने की जाना है। कार्यक्रम में भव्यता रहे, इसलिये अपर कलेक्टर सीबी प्रसाद ने समस्त अधिकारियों की बैठक ली और स्पष्ट निर्देश दिये कि पांच दिवसीय स्काउट गाइड प्रशिक्षण में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं होनी चाहिये। यह निर्देश उन्होंने समस्त अधिकारियों को समीक्षा बैठक के दौरान दिये। बैठक में नगर निगम कमिश्नर सतेन्द्र धाकड़, संयुक्त कलेक्टर शुभम शर्मा, समस्त एसडीएम, समस्त जिलाधिकारी, नगरीय निकाय के सीएमओ, सहायक राज्य संगठन आयुक्त स्काउट चंबल संभाग सुखदेव सिंह चैहान, जनपद सीईओ और तहसीलदार उपस्थित थे। अपर कलेक्टर सीबी प्रसाद ने कहा कि स्काउट गाइड रैली में भिंड, मुरैना, श्योपुर से कक्षा 9 से 12 तक के छात्र-छात्रायें उपस्थित रहेंगे। उनके रूकने, खाने का प्रबंधन बेहतर किया जाये, इसके लिये शुलभ शौचालय, स्नानागार, टैंट, लाइट, पेयजल के बेहतर प्रबंध किये जायें। इसके अलावा 28 नवंबर को जीवाजीगंज पार्क से सभी छात्र-छात्राओं द्वारा रैली निकाली जायेगी उनके वाहन व्यवस्था की जिम्मेदारी क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी को दी है। कलेक्टर ने कहा कि बाहर से आने वाले छात्र-छात्राओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो इसलिये कैंप में ही अस्थाई अस्पताल और सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध किये जायें।

सीएम हेल्पलाइन निराकरण करने में अभी भी 48 घंटे शेष : अपर कलेक्टर

खेल, शिक्षा, वाणिज्य कर अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस

सत्ता सुधार ■ मुरैना

सीएम हेल्पलाइन की रैंकिंग प्रदेश में 20 तारीख के दोपहर तक निकलती है, इसलिये जो विभाग सी और डी कैटेगरी में हैं वे अधिक से अधिक सीएम हैल्पलाइन का निराकरण करें। अभी भी निराकरण करने के लिये 48 घंटे शेष हैं। यह निर्देश अपर कलेक्टर सीबी प्रसाद ने सीएम हैल्पलाइन की समीक्षा के दौरान अधिकारियों को दिये। बैठक में नगर निगम कमिश्नर सतेन्द्र धाकड़, संयुक्त कलेक्टर शुभम शर्मा, समस्त एसडीएम, समस्त जिलाधिकारी, नगरीय निकाय के सीएमओ, जनपद सीईओ और तहसीलदार उपस्थित थे। अपर कलेक्टर सीबी प्रसाद ने कहा कि सीएम हैल्पलाइन का निराकरण हम सबकी प्राथमिकता में है किंतु कई अधिकारी समय पर उपस्थित नहीं हुये हैं। उनमें खेल अधिकारी प्रशांत कुशवाह, शिक्षा विभाग के सुधीर सक्सैना और वाणिज्य अधिकारी को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिये। अपर कलेक्टर ने कहा कि समीक्षा में पाया गया है कि कई विभागों को लक्ष्य अक्टूबर माह का 80 प्रतिशत निराकरण करने के लिये दिया गया था किंतु कई विभागों ने सीएम हैल्पलाइन में अच्छा कार्य किया है वे बी और सी में आ चुके हैं। अभी 48 घंटे रैंकिंग करने में शेष हैं। आने वाली शिकायतों का अभी और निराकरण नहीं किया तो वे विभाग बी और सी की अपेक्षा डी में पहुंच जायेंगे, इसलिये सीएम हैल्पलाइन निराकरण में कोताही न बरतें। इसलिये सीएम हैल्पलाइन का निराकरण तेजी से करते रहें। बैठक में अपर कलेक्टर ने प्रभारी सीएमएचओ को निर्देश दिये कि अभी भी स्वास्थ्य विभाग डी में दिख रहा है कार्य में तेजी लायें इसलिये बी तक आने का प्रयास करें।

कैलारस अनाज मंडी गोदाम से शटर का ताला तोड़कर 4 क्विंटल से अधिक सोयाबीन चोरी

सत्ता सुधार ■ मुरैना

जिले के कैलारस थाना अंतर्गत कृषि उपज मंडी में बने एक गोदाम से व्यापारी का 4 क्विंटल से अधिक सोयाबीन अज्ञात चोर शटर का ताला तोड़कर चोरी कर ले गए। व्यापारी सोमवार की सुबह जब गोदाम पहुंचा तो उसे घटना का पता चला, जिसकी सूचना पुलिस को दी गई स पुलिस द्वारा मामले की जांच की जा रही है। प्राप्त जानकारी के अनुसार कान्हा ट्रेडिंग कम्पनी संचालक अन्नो सिंहल नेपरी वाले का कृषि उपज मंडी कैलारस में गोदाम बना हुआ है, जिसमें सोयाबीन एवं अन्य फसल रखी हुई थी। बताया जाता है कि बीती रात्रि अज्ञात चोर सत्र का ताला तोड़कर 4 क्विंटल 20 किलो सोयाबीन चोरी कर ले गए, जिसकी कीमत 20,000 से अधिक बताई गई है। व्यापारी सोमवार की सुबह जब गोदाम पर पहुंचा तो उसे ताला टूटा मिला। घटना की सूचना थाना पुलिस को दी गई है, जिस पर से पुलिस मामले की जांच में लगी है।

स्वनिधि भी-स्वाभिमान भी' पखवाड़ा अभियान का लक्ष्य पूर्ण करें: आयुक्त

सत्ता सुधार ■ मुरैना

स्वनिधि भी स्वभिमान भी पखवाड़े का आयोजन भारत सरकार द्वारा 18 नवंबर से 2 दिसंबर 2024 तक आयोजित किया जाएगा। पखवाड़े अंतर्गत प्रधानमंत्री स्व निधि योजना अंतर्गत जिन पात्र स्ट्रीट वेंडर पथ विक्रेताओं के प्रकरण बैंक में स्वीकृत होकर वितरण हेतु शेष रह गए हैं, उन स्ट्रीट वेंडरों पथ विक्रेताओं के प्रकरण शत-प्रतिशत वितरण करवाना है, साथ ही साथ जो प्रकरण बैंक में पिकअप ऑप्शन में है, उन प्रकरणों को स्वीकृत कर वितरण किया जाना है। नगर निगम आयुक्त सत्येंद्र धाकरे ने संबंधित स्टाफ सीईओ सीएम को स्पष्ट निर्देश देते हुए कहा कि वह पखवाड़े अंतर्गत शत-प्रतिशत प्रकरणों का वितरण करना सुनिश्चित करें। इस संबंध में जिला परियोजना प्रबंधक रहीम चैहान द्वारा संबंधित सीओ की बैठक टाउन हॉल कार्यालय में ली गई एवं बैठक में जिला परियोजना प्रबंधक द्वारा पखवाड़ा के संबंध में सभी सीओ को बताया गया और सभी सीओ को बैंक अनुसार लक्ष्य भी दिए गए। बैठक में नगर निगम के सीईओ बलवीर कुशवाह, मालती गुप्ता, प्रेमलता गुप्ता, मधु पाराशर, मनीषा प्रजापति, राशिद खान, विवेक पाराशर, सोनू शर्मा, आनंद परमार सहित डे एनयूएलएम का स्टाफ भी मौजूद रहा।

मुरैना जिले में खाद की कमी नहीं, पर्याप्त मात्रा में खाद उपलब्ध

मुरैना। मुरैना जिले में वर्ष 2024-25 की स्थिति में रबी फसल के लिये खाद पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। उप संचालक कृषि ने बताया है कि वर्ष 2024-25 के लिये 52 हजार 563 मैट्रिक टन खाद प्राप्त हुआ, जिसमें से अभी तक 38 हजार 763 मैट्रिक टन खाद 18 नवम्बर तक वितरित हो चुका है। अभी भी जिले के स्टॉक में 13 हजार 800 मैट्रिक टन खाद उपलब्ध है। कृषि विभाग द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार 20 हजार 669 मैट्रिक टन यूरिया प्राप्त हुआ, जिसमें से 14 हजार 956 मैट्रिक टन खाद अभी तक वितरण हो चुका है। 5 हजार 713 मैट्रिक टन अभी भी शेष है। 9 हजार 590 मैट्रिक टन डीएपी प्राप्त हुआ, जिसमें से 8 हजार 596 मैट्रिक टन वितरण किया जा चुका है। 964 मैट्रिक टन अभी भी उपलब्ध है। 9 हजार 710 मैट्रिक टन सुपर फास्फेट प्राप्त हुआ, जिसमें से 4 हजार 420 मैट्रिक टन अभी तक वितरण हो चुका है।

रील बनाने के चक्कर में लड़की ने किए हर्ष फायर

वीडियो वायरल होने के बाद पुलिस ने किया मामला दर्ज

सत्ता सुधार ■ मुरैना

जिले भर में सोमवार को सोशल मीडिया पर एक लड़की हर्ष फायर करते इतनी पॉपुलर हो गई कि पुलिस को उसके विरुद्ध मामला दर्ज करना पड़ा। हालांकि घटना 15 नवंबर की है, लेकिन वीडियो सोमवार की सुबह से वायरल हो रहा था। कैलारस थाना प्रभारी ने स्वयं मामला दर्ज किया है।

थाना प्रभारी सुनील खेमरिया ने जानकारी देते हुए बताया कि उन्हें जानकारी मिली कि सोशल मीडिया एवं इंस्टाग्राम पर एक लड़की द्वारा लड़के के साथ मिलकर हर्ष फायर किए जा रहे हैं। पुलिस द्वारा मामले की जानकारी प्राप्त की गई तो पता चला कि उक्त मामला 15 नवंबर की रात 10 से 11:00 का है और घटनास्थल हिमांशु पैलेस के सामने लक्खी गार्डन मैरिज होम एमएस रोड कैलारस का है। थाना प्रभारी ने बताया कि 15 नवंबर को हिमांशु पैलैस कैलारस मे ग्राम भर्रा थाना चिन्नौनी के विशम्भर सिंह सिकरवार की लड़की की सगाई का कार्यक्रम था। उक्त कार्यक्रम मे विशम्भर सिंह सिकरवार की लडकी अनु सिकरवार द्वारा हर्ष फायर किया गया था। उक्त कृत्य प्रथम दृष्टया धारा 125 बीएनएस के तहत दंडनीय पाये जाने से अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना मे लिया गया है। उल्लेखनीय है कि अब लगातार शादी समारोह आयोजित होते रहेंगे और इस प्रकार के मामले सामने आते रहेंगे। तत्कालीन पुलिस अधीक्षकों द्वारा हर्ष फायरिंग की घटनाओं को रोकने के लिए प्रयास तो किए गए, पर वह कारगर साबित नहीं हुए। अब देखना है कि वर्तमान पुलिस अधीक्षक हर्ष फायरिंग की घटनाओं को कैसे रोक पाते हैं।

सम्मेलन | सम्मेलन की अध्यक्षता तहसील समिति के सदस्य फरीद खान ने की...

माकपा का तहसील सम्मेलन गणेश मरैया वाचनालय में संपन्न

सत्ता सुधार ■ सबलगढ़

मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी का तहसील समिति का सम्मेलन गणेश मरैया वाचनालय में संपन्न हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता तहसील समिति के सदस्य फरीद खान ने की। सम्मेलन में सबसे पहले ध्वजारोहण किया गया। तत्पश्चात सीताराम येचुरी राष्ट्रीय महासचिव माकपा, पोलिट ब्यूरो सदस्य पूर्व मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य सहित, स्थानीय दिवंगत नेताओं सुरेश चंद्र गुप्ता, एडवोकेट मुरारी लाल अग्रवाल, श्रीमती कुसुम धाकड़, रवीना बानो आदि की स्मृति में शोक प्रस्ताव प्रस्तुत करध्यारित किया गया। तत्पश्चात सम्मेलन का उद्घाटन जिला सचिव मंडल सदस्य गयाराम सिंह धाकड़ ने किया।

उन्होंने अपने उद्बोधन में पार्टी के संगठन को मजबूत बनाने ,सांप्रदायिक, तानाशाह, देश तोड़क ताकतों को पराजित करने तथा जनि हितेषी शक्तियों को एकजुट करने की अपील की। सम्मेलन में प्रतिवेदन भी प्रस्तुत किया गया। जो चर्चा के बाद सर्वसम्मति से पारित किया गया। सम्मेलन में तहसील स्तरीय कार्यकारी समिति का गठन किया गया, जिसमें तहसील सचिव अशोक राठौर चुने गए। सदस्य गण वरिष्ठ नेता मुरारी लाल धाकड़, इसराइल खान अरविंद सागर, कोक सिंह कुशवाह, अंगद जाटव आदि चुने गए। समापन राज्य सचिव मंडल सदस्य अशोक तिवारी ने किया। उन्होंने कहा कि हमारे पास सबलगढ़ में विरासत भी है, वर्तमान भी है, भविष्य हमको तैयार करना है। हमें उम्मीद है कि हम भविष्य के लिए जोरदार तैयारी करेंगे और स्वर्णिम भविष्य बनाएंगे। इसके साथ ही जोरदार नारेबाजी के साथ सम्मेलन का समापन गणेश मरैया वाचनालय में समापन हुआ।

सफेद तार का कटिया डालकर बिजली चोरी, विद्युत टीम ने भारी मात्रा में तार किया जप्त

सत्ता सुधार ■ मुरैना

शहर में विद्युत विभाग की टीम द्वारा सोमवार की सुबह शिकारपुर चैकी कब्रिस्तान के पास फाटक वाले इलाके में चेकिंग की गई और ट्रांसफार्मर पर भारी मात्रा में लोगों द्वारा बिजली चोरी करने के लिए डाले गए सफेद तार को जप्त कर लिया। प्रबंधक अशोक शर्मा, सहायक प्रबंधक पंकज सोनी, सहायक प्रबंधक सद्दाम हुसैन, पंकज दंडोतिया दीपू बंसल सहित सुरक्षा सैनिक एवं तकनीकी स्टाफ द्वारा सोमवार को मुरैना शहर जॉन के अंतर्गत शिकारपुर चैकी रोड, कब्रिस्तान के पास रेलवे फाटक वाले इलाके में 200 केवीए ट्रांसफार्मर से एवं 200 चेता की चक्की वाले ट्रांसफार्मर पर अवैध रूप से डायरेक्ट सफेद तार की कटिया डालकर चोरी से बिजली जला रहे थे। विद्युत टीम द्वारा सफेद तार भारी मात्रा में जप्त किया गया है। विद्युत अधिकारियों ने बताया कि उक्त अभियान निरंतर चलता रहेगा, अभी भविष्य में विद्युत विभाग की टीम द्वारा हीटर जपती अभियान की कार्रवाई की जाएगी।

ब्रीफ न्यूज

सिंगाजी थर्मल पावर परियोजना के अंदर साफ सफाई के लिए लाखों के टेंडर

खंडवा/मुंदी। संत सिंगाजी थर्मल पावर परियोजना मध्य प्रदेश पावर जनरेटिंग कंपनी का प्रदेश में सबसे बड़ा कोयले से बिजली बनाने का उत्क्रम है जिसके माध्यम से प्रदेश के साथ अन्य प्रदेशों को भी विद्युत सप्लाई की जाती है इतनी बड़ी परियोजना होने के बावजूद भी परियोजना के अंदर जहां देखो वहां पर जंगल झाड़ियां का माया जाल फैला हुआ है जिसके लिए मध्य प्रदेश पावर जनरेटिंग कंपनी के द्वारा लाखों रुपए के टेंडर देने के बावजूद भी ऐसी हालत क्यों ? संत श्री सिंगाजी विद्युत ताप परियोजना के अंदर इन दिनो पिछले काफी समय से पूरी परियोजना के अंदर जंगल झाड़ियां फैलती जा रही है परियोजना में जहां भी नजर डालो चारों तरफ सिर्फ जंगली पेड़ पौधे और झाड़ियां ही नजर आती है जिससे यहां पर काम करने वाले लोगों को भी दिक्कत होती है क्योंकि इन जंगल झाड़ियां में जंगली कीड़े और सांप बिच्छू आदि भी अपना डेरा जमाए हुए हैं जिसकी वजह से परियोजना में काम करने वाले श्रमिकों की भी जान पर बनी रहती है जबकि सिंगाजी ताप परियोजना प्रदेश सरकार और मध्य प्रदेश पावर जनरेटिंग कंपनी की एक महत्व कांक्षी परियोजना है और साफ सफाई के नाम पर यहां पर देखने में तो यही लगता है कि किसी का भी ध्यान नहीं है जिसकी वजह से परियोजना के अंदर जंगल झाड़ियां बड़े स्वरूप में नजर आती है। परियोजना के अंदर सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार किसी ठेकेदार को 20 लाख रुपए का तो किसी ठेकेदार को 35 लाख रुपए का टेंडर साफ सफाई के लिए दिया गया है लेकिन साफ सफाई सिर्फ और सिर्फ एडमिन बिल्डिंग और मुख्य गेट के आसपास ही दिखाई देती है और ठेकेदार भी अपने श्रमिकों के जरिए यहीं पर साफ सफाई करते हैं जबकि पूरे परियोजना में साफ सफाई के ठेके दिए गए हैं लेकिन मध्य प्रदेश पावर जनरेटिंग कंपनी के सिविल विभाग के अधिकारियों को इन सब कार्य देखने की शायद फुर्सत ही नहीं है क्योंकि सिविल विभाग के अधिकारियों के ही निगरानी में यह सब कार्य होते हैं लेकिन जिम्मेदार तो अपनी जिम्मेदारियां निभाने में असमर्थ देखे जा रहे हैं।

फरियादी ही निकला हत्या का आरोपी, पति ही निकला अपनी पत्नी का कातिल

खरगोन। मृतिका सजलीबाई के पति मड़िया अछाले निवासी जुनापानी हीरापुर ने थाना बिस्टान पर बताया कि, उसकी पत्नी कल रात्रि से घर नहीं आई है बच्चों से माँ के बारे मे पूछने पर बच्चों ने बताया उनकी माँ घर के पीछे गई हुई है । जिसपर पति रात मे सो गया अगले दिन सुबह भी पत्नी सजलीबाई के घर पर न आने पर घर के पीछे उसकी तलाश की गई जिसमे वेरसिंह के खेत मे मुझे मेरी पत्नि सजलीबाई की साड़ी पड़ी दिखी दी । थोडी दुर पर मेरी पत्नी का रूमाल और उससे थोडी दूरी पर मेरी पत्नि सजली पडी दिखाई दी, पास में जाकर हमने देखा तो मेरी पत्नि के चेहरे व सिर में चोट थी और खून निकला था, जिसकी मौत हो चुकी हो चुकी थी। । किसी अजात व्यक्ति ने मेरी पनि सजलीबाई के साथ जान से मारने की नियत से मारपीट कर उसको चेहरे एवं सिर, गले में किसी वस्तु से चोट पहुंचाकर उसकी हत्या की है ।

दो ट्रक डी.ए.पी. खाद रहस्यमय ढंग से गायब

सिराली, बारंगा 5 दिन बाद भी नहीं पहुंची खाद

सत्ता सुधार ■ हरदा

जिले के सिराली और बारंगा समिति के लिए 13 नवंबर को हरदा से भेजी गई डी.ए.पी. खाद के रहस्यमय ढंग से गायब हो गई है। भारतीय किसान संघ के पूर्व जिलाध्यक्ष रामनिवास खोरे का कहना है कि 5 दिन का समय व्यतीत हो गया अभी तक ट्रक से खाद नहीं पहुंचने से तरह-तरह के कयास लगाए जा रहे हैं। डी.ए.पी. खाद से लदे ट्रक को जमीन निकल गई या आसमान! जिम्मेदार अधिकारी अपने बचाव के लिए जवाब दे रहे हैं कि ट्रक का टायर पंचर हो गया है। एक-दो घंटे के सफर में पंचर टायर को बनाने में कितना समय लगता है। अधिकारी का यह जवाब लोगों को गले नहीं उतर रहा है।

किसान समिति प्रबंधक में तकरार की स्थिति -

13 नवंबर को 22 टन डी.ए.पी. खाद सिराली और बारंगी सोसायटी के लिए भेजा गया। इसमें व्यापारियों और सोसायटी को कितनी खाद देना है। इसका विवरण था । इसके अनुसार सोसायटी के समिति प्रबंधक ने तैयार कर ली और किसानों से पैसा ले लिया। अब किसान समिति प्रबंधक पर दवाब बना रहे हैं कि डी.ए.पी. खाद को लेकर तकरार की स्थिति बन गई है ।

मूकदर्शक बना प्रशासन

डी.ए.पी. खाद के रहस्यमय ढंग से गायब होने के मामले में प्रशासन मूक दर्शक बना हुआ है। गंभीरता से लेकर इस मामले में कोई कार्यवाही नहीं की जा रही है। कृषि विभाग के अधिकारी टायर पंचर होने की बात कह कर अपना बचाव कर रहे हैं। सिराली और बरंगा के लिए हरदा से डी.ए.पी. खाद से लदा ट्रक चला तो कहां चला गया । इसका अता-पता नहीं है। किस तरह से खाद की कालाबाजारी चल रही है। इसका जीवंत उदाहरण सामने आ गया है। खाद भेजने का शेड्यूल जारी होने से लोगों को मालूम हो गया है और सोसाइटी वालों ने वितरण की तैयारी कर ली किसानों से खाद के लिए पैसा भी ले लिया है।

खाद नहीं पहुंचने से किसानों को खाद नहीं मिलने पा रही है। जिसको लेकर किसानों में व्यापक आक्रोश व्याप्त है। बारंगा और सिराली की दूरी 30 से 40 किलोमीटर दूरी है। इस बीच कहां टायर पंचर हो गया इसका पता नहीं लगाया जा रहा है। दो ट्रक खाद कहां गई इसका पता नहीं लगाया जा रहा है ।

खाद गायब होने के मामले में अधिकारी की भूमिका संदिग्ध -

डी.ए.पी. खाद से लदे ट्रक के गायब होने के मामले में जिम्मेदार जवाबदेह अधिकारी की भूमिका संदिग्ध नजर आ रही है। यही वजह है कि 13 नवंबर को चले ट्रक के 17 नवंबर तक नहीं पहुंचने के बाद भी कोई कार्यवाही नहीं की जा रही है। ट्रक कहां गया इसका पता लगाने में कहीं रुचि नहीं दिखाई जा रही है। किसान इस संबंध में मांग कर रहे हैं फिर भी किस प्रकार की कोई कार्यवाही नहीं की जा रही है।

क्या कहते जवाबदार -

1. सिराली, बारंगा सहित अन्य समिति की खाद गायब होने की जांच पड़ताल कर कर दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही की जानी चाहिए, यह बेहद गंभीर मामला है। किसानों के हक हित से जुड़ा हुआ है।

अभिजीत शाह, विधायक, टिमरनी-सिराली क्षेत्र।

2. आपके द्वारा सिराली और बारंगा समिति के 22 - 22 टन डीएपी खाद के गायब होने का मामला प्रकाश में लाया गया है। शीघ्र ही इसकी जांच-पड़ताल कराकर दोषियों के खिलाफ कार्यवाही की जाएगी।

ए. के. डेहरिया, एसडीएम, खिरकिया ।

दबंगों की दबंगई...महिलाओं पर लाठी डंडों से की मारपीट

सत्ता सुधार ■ खरगोन

प्रदेश में महिलाए कितनी सुरक्षित है ये खरगोन जिले के करही थाना अंतर्गत ग्राम कारोंदीया खुर्द में हुए जमीन विवाद में महिलाओं से हुई मारपीट से समझा जा सकता है। मारपीट का वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है जिसमे तीन महिलाओं को सात से आठ दबंग लाठी डंडों से मारते नजर आ रहे हैं। बताया जा रहा है के वर्षो पुराने जमीन विवाद पर ये घटना हुई।

क्या था मामला...

कारोंदीया खुर्द में दो परिवारों में जमीन विवाद वर्षो से चल रहा था। जिस पर जमीन के आधिपत्य को ले कर गजेंद्र ठाकुर नमक व्यक्ति कुछ लोगो को ला कर दबंगई दिखाते हुए लाठी डंडे के जोर पर जमीन पर अधिकार जमाते हुए संगीता मेवाडे एवं उसके परिवार की अन्य महिलाओं से मारपीट करने लगा । मारपीट का वीडियो भी अब सामने आया है जिसमे बर्बरता से महिलाओं की पिटाई देखी जा सकती हैं। मारपीट के बाद महिलाएं करही थाने पहुंची और शिकायत दर्ज करवाई। महिलाओं के साथ हुई बर्बरता से पिटाई अब सोशल मीडिया पर महिला सुरक्षा पर सवाल उठा रही है। साथ ही ये सवाल भी उठ रहा है के क्या कानून व्यवस्था का लोगो में भय नहीं रहा है जो इस तरह से खुद लाठी डंडे उठा कर निर्णय करने लगे और ऐसे बर्बरता पूर्वक अपनी धोस जमा रहे हैं। इस पूरे मामले पर थाना प्रभारी से दूरभाष पर हुई चर्चा में उन्होंने बताया के मामला जमीन विवाद का था जो कुछ माह पूर्व जमीन का नामांतरण हो चुका था। बाद में गाय के विवादित भूमि में चले जाने से विवाद मारपीट तक पहुंच गया। दोनो पक्षों ने शिकायत दर्ज की है। घटना में घायल हुए लोगो का मेडिकल किया गया है जांच जारी है।

भावसिंगपुरा प्राथमिक शाला में बच्चों को दी कानूनी जानकारी

खंडवा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण खंडवा के अध्यक्ष/प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश ममता जैन के निर्देशानुसार एवं जिला विधिक सहायता अधिकारी अनुपमा मुजाल्दे के समन्वय से सोमवार 18 नवंबर 24को ग्राम भावसिंगपुरा के शासकीय प्राथमिक शाला में विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। पैरा लीगल वालंटियर नारायण फरकले ने जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की जानकारी देते हुए योजनाओं एवं बाल कल्याण समिति, चाईल्ड लाइन बाल श्रम, लैंगिक अपराधो से बालकों का संरक्षण अधिनियम,पाक्सो एक्ट गुड टच बेड आदि के संबंध में जानकारी देते हुए योजनाओं से संबंधित पंपलेट वितरण किए गए।इस अवसर पर प्रधान पाठक रिजवाना बेगम,रंगनुम कोशल अनिता भलराय सहित 48 विद्यार्थी उपस्थित थे।

प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए निःशुल्क कोचिंग का हुआ शुभारंभ

शाहगढ़(सागर)। नगर में निःशुल्क कोचिंग सेंटर का रविवार को भव्य शुभारंभ किया गया।निशुल्क कोचिंग क्लासेस नगर के सरस्वती शिशु मंदिर में संचालित होगी जिसका शुभारंभ संयुक्त संचालक सागर मनीष वर्मा के मुख्य आतिथ्य में किया गया। निशुल्क कोचिंग संस्थान में कक्षा नवमी से कक्षा 12 वी एवं प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे नीट, जी मेंस , बैंकिंग , रेलवे आदि की क्लासेस निःशुल्क संचालित होगी।एकनाथ अनुशिक्षण संस्थान के नेतृत्व में संचालित कोचिंग सेंटर में नगर के शासकीय अनुभवी शिक्षक अपनी सेवाएं निशुल्क देगे आपको बता दे नगर में विगत दो साल से कोचिंग को लेकर विवाद चल रहा था क्योंकि नगर कुछ शिक्षक पूर्व से ही निशुल्क कोचिंग बच्चों को दे रहे थे जिसका विरोध कुछ शासकीय शिक्षक जो कोचिंग को व्यापार का साधन बनाकर छात्रों से मोटी रकम लेकर निशुल्क कोचिंग चलाने वालों से विवाद कर रहे थे । निशुल्क कोचिंग से नगर एवं क्षेत्र के छात्रों एवं अभिभावकों की समस्या का समाधान हो गया है। मनीष वर्मा सयुक्त संचालक सागर विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर आर एन प्रजापति , तहसीलदार जी सी राय,सीएमओ विनय मिश्रा एवं अध्यक्षता कर रहे डॉ अभिषेक अग्निहोत्री ने छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए प्रतियोगी परीक्षाओं को लेकर अपने अनुभव बताए।

खरगोन पुलिस ने मुस्कान अभियान के तहत

2 नाबालिग बालिका व एक महिला को किया दस्तायाब

थाना मंडलेश्वर एवं करही पर नाबालिग बालिका को किया दस्तायाब

पुलिस के लगातार जारी प्रयासों से मिली बलिकाएँ , देश के विभिन्न राज्यों लाई गई वापस

बालिकाओ को सकुशल किया परिजनों के सुपुर्द, परिजनों ने पुलिस का आभार व्यक्त किया

सत्ता सुधार ■ खरगोन

मध्य प्रदेश शासन एवं पुलिस मुख्यालय भोपाल के द्वारा समस्त जिलों मे मुस्कान अभियान चलाया जा रहा है इस अभियान के अंतर्गत जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों से गुम हुए नाबालिक/बालिग बालक/बालिकाओ की अधिक से अधिक दस्तयाबी की जाने हेतु पुलिस टीम को निर्देशित किया गया है । प्राप्त निर्देशों के परिपालन मे पुलिस अधीक्षक खरगोन श्री धर्मराज मीना के निर्देशन व अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक खरगोन श्री मनोहर सिंह बारिया के मार्गदर्शन मे समस्त अनुभाग के अनुविभागीय अधिकारी (पुलिस) एवं समस्त थाना प्रभारीयों को त्वरित एवं प्रभावी कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया गया था । इसी तारतम्य में थाना मंडलेश्वर मे पुलिस टीम के द्वारा दिनांक 19.08.2024 को गुम हुई नाबालिक बालिका की सूचना पर थाना मंडलेश्वर पर अपराध क्रमांक 275/24 धारा 137(2) बीएनएस का पंजीबद्ध कर विवेचना मे लिया गया था । जिसमे पुलिस टीम के द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुए अपहर्ता को गुजरात राजकोट से सकुशल बालिका को दसत्याब कर परिजनों के सुपुर्द किया गया है । इसी प्रकार थाना मंडलेश्वर पर ही दर्ज गुम इंसान क्रमांक 67/2024 की गुमशुदा को भी जामनगर गुजरात से दसत्याब किया गया है । वही थाना करही पर दिनांक 09.11.24 को गुम हुई नाबालिक बालिका की सूचना पर थाना करही पर अपराध क्रमांक 350/24 धारा 137(2) बीएनएस का पंजीबद्ध कर विवेचना मे लिया गया था । जिसमे पुलिस टीम के द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुए अपहर्ता को सांवेर जिला इंदौर से सकुशल बालिका को दसत्याब कर परिजनों के सुपुर्द किया गया है । उक्त कार्यवाही में एसडीओपी मंडलेश्वर श्री मनोहर गवली व एसडीओपी बड़वाह श्रीमती अर्चना रावत के मार्गदर्शन थाना प्रभारी मंडलेश्वर उनि दीपक यादव के नेतृत्व मे सउनि मुकेश यादव, प्रआर कैलाश, आर अमित एवं थाना करही से थाना प्रभारी राजेंद्र बर्मन के नेतृत्व मे उपनिरीक्षक शकुंतला डोडवे, प्रआर हेमराज परिहार, आरक्षक सचिन चौहान, महिला आरक्षक मंजू महिला, आरक्षक चेतन चौहान, एसडीओपी कार्यालय से प्रआर संदीप चौहान, आर घनश्याम व सायबर सेल से आर अभिलाष का विशेष योगदान रहा ।

जिला स्तरीय स्विमिंग प्रतियोगिता जिले भर से आए खिलाड़ियों ने दिखाई अपनी प्रतिभा

सत्ता सुधार ■ खंडवा

नए स्विमिंग पूल में आयोजित जिला स्तरीय प्रतियोगिता में प्राची सोनी और राग दीक्षित ने तैराकी का शानदार प्रदर्शन करते हुए महापोर ट्राफी पर कब्जा किया, करोड़ों रुपए की लागत से बने प्रदेश के अव्वल अंतर्राष्ट्रीय मापदंड के स्तर के स्विमिंग पूल पर शुभारंभ के पश्चात पहली प्रतियोगिता का आयोजन उत्साह के साथ संपन्न हुआ, उल्लेखनीय है कि विगत दिनों प्रदेश के नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय के हाथों इस स्विमिंग पूल का शुभारंभ किया गया था, समाजसेवी सुनील जैन ने बताया की वेलफेयर सोसाइटी खण्डवा द्वारा जिला स्तरीय स्विमिंग महापौर ट्रॉफी प्रतियोगिता का आयोजन 17 नवम्बर रविवार को नगर पालिका निगम के सिविल लाइन स्थित नवनिर्मित स्विमिंग पूल में किया गया जिसका विधिवत शुभारंभ खंडवा पुलिस अधीक्षक मनोज राय द्वारा किया जाकर स्विमिंग प्रतियोगिता के खिलाड़ियों एवं आयोजकों से चर्चा कि, विशेष अतिथि के रूप में मुख्य अभियंता सिंगाजी का परियोजना शशिकांत मालवीय भी शामिल हुए और प्रतियोगिता के लिए आयोजकों को शुभकामना दी, प्रतियोगिता का समापन जिला कलेक्टर अनूप कुमार सिंह के हाथों संपन्न हुआ, डॉ अनुप कुमार सिंह ने कहा कि सुंदर स्विमिंग पूल का निर्माण खंडवा में हुआ है, ऐसे आयोजन के लिए मेरा सहयोग सदैव उपलब्ध रहेगा, आयोजन को और खिलाड़ियों को शुभकामनाएं, महापौर अमृता अमर यादव ने भी इस शानदार प्रतियोगिता पर अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की, शुभारंभ के पश्चात जिला स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, सभी खिलाड़ियों ने उत्साह के साथ भाग लिया आयोजित प्रतियोगिता के लिए आयोजकों को और खिलाड़ियों को शुभकामना प्रेषित करता हूं।

चुनाव प्रचार के दौरान सांसद पाटिल ने गोवा के मुख्यमंत्री सांवत से मुलाकात कर किया स्वागत

महाराष्ट्र की ब्रह्मपुर विधानसभा में मंत्री शाह ने ली आम सभा

सत्ता सुधार ■ खंडवा

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में महायुति गठबंधन को सफलता मिले इस हेतु प्रदेश संगठन के निर्देश पर महाराष्ट्र चुनाव में प्रदेश के मंत्रीगण सांसद विधायक एवं पार्टी के पदाधिकारी चुनाव प्रचार के लिए महाराष्ट्र पहुंचे हैं प्रवक्ता सुनील जैन ने बताया कि महाराष्ट्र चुनाव में खंडवा जिले से भी मंत्री कुंवर विजय शाह, सांसद ज्ञानेश्वर पाटिल सहित पार्टी के पदाधिकारी चुनाव प्रचार के लिए महाराष्ट्र पहुंचे हैं, मंत्री विजय शाह द्वारा लगातार पार्टी प्रत्याशी के समर्थन में चुनाव प्रचार के साथ आमसभा भी ली जा रही हें, रविवार को ब्रह्मपुर में पार्टी के प्रत्याशी के लिए आम सभा में श्री शाह ने पार्टी प्रत्याशी को जीताने के साथ विकास करने वाली महायुति गठबंधन को सहयोग देने का अनुरोध किया, महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के निमित्त कैबिनेट मंत्री विश्वास सारंग एवं सांसद ज्ञानेश्वर पाटिल को अकोला एवं अन्य जिले की

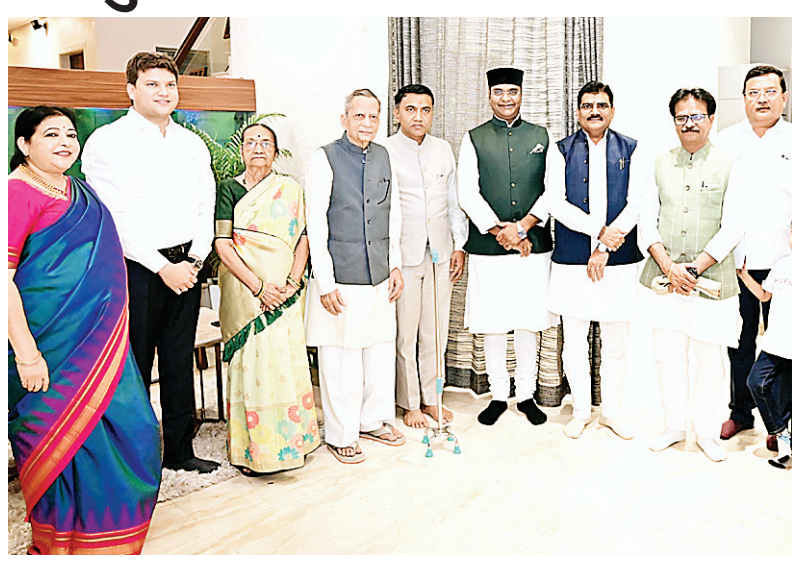

15 विधानसभा सीटों की जवाबदारी प्रचार हेतु सौपी गई हें, प्रवक्ता सुनील जैन ने बताया कि रविवार को अकोला प्रवास के दौरान विधान परिषद सदस्य वसंत खंडेलवाल के निवास पर गोवा के लोकप्रिय मुख्यमंत्री डॉ. प्रमोद सावंत जी से सौजन्य भेंट करते हुए मंत्री श्री सारंग एवं सांसद ज्ञानेश्वर पाटिल ने उनका स्वागत अभिनंदन किया।

चाकू लहराकर उत्पात मचाने वाले बदमाशों का जुलूस निकाला, दुकानदारों से हाथ जोड़कर माफी मांगी

उज्जैन। उज्जैन जिले के आगर रोड पर स्थित दाल मिल चौराहा पर चाकू लहराकर उत्पात मचाने वाले तीन बदमाशों को गिरफ्तार करने के बाद पुलिस ने उनका उसी क्षेत्र में जुलूस निकाला, जहां उन्होंने दहशत फैलाई थी। पुलिस से बचने के चक्कर में तीनों ने अपने हाथ और पैर भी तुड़वा लिए। इसके बावजूद, पुलिस ने दुकानदारों के बीच से उनका खौफ खत्म करने के लिए उन्हें मौके पर ले जाकर जुलूस निकाला। इस दौरान बदमाशों ने दुकानदारों से हाथ जोड़कर माफी भी मांगी। दरअसल, आगर रोड स्थित दाल मिल चौराहे पर बीते गुरुवार रात चार बदमाशों ने जमकर उत्पात मचाते हुए पानी-पतासी, फल, और जूस की दुकानों पर पथराव किया था। इस दौरान दुकान मालिक से रंगदारी वसूलने के लिए चाकू दिखाकर धमकाया भी था।

कार्रवाई अनुविभागीय अधिकारी पुलिस व समस्त थाना प्रभारियों को प्रभावी कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया गया

खरगोन पुलिस ने अवैध गांजे की तस्करी करते आरोपी को किया गिरफ्तार

सत्ता सुधार ■ खरगोन

पुलिस महानिरीक्षक इंदौर जोन इन्दौर (ग्रामीण) श्री अनुराग एवं पुलिस उप महानिरीक्षक निमाड रेंज खरगोन श्री सिद्धार्थ बहुगुणा के द्वारा अवैध मादक पदार्थ तस्करी करने वालों के विरुध्द लगातार कार्यवाही कर अंकुश लगाने हेतु निर्देशित किया गया था । उक्त निर्देशों के परिपालन में पुलिस अधीक्षक खरगोन श्री धर्मराज मीना व अति.पुलिस अधीक्षक श्री मनोहरसिंह बारीया के द्वारा ऑपरेशन प्रहार÷ के तहत जिला खरगोन के समस्त अनुविभागीय अधिकारी पुलिस व समस्त थाना प्रभारियों को प्रभावी कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया गया । इसी तारतम्य में अवैध मादक पदार्थ तस्करी की सूचना प्राप्त होने पर थाना भगवानपुरा पर अवैध

मादक पदार्थ (गांजा) देने जा रहे आरोपीयो के विरुद्ध कार्यवाही की गई है । दिनांक 16.11.24 को थाना भगवानपुरा पर मुखबीर से सुचना प्राप्त हुई कि, 01 व्यक्ति गोपालपुरा सस्तिया फाल्या पीपलझोपा रोड़ के पास अवैध रूप से गाँजा बेचने के फिराक घूम रहा है । मुखबीर सुचना पर तत्काल कार्यवाही करते हुये अनुविभागिय अधिकारी (पुलिस) अनुभाग भीकनगांव श्री राकेश आर्य के मार्गदर्शन व थाना प्रभारी भगवानपुरा श्री कैलाश चौहान के नेतृत्व मे पुलिस टीम का गठन किया गया व मुखबिर की सूचना से अवगत करवा कर बताए स्थान पर रवाना किया गया ।

पुलिस टीम के द्वारा मौके पर रवाना होकर मुखबिर के बताए हुलिये के व्यक्ति की तलाश की गई जिसमे एक हाथ मे थैली लिए घूमता मिल जो पुलिस टीम को देख कर भागने का प्रयास करने लगा जिसे घेराबंदी कर पुलिस टीम ने पकड़ा व उसका नाम पता पूछने पर उसने अपना नाम वेलसिंग सस्तिया फाल्या ग्राम गोपालपुरा का होना बताया । वेलसिंग के पास मिली थैली को चेक करने पर उसमे पुलिस टीम को अवैध मादक पदार्थ गांजा मिला मिला । पुलिस टीम के द्वारा से आरोपियों से गाँजा रखने के संबंध मे वैध दस्तावेज व लाईसेंस के होने का पूछने पर उसने कोई दस्तावेज नहीं होना बताया । पुलिस टीम के द्वारा मौके पर से आरोपी वेलसिंग के कब्जे से कुल 06 किलो 760 ग्राम गांजा कीमत लगभग 67,600/-रुपये को नियमानुसार विधिवत जप्त किया गया व आरोपी वेलसिंग के विरुद्ध थाना भगवानपुरा पर अपराध क्रमांक 378/2024 धारा 8/20 एन.डी.पी.एस. एक्ट का पंजीबध्द कर विवेचना में लिया गया । आरोपी वेलसिंग से इतनी भारी मात्रा मे गाँजा लाने के संबंध मे बारीकी से पूछताछ करने पर वेलसिंग ने पुलिस को बताया कि उसने अपने खेत मे मिर्ची की फसल के बीच गाँजा लगाया हुआ था और कुछ गाँजा अभी भी खेत मे रखा हुआ है ।

आयरन लेडी इंदिरा गांधी के जन्मदिवस पर कांग्रेसजन आज करेंगे श्रद्धासुमन अर्पित

खंडवा। मंगलवार को पूर्व प्रधानमंत्री एवं आयरन लेडी के नाम से मशहूर श्रीमती इंदिरा गांधीजी का जन्मदिवस मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के द्वारा मनाया जाएगा। शहर कांग्रेस अध्यक्ष डॉ मुनीश मिश्रा ने बताया कि इसी तारतम्य में खंडवा में भी इंदिरा गांधी जी का जन्मदिवस मनाया जाएगा। श्री मिश्रा ने कांग्रेसी साथियों से निवेदन किया कि आज सुबह ठीक 10:00 बजे गांधी भवन खंडवा में शहर एवं जिला कांग्रेस के कार्यकारिणी सदस्य, खंडवा शहर और ग्रामीण के समस्त ब्लॉक कांग्रेस के सदस्य एवं अध्यक्ष, पूर्व विधायक, पूर्व प्रताशियो, नगर पालिका निगम के वर्तमान एवं पूर्व पार्षद तथा सभी कांग्रेसजन इंदिराजी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करने अनिवार्य रूप से पधारे । विजयपुर एवं बुधनी में हुए उपचुनाव में भाजपा द्वारा लोकतंत्र की हत्या के विरोध में अंबेडकर जी प्रतिमा के सामने धरना प्रदर्शन कर दिया जाएगा ज्ञापन दिनांक 13 नवंबर, 2024 को मध्यप्रदेश के दो विधानसभा क्षेत्रों विजयपुर एवं बुधनी में सम्पन्न हुए उप चुनाव में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी द्वारा लोकतंत्र की हत्या करने का जघन्य अपराध किया है। विजयपुर विधानसभा क्षेत्र में आम मतदाताओं को वोट डालने से वंचित कर उनमें भय का वातावरण निर्मित किया है, भारतीय जनता पार्टी के असामाजिक तत्वों द्वारा संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी की मूर्ति को क्षतिग्रस्त किया है ।

ब्रीफ न्यूज

21 नवंबर को नगर में पेयजल सप्लाई बंद रहेगी

बीना/सागर। नगर पालिका परिषद सीएमओ राम प्रकाश जगनेरिया ने एक मुलाकात के दौरान बताया कि फिल्टर प्लांट जल शोधन संयंत्र पर फिल्टर प्लांट के क्लेरिफार एवं फिल्टर वेडो की साफ सफाई का कार्य दिनांक 21 नवंबर को किया जाना है।जिसकी चलते नगर की जल सप्लाई 21 नवंबर दिन गुरुवार को नगर की जल सप्लाई बंद रहेगी नागरिकों को होने वाली असुविधा के लिए नगर पालिका को खेद है।

बीना में पुलिस ने की कांबिंग गश्त,पुलिस ने आरोपियों को किया गिरफ्तार

बीना/सागर। बीना में कांबिंग गश्त कर स्थायी वारंट, गिरफ्तार वारंट, जमानती वारंट एवं समंस तामील कराए गए और अन्य प्रभावी कार्यवाहियां भी की गई। शहरों में अपराध कम करने के लिए पुलिस की लगातार कार्रवाई चल रही है। इसी के चलते बीना में बदमाशों की धरपकड़ के लिए पुलिस बल के साथ कांबिंग गश्त कराई गई।बीना में पुलिस ने 23 अपराधियों को पकड़ा इस अभियान के दौरान इनामी एवं फरारी अपराधियों की भी धरपकड़ की गई एवं हिस्ट्रीशीटर बदमाश, सूचीबद्ध गुंडे, जिला बदर हुए बदमाश, पूर्व सजायाब लोगों को चेक किया गया। एसपी विकाश सहवाल के निर्देशन में बीना एसडीओपी नितेश पटेल के नेतृत्व में थाना प्रभारी अनूप यादव की ओर से रात 12 बजे से सुबह 6 बजे तक थाना क्षेत्र में कांबिंग गश्त की गई। जिसमें 18 स्थायी वारंटी और 5 गिरफ्तारी वारंटी गिरफ्तार किए गए हैं।

सागर में पलटी स्लीपर बस, 12 यात्री घायल

सागर। सागर में छानबीला थाना क्षेत्र के ग्राम सासन के पास रविवार देर रात छतरपुर से इंदौर जा रही स्लीपर बस पलट गई। दुर्घटना में बस में सवार 12 यात्री घायल हुए हैं। 4 यात्रियों को गंभीर चोट आई है। घटना की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया। जानकारी के अनुसार, खुशबू ट्रैवल्स की स्लीपर बस रविवार रात छतरपुर से सवारियां लेकर सागर होते हुए इंदौर जा रही थी। तभी छतरपुर मार्ग पर ग्राम सासन के पास अचानक सड़क पर बस के सामने गाय आ गई।

सिद्ध बाबा कबड्डी क्लब गाडरवारा ने फाइनल मैच में जीत दर्ज की

तीन दिवसीय ओपन कबड्डी प्रतियोगिता का हुआ समापन

सत्ता सुधार ■ देवरी/सागर

मां तुझे प्रणाम कबड्डी क्लब के तत्वाधान में आयोजित ओपन कबड्डी प्रतियोगिता 2024 का समापन 17 नवंबर को हुआ। कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 15 नवंबर से 17 नवंबर तक किया गया था, तीन दिवसीय चलने वाली ओपन कबड्डी प्रतियोगिता में मध्य प्रदेश की कई टीमों ने हिस्सा लिया, कबड्डी प्रतियोगिता के अंतिम दिवस दूसरे राउंड के मैच में सिद्ध बाबा कबड्डी क्लब गाडरवारा और सहयोग क्रीड़ा मंडल कबड्डी क्लब गोटेगांव के बीच मुकाबला हुआ जिसमें सिद्ध बाबा कबड्डी क्लब गाडरवारा 7 अंको से विजई हुई, दूसरा मैच ढ्यष्ट पिपरिया और दमोह क्रके बीच मुकाबला हुआ जिसमें IKC पिपरिया ने 13 अंकों से विजई हुई, तीसरा मैच CMC (B) सागर और मां तुझे प्रणाम कबड्डी क्लब जूनियर देवरी के बीच हुआ जिसमें मां तुझे प्रणाम कबड्डी क्लब जूनियर देवरी ने 4 अंको से विजई हुई इसके बाद तीसरे राउंड में मेरे गांव और सिद्ध बाबा कबड्डी क्लब गाडरवारा के बीच मुकाबला हुआ जिसमें सिद्ध बाबा कबड्डी क्लब गाडरवारा ने 6 अंको से जीत हासिल की दूसरा मुकाबला मां तुझे प्रणाम A और जिला सागर के बीच हुआ जिसमें जिला सागर ने 1 अंक से जीत हासिल की तीसरा मैच मां तुझे प्रणाम जूनियर ओर ढ्यष्ट पिपरिया के बीच हुआ जिसमें ढ्यष्ट पिपरिया ने 11 अंको से जीत हासिल की इसके बाद सेमीफाइनल मुकाबला सिद्ध बाबा कबड्डी क्लब गाडरवारा और जिला सागर के बीच हुआ जिसमें सिद्ध बाबा कबड्डी क्लब गाडरवारा ने 9 अंकों से जीत हासिल कर फाइनल में प्रवेश किया।टूर्नामेंट का फाइनल मुकाबला सिद्ध बाबा कबड्डी क्लब गाडरवारा और ढ्यष्ट पिपरिया के बीच हुआ जिसमें सिद्ध बाबा कबड्डी क्लब गाडरवारा ने 28 अंको से फाइनल मुकाबले में जीत हासिल की आयोजक समिति द्वारा विजेता टीम को 11000 रुपए और उपविजेता को 5100 रुपए का नगद पुरस्कार और शील्ड प्रदान की गई।ओपन कबड्डी प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि देवरी नगर पालिका अध्यक्ष नेहा अलकेश जैन, एड. जगदीश सोनी, चौधरी राजेश मोहन रहे और विशिष्ट अतिथि पार्षद त्रिवेंद्र जाट, राकेश चौरसिया, संजय वर्मा, नर्मदा वाल्मीकि, अभिषेक गुप्ता,दीपक चौरसिया, नितिन ठाकुर, राकेश यादव, सतीश सेन, भरत ठाकुर, अरविंद प्रभाकर रहे।

एकनाथ अनुशिक्षण संस्थान के नेतृत्व में संचालित होगी निःशुल्क कोचिंग

प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए निःशुल्क कोचिंग का हुआ शुभारंभ

सत्ता सुधार ■ शाहगढ़/सागर

नगर में निःशुल्क कोचिंग सेंटर का रविवार को भव्य शुभारंभ किया गया।निशुल्क कोचिंग क्लासेस नगर के सरस्वती शिशु मंदिर में संचालित होगी जिसका शुभारंभ संयुक्त संचालक सागर मनीष वर्मा के मुख्य आतिथ्य में किया गया। निशुल्क कोचिंग संस्थान में कक्षा नवमी से कक्षा 12 वी एवं प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे नीट,जी मेंस,बैंकिंग,रेलवे आदि की क्लासेस निःशुल्क संचालित होगी।एकनाथ अनुशिक्षण संस्थान के नेतृत्व में संचालित कोचिंग सेंटर में नगर के शासकीय अनुभवी शिक्षक अपनी सेवाएं निशुल्क देगे आपको बता दे नगर में विगत दो साल से कोचिंग को लेकर विवाद चल रहा था क्योंकि नगर कुछ शिक्षक पूर्व से ही निशुल्क कोचिंग बच्चों को दे रहे थे जिसका विरोध कुछ शासकीय शिक्षक जो कोचिंग को व्यापार का साधन बनाकर छात्रों से मोटी रकम लेकर निशुल्क कोचिंग चलाने वालों से विवाद कर रहे थे उस विवाद को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की एकनाथ अनुशिक्षण संस्था ने समाप्त कर दिया , निशुल्क कोचिंग से नगर एवं क्षेत्र के छात्रों एवं अभिभावकों की समस्या का समाधान हो गया है।

निशुल्क कोचिंग संस्थान के शुभारंभ में मुख्य अतिथि मनीष वर्मा सयुक्त संचालक सागर,विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर आर एन प्रजापति , तहसीलदार जी सी राय,सीएमओ विनय मिश्रा एवं अध्यक्षता कर रहे डॉ अभिषेक अग्निहोत्री ने छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए प्रतियोगी परीक्षाओं को लेकर अपने अनुभव बताए कार्यक्रम में एक्सीलेंस स्कूल के प्राचार्य रविन्द्र तिवारी , बीएसी शिक्षक भरत यादव , निशुल्क कोचिंग संस्थान में अपनी सेवाएं देने वाले शिक्षक कामता प्यासी ,संदीप जैन,निशांत रेजा,अमित असाटी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नगर प्रमुख वासु तिवारी,सुशील जैन , नगरपरिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि बाबूलाल खटीक सहित जनप्रतिनिधि गणमान्य नागरिक छात्र छात्राएं अभिभावक शामिल हुए।कार्यक्रम का मंच संचालन बन्दना पटेरिया द्वारा किया गया।

निगम आयुक्त ने नवाचार कर स्वच्छता सजगता दलों का गठन किया

सत्ता सुधार ■ सागर

सागर की स्वच्छता व्यवस्था को सतप्रतिशत प्रभावी बनाने और शहर को गर्बेज मुक्त शहर बनाने के उद्देश्य से नगर निगम आयुक्त सह कार्यकारी निदेशक सागर स्मार्ट सिटी लिमिटेड राजकुमार खत्री नित नये नवाचार कर रहे हैं। शहर का प्रत्येक कोना साफ-स्वच्छ और सुंदर बने इसके लिए निगमायुक्त ने स्वच्छता सजगता दलों का गठन किया है। स्वच्छता सजगता दल के सदस्य शहर की तीन शिफ्ट में विशेष फोकस के साथ निगरानी व मॉनिटरिंग सहित स्वच्छता में लापरवाही बरतने वालों पर चालानी कार्यवाही करेंगे। निगमायुक्त श्री खत्री ने कहा की स्वच्छता सजगता दल के अलग-अलग सदस्य सुबह 6 बजे से 10 बजे तक, 10 बजे से शाम 6 बजे तक और शाम 6 बजे से रात्रि 10 बजे तक शहर में सक्रीय रहकर स्वच्छता व्यवस्था को प्रभावी बनाने का कार्य करेंगे। उन्होंने कहा की सुबह 6-10 बजे के समय शहर की सभी चाय-नास्ता दुकानों के साथ ही सब्जी-फल बाजार आदि अन्य स्थल जहाँ कचरा उत्पादन की संभावना हो वहाँ स्वच्छता सजगता दल सक्रीय रहकर स्वच्छता सुनिश्चित करेंगे। 10 बजे से शाम 6 बजे तक मार्केट क्षेत्र दुकानों आदि की निगरानी करते हुये सजगता दल कार्य करेगा और शाम 6 बजे से रात्रि 10 बजे तक दुकानों के बंद होने वाले समय पर भी बाजार क्षेत्र में स्वच्छता सजगता दल सक्रीय रहकर स्वच्छता सुनिश्चित करेंगे। शहर में किसी भी दुकानदार या व्यक्ति द्वारा सड़क पर, नाली में, सार्वजनिक स्थल या शहर में कहीं भी खुले में सूखा-गीला या अन्य किसी भी प्रकार का कचरा डाले जाने पर सख्त कार्यवाही की जायेगी। उन्होंने आईसीसीसी में स्थापित स्वच्छता कंट्रोल रूम सहित दीनदयाल चौक से चैतन्य हॉस्पिटल मार्ग और संजय ड्राइव सड़क, ट्रैफिक पार्क के आस-पास स्वछता कार्यो का निरीक्षण किया और कहा की रोड किनारे से मलवा आदि सीएन्डडी वेस्ट हटवायें और डिवाइडर के पास जमा धूल को साफ करायें। शहर के नालों की सफाई हेतु एक अलग डेडिकेटेड टीम बनायें और सतत सफाई सुनिश्चित करें।

ट्रैफिक पार्क संजय ड्राइव रोड के पास साँची पार्लर से अमानक डिस्पोजल सामग्री जब्त

नगर निगम आयुक्त राजकुमार खत्री ने सुबह-सुबह निरीक्षण के दौरान ट्रैफिक पार्क के पास साँची पार्लर से पानी पाउच और अमानक डिस्पोजल ग्लास जब्त कराने के निर्देश दिये। निर्देशानुसार उक्त साँची पार्लर संचालक से 4 बोरी पानी पाउच, डिस्पोजल ग्लास जब्त करने की कार्यवाही की गई।

यात्रा के दौरान परेशान बच्चे दिखाई दें, तत्काल 139 पर एवं टी. सी को सूचना देकर बच्चों को सुरक्षित कर सकते हैं: मीणा

मानव दुर्व्यपार के प्रति रोकथाम हेतु नुक्कड़ नाटक का कार्यक्रम

सत्ता सुधार ■ बीना/सागर

बीना आवाज मध्य प्रदेश द्वारा बीना विकासखंड महावीर चौक, कटरा मंदिर एवं बीना रेलवे जंक्शन पर बाल संरक्षण सप्ताह के अंतर्गत नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जन जागरूकता करने हेतु आयोजन किया गया जिसमें राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों द्वारा मनोरंजन आत्मक रूप से नाटक के माध्यम से सुरक्षात्मक उपाय एवं सुरक्षात्मक नंबरों की जानकारी दी, आवाज की जिला समन्वयक मालती पटेल द्वारा सप्ताह के आयोजन के उद्देश्य के बारे में बताया गया एवं बच्चों के प्रति बढ़ते अपराध में हमारे समाज की भूमिका पर भी चर्चा की गई, किसी अवसर पर आरपीएफ थाना प्रभारी कमल सिंह मीणा द्वारा यात्रा के दौरान यदि इस तरह के बच्चे दिखाई दें तो वह तत्काल 139 पर सूचना दें एवं ट्रेन में उपस्थित ञ्जष्ट को सूचना देकर बच्चों को सुरक्षित कर सकते हैं, जीआरपी द्वारा आने जाने वाली ट्रेनों में रैली के माध्यम से लोगों को जागरूक किया आवाज के संयुक्त तत्वाधान में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक प्रियंका सेन खुशबू प्रतिभा नेहा अभिषेक बंसल आकाश चौबे मनीष प्रदीप प्रशांत कुर्मी आवाज की टीम सदस्य वर्षा अहिरवार कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

अज्ञानता कब दूर होती है जब वास्तविक सत्संगी जीवन में आता है: दिव्या ज्योति संस्थान

सत्ता सुधार ■ बीना/सागर

दिव्य ज्योति जागृती संस्थान शाखा भोपाल द्वारा पांच दिवसीय संगीतमय श्री हरि कथा का आयोजन पुष्प विहार कॉलोनी में आयोजित किया गया । कथा की दूसरे दिन शुमधुर भजन और कीर्तन से किया गया जिसमें साध्वी वीरभद्रा भारती, साध्वी कादंबरी भारतीय, गुरु बहन शिवानी द्वारा सुमधुर भजनों का गायन किया गया ।कथा प्रसंग को सुनते हुए चित्रा भारती ने तुलसीदास जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए किस प्रकार उन्होंने प्रभु श्री राम की भक्ति से समाज को अवगत कराया, विचारों में उन्होंने बताया जीव माया में फंस कर भक्ति के वास्तविक अर्थ को समझ नहीं पता इसका कारण अज्ञानता है और अज्ञानता कब दूर होती है जब वास्तविक सत्संगी जीवन में आता है।कथा में बीना नगर पालिका अध्यक्ष लता सकवार,सुनीता राय पूर्व पार्षद वीर सावरकर वार्ड, पहलाद यादव, नवीन साहू द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई।

प्रदर्शन इंदौर में बीना के समरप्रताप स्वर्णपदक एवं मेघल राय कांस्य पदक विजेता, राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए हुआ चयन

68वीं राज्यस्तरीय शालेय क्रीड़ा कराते प्रतियोगिता

सत्ता सुधार ■ बीना/सागर

इंदौर में आयोजित 68 वीं राज्यस्तरीय शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता दिनाँक 14 नवंबर से 16 नवंबर तक बाल विनय मंदिर स्कूल में सम्पन्न हुई । इस प्रतियोगिता में बीना शहर के समरप्रताप सिंह राजपूत ने 14 वर्षीय आयुवर्ग में -45 किलोग्राम में स्वर्ण पदक, मेघल राय ने 19 वर्षीय बालिका आयुवर्ग में 56 किलोग्राम वजनवर्ग में कांस्य पदक जीता।काव्या अहिरवार ने अपनी उत्कृष्ट कला का प्रदर्शन किया। यह प्रतियोगिता स्कूल शिक्षा विभाग, इंदौर द्वारा आयोजित की गई थी।इस प्रतियोगिता में सागर संभाग की ओर से बीना नगर के 3 खिलाड़ी शामिल हुए। यह खिलाड़ी निर्मल ज्योति कॉन्वेंट स्कूल बीना में अध्ययनरत हैं । इस प्रतियोगिता में सागर संभाग को सिर्फ 2 पदक ही प्राप्त हुए।समरप्रताप सिंह राजपूत का चयन आगामी राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए किया गया है।खिलाड़ियों की इस उपलब्धि पर प्रिंसिपल सिस्टर थैरेस,वाइस प्रिंसिपल सिस्टर फ्लॉवरेट,शिक्षक गौतम सर,घनश्याम सर,दिनेश आदि समस्त टीचरों एवं अमेचर कराते डेवलोपमेंट एसोसिएशन के सचिव सेंसाई संदीप अग्रवाल,अध्यक्ष पदम सिंह रावत,अंतिम जैन,सुनील रायजी, प्राचार्य दीपचंद चौधरी,पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष नीतू रायजी,सुजीतक्लॉडियस,देवेंद्र साहनी और शिक्षक धर्मेंद्र कुमारजी सहित बीना नगर के गणमान्य लोगो ने खिलाड़ियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। खिलाड़ियों की इस सफलता से शहर में गर्व और उत्साह का माहौल है।

विधि महाविद्यालय में बिरसा मुंडा जयंती पर श्रद्धा सुमन

बीना/सागर। शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बीना एवं शासकीय विधि महाविद्यालय बीना में 15 नवंबर को बिरसा मुंडा जयंती के अवसर जो कि राष्ट्रीय जनजाति ग़ौरव दिवस के रूप में मनाया जाता है एक विशेष समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में महाविद्यालय की प्राचार्य डा रेखा बरेठिया एवं अतिथियों द्वारा महान स्वतंत्रता सेनानी और आदिवासी जननायक भगवान बिरसा मुंडा के चित्र पर माल्यार्पण किया गया तथा उसके उपरांत जमुई बिहार में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मुख्य आतिथ्य में आयोजित कार्यक्रम का सीधा प्रसारण महाविद्यालय में स्क्रीन पर दिखाया गया जिसमें विद्यार्थियों सहित स्टाफ की सहभागिता रही। स्थानीय प्रशासन जिस तरह से राज्य शासन की आदेशों का खुला उल्लंघन कर रहे हैं यह बहुत ही चिंतनीय विषय है।

ब्रीफ न्यूज

पुजारा अब बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी के लिए कमेंट्री टीम में शामिल

मुम्बई। बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा कमेंटेटर अब ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच होने वाली बॉर्डर-गावस्कर ट्राफी में कमेंट्री करते नजर आयेंगे। इस टूर्नामेंट के लिए घोषित हिंदी कमेंट्री टीम में पुजारा को जगह मिली है। यह पहला अवसर होगा जब पुजारा कमेंट्री बॉक्स में दिखेंगे। इससे पहले विकेटकीपर बल्लेबाज दिनेश कार्तिक ने भी पुजारा की तरह ही संन्यास लेने के पहले ही कमेंट्री शुरू कर दी थी। टेस्ट में बल्लेबाज के तौर पर पुजारा का ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ काफी अच्छा रिकॉर्ड रहा है। उन्होंने अपने करियर में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 25 टेस्ट खेले हैं। इसमें 49 की औसत से 2074 रन बनाये है। इसमें 5 शतक और 11 अर्धशतक शामिल है। ऑस्ट्रेलिया में पुजारा ने 11 टेस्ट खेले हैं। इसमें 47 की औसत से उन्होंने 993 रन बनाए हैं। पुजारा ने ऑस्ट्रेलिया में सबसे बड़ी पारी 193 रनों की खेली है।

सूर्या, तिलक और सैमसन ने वीडियो भेजकर रोहित को बधाई दी

मुम्बई। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा को दूसरी बार पापा बनने पर साथी क्रिकेटरों से लगातार बधाइयां मिल रही हैं। टी20 टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव, तिलक वर्मा और संजू सैमसन ने भी रोहित को दक्षिण अफ्रीका से एक वीडियो भेजकर बेटे के जन्म पर बधाई दी है। रोहित 15 नवंबर को दूसरी बार पापा बने हैं। उनकी पत्नी रितिका सजदेह ने बेटे को जन्म दिया है। दंपत्ति की पहले से ही छह साल की एक बेटी इस समायरा है। सूर्या, तिलक और सैमसन का जो वीडियो सामने आया है जिसमें सूर्या और सैमसन जब तिलक से पूछते हैं कि रोहित भाई को एक बेटा हुआ है तो उसके लिए आप दोनों क्या संदेश देना चाहेंगे। इसपर तिलक कहते हैं कि मैं वास्तव में बहुत खुश हूं रोहित भाई। इस पल का बेसब्री से इंतजार था। अगर एक या दो दिन और लेट हो जाता तो मैं वहां पर पहुंच जाता। इसके बाद तीनों खिलाड़ी जोर जोर से हंसने लगते है।. इसके बाद तिलक कहते हैं की आ रहा हूं बहुत जल्दी बेबी को देखने के लिए बहुत बहुत उत्साहित हूं। वहीं संजू कहते हैं कि वो भी रोहित और उनके परिवार के लिए बहुत खुश हैं। फिर सूर्या कहते हैं कि हमलोग को भी छोटे छोटे गार्ड और पैड लेकर जाना होगा क्योंकि एक और नया क्रिकेटर जो आया है।

विराट की जगह नंबर तीन के लिए बेहतर विकल्प बनकर उभरे हैं तिलक

मुम्बई। युवा बल्लेबाज तिलक वर्मा ने जिस प्रकार से दक्षिण अफ्रीका में हुई टी20 सीरीज में नंबर तीन पर उतरते हुए शानदार बल्लेबाज की है। उससे वह आने वाले समय में नंबर तीन पर उतरने के लिए विराट कोहली के सबसे अधिक विकल्प बनकर उभरे हैं। दक्षिण अफ्रीका सीरीज में तिलक ने दिखाया है कि वह लंबी परियां खेलने के साथ ही एक मैच विजेता खिलाड़ी हैं। नंबर-3 पर बल्लेबाजी करते हुए उन्होंने लगातार दो मैचों में दो शतक लगाये। तिलक ने सबसे पहले घरेलू किकेट और आईपीएल में चमक बिखेरी थी।

बुडापेस्ट में यूईएफए नेशंस लीग फुटबॉल में खेलती हई इजरायल और बेल्जियम की टीमें।

भारतीय टीम को हराने का है अच्छा अवसर : ब्रैंडन जूलियन

एजेंसी ■ मेलबोर्न

पूर्व ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर ब्रैंडन जूलियन ने कहा है कि इस बार मेजबान टीम के पास बॉर्डर गावस्कार सीरीज में भारतीय टीम को हराने का अच्छा अवसर है। जूलियन के अनुसार भारतीय टीम के प्रमुख बल्लेबाज कप्तान रोहित शर्मा और विराट कोहली पिछले काफी समय से फार्म में नहीं हैं। इसके अलावा मध्यक्रम भी कमजोर है। जिसका लाभ हमारी टीम दबाव बनाकर उठा सकती है। न्यूजीलैंड के खिलाफ सीरीज खराब प्रदर्शन से भी भारतीय टीम पर मनोवैज्ञानिक दबाव रहेगा। कोच गौतम गंभीर बाहर हालांकि अपने खिलाड़ियों का बचाव करते हुए उन्हें पिछली सीरीज से उबरकर बेहतर प्रदर्शन को प्रेरित करने का प्रयास करेंगे पर ये उनके लिए आसान नहीं रहेगा। मुझे लगता है कि ऑस्ट्रेलियाई टीम उन्हें पर्थ में हरा देगी। हमने उनके खिलाफ पिचली चार सीरीज में से कोई भी सीरीज नहीं जीती है इसलिए इस बार हम हिसाब बराकर कर सकते हैं। जूलियन ने साथ ही कहा कि भारतीय टीम बल्लेबाजी क्रम में संघर्ष कर रही है क्योंकि शुभमन गिल और केएल राहुल चोटिल हैं। इसलिए मुझे लगता है कि हम उन्हें पहले टेस्ट मैच में 4 दिनों में हरा देंगे। आपको शुरू में ही उन पर दबाव बनाना होगा और आपको आक्रामक होना होगा। मुझे लगता है कि भारत के पास अनुभव है, उनके पास सबकुछ है पर न्यूजीलैंड के खिलाफ सीरीज के बाद उनका मनोबल घटा है जिसका लाभ हमें मिलेगा।

आईपीएल नीलामी में इन स्पिनरों पर मोटी रकम लगा सकती हैं टीमें

साऊदी के जेद्दा में होने वाली आईपीएल मेगा नीलामी में सभी दस फ्रेंचाइजी खिलाड़ियों पर दांव लगाएंगी

एजेंसी ■ मुम्बई

इसी माह 24 और 25 नवंबर को साऊदी के जेद्दा में होने वाली आईपीएल मेगा नीलामी में सभी दस फ्रेंचाइजी खिलाड़ियों पर दांव लगाएंगी। वहीं इस मेगा ऑक्शन से पहले सभी 10 टीमें रिटने किए गए खिलाड़ियों की सूची बीसीसीआई को सौंप दी है। कई खिलाड़ी ऐसे भी रहे जिनका आईपीएल में बेहतरीन प्रदर्शन रहा लेकिन उन्हें टीमों ने रिलीज कर दिया। ऐसे ही खिलाड़ियों पर फ्रेंचाइजियों की नजरें रहेंगी। इसमें आर अश्विन, यजुवेन्द्र चहल, वाशिंगटन सुंदर के अलावा श्रीलंका के वानिंद हसरंसा जैसे स्पिनर शामिल हैं।

2025 सत्र के लिए कुल 1574 क्रिकेट खिलाड़ियों ने अपना नाम दर्ज कराया है पर बीसीसीआई ने 574 खिलाड़ियों के नाम को ही छांटा है। इसमें से 366 भारतीय जबकि 208 विदेशी खिलाड़ी है। तीन एसोसिएट देशों के खिलाड़ी भी इसमें शामिल हैं। 204 स्लॉट खाली हैं जिसमें 70 ओवरसीज क्रिकेटर्स के लिए है। वहीं 2 करोड़ की सबसे बड़ी रिजर्व राशि रखी गयी है।

आर अश्विन

आर अश्विन आईपीएल के इतिहास में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाजों की सूची में छठे नंबर पर हैं। उन्होंने 7.12 की इकॉनमी और 29.83 के औसत से अब तक 212 मैच में 180 विकेट लिए हैं। अश्विन 2022 से राजस्थान रॉयल्स से जुड़े थे, लेकिन इस बार फ्रेंचाइजी ने उन्हें रिलीज कर दिया। अश्विन इससे पहले सीएसके, राइजिंग सुपर जायंट्स, किंग्स इलेवन पंजाब और दिल्ली कैपिटल्स के लिए खेल चुके हैं। ऐसे में अब सभी फैंचाइजियों की उनपर नजरें रहेंगी।

युजवेंद्र चहल

आईपीएल इतिहास के सबसे सफल गेंदाबाज युजवेंद्र चहल को उनकी टीम राजस्थान रॉयल्स का रिटेन नहीं करना सबसे ज्यादा हैरानी की बात रही है। वह सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं, जिन्होंने 7.84 की इकॉनमी और 22.45 अब तक 205 मैच में 160 विकेट लिए हैं। वह राजस्थान रॉयल्स के साथ 2022 से जुड़े थे, लेकिन इस बार फ्रेंचाइजी ने उन्हें रिलीज कर दिया। युजवेंद्र चहल आईपीएल में इससे पहले 2014 से 2021 तक रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु का हिस्सा रहे थे।

वाशिंगटन सुंदर

वाशिंगटन सुंदर आईपीएल के इतिहास में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले 100 गेंदबाजों में शामिल हैं। उन्होंने 7.54 की इकॉनमी और 35.81 के औसत से अब तक 60 मैच में 37 विकेट लिए हैं। सुंदर आईपीएल 2022 से सनराइजर्स हैदराबाद के साथ जुड़े थे, लेकिन इस बार फ्रेंचाइजी ने उन्हें रिटेन नहीं किया। सुंदर ने आईपीएल में इससे पहले राइजिंग पुणे सुपरजायंट और आरसीबी के लिए खेला है।

मिचेल सैंटनर

न्यूजीलैंड के मिचेल सैंटनर ने आईपीएल इतिहास में 6.92 की इकॉनमी और 28.13 के औसत से अब तक 18 मैच में 15 विकेट लिए हैं। मिचेल सैंटनर आईपीएल 2018 से 2024 तक सीएसके का हिस्सा रहे। हालांकि, फ्रेंचाइजी ने उन्हें इस मेगा ऑक्शन से पहले ही रिलीज कर दिया। इस नीलामी में कई फ्रेंचाइजी उन्हें खरीदने के लिए ऊंची बोली लगा सकती हैं।

वानिंदु हसरंगा

वहीं वानिंदु हसरंगा आईपीएल के इतिहास में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाजों की सूची में 103वें नंबर पर हैं। उन्होंने 8.13 की इकॉनमी और 21.37 के औसत से अब तक 26 मैच में 35 विकेट लिए हैं। हसरंगा आईपीएल 2024 में सनराइजर्स हैदराबाद के साथ जुड़े थे, लेकिन चोटिल होने के कारण पूरे टूर्नामेंट से बाहर हो गए थे। इस बार फ्रेंचाइजी ने उन्हें रिलीज कर दिया।

पर्थ टेस्ट : भारतीय टीम में एक-एक स्थान के लिए कई खिलाड़ियों के बीच है मुकाबला

एजेंसी ■ पर्थ

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच 22 नवंबर से पर्थ में शुरु हो रहे बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के पहले टेस्ट के लिए कप्तान रोहित शर्मा और शुभमन गिल टीम से बाहर हैं। ऐसे में जसप्रीत बुमराह टीम की कप्तानी करेंगे जबकि केएल राहुल और यशस्वी जायस्वाल के पारी की शुरुआत करने की उम्मीद है। शुभमन के चोटिल होने के कारण बैकअप के रूप में देवदत्त पडिक्कल भी टीम में हैं। इसी प्रकार देखा जाये तो शीर्ष से मध्य क्रम तक एक-एक स्थान के लिए 3-3 खिलाड़ियों में मुकाबला है। पारी की शुरुआत के लिए केएल राहुल की अभिमन्यु ईश्वरन के साथ टक्कर है हालांकि राहुल की दावेदारी मजबूत है। वहीं पडिक्कल को भी अवसर मिल सकता है। वहीं चौथे नंबर पर विराट कोहली की जगह पक्की है। इसके बाद मध्यक्रम के लिए नीतीश रेड्डी, सरफराज खान और ध्रुव जुरेल के बीच एक जगह के लिए मुकाबला है। ऑस्ट्रेलिया-ए के खिलाफ काफी रन बनाने के कारण जुरेल की दावेदारी तगड़ी है। स्पिन ऑलराउंडर के तौर पर वाशिंगटन सुंदर, रविंद्र जडेजा और अश्विन में मुकाबला है जबकि विकेटकीपर के रूप में ऋषभ पंत का उतरना तय है। तेज गेंदबाज के तौर पर जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा के अलावा हर्षित राणा और आकाश दीप में से किसी एक को अवसर मिल सकता है। यह भी हो सकता है कि दो स्पिनर और 3 तेज गेंदबाज उतरें।

भारतीय टीम इस प्रकार है- रोहित शर्मा/केएल राहुल/अभिमन्यु ईश्वरन, यशस्वी जायसवाल, शुभमन गिल/देवदत्त पडिक्कल, विराट कोहली, नीतीश रेड्डी/सरफराज खान/ध्रुव जुरेल, वाशिंगटन सुंदर/रविंद्र जडेजा/अश्विन, ऋषभ पंत, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा, हर्षित राणा/आकाश दीप।

पृथ्वी सैयद मुश्ताक टूर्नामेंट के लिए मुम्बई टीम में शामिल, श्रेयस करेंगे कप्तानी

एजेंसी ■ मुम्बई

सैयद मुश्ताक अली टी20 टूर्नामेंट के लिए श्रेयस अय्यर मुंबई टीम के कप्तान होंगे। इस टूर्नामेंट के लिए मुम्बई की 17 सदस्यीय टीम में बल्लेबाज पृथ्वी शॉ को शामिल किया गया है पर सूर्यकुमार यादव को नहीं लिया गया है। ये टूर्नामेंट 23 नवंबर से 15 दिसंबर तक खेला जाएगा। पृथ्वी को हाल ही में वजन अधिक होने के कारया मुंबई रणजी टीम से बाहर कर दिया गया था पर अब उनकी वापसी हुई है। टीम में अनुभवी बल्लेबाज अजिंक्य रहाणे को भी शामिल किया गया है। इसके अलावा बल्लेबाज सिद्धेश लाड भी टीम में शामिल हैं। सूर्यकुमार निजी कारणों की वजह से इस टूर्नामेंट से बाहर हैं। इस टूर्नामेंट में कप्तानी कर रहे अय्यर का लक्ष्य बेहतर प्रदर्शन कर भारतीय टीम में वापसी करना रहेगा। इस रणजी ट्रॉफी सत्र में उन्होंने 90.40 की औसत से 452 रन बनाए हैं जिसमें दो शतक शामिल हैं। इस बल्लेबाज ने ओडिशा के खिलाफ 233 रन (228 गेंद, 24 चौके, नौ छक्के) की तेज पारी खेली और फिर महाराष्ट्र के खिलाफ 142 रन (190 गेंद, 12 चौके, चार छक्के) बनाकर मुंबई की लगातार दो जीत में अहम भूमिका निभाई। वहीं पृथ्वी को इससे पहले फिटनेस और अनुशासनहीनता के कारण रणजी ट्रॉफी में शामिल नहीं किया गया था। इसके अलावा ऑस्ट्रेलिया में भारत ए के स्पिन गेंदबाजी ऑलराउंडर तनुश कोटियन को भी टीम में जगह मिली है।

मुंबई टीम इस प्रकार है

श्रेयस अय्यर (कप्तान), पृथ्वी शॉ, अंगकृष रघुवंशी, जय बिस्टा, अजिंक्य रहाणे, सिद्धेश लाड, सूर्यांश शेडगे, साईराज पाटिल, हार्दिक तामोरे (विकेटकीपर), आकाश आनंद (विकेटकीपर), शम्स मुलानी, हिमांशु सिंह, तनुश कोटियन, शार्दुल ठाकुर, मोहित अवस्थी, रॉयस्टन डायस, जुनेद खान।

पडिक्कल पहले टेस्ट के लिए बैकअप के तौर पर भारतीय टीम के साथ रहेंगे

पर्थ। यहां मेजबान ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 22 नवंबर से शुरु होने वाले बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के पहले मैच में कप्तान रोहित शर्मा और शुभमन गिल नहीं खेलेंगे। रोहित अपने दूसरे बच्चे के जन्म के कारण अभी अपने परिवार के साथ हैं। वहीं शुभमन चोटिल होने के कारण बाहर हैं। शुभमन के अंगूठे में फ्रैक्चर है। ऐसे में विकल्प के तौर पर टीम ने बल्लेबाज देवदत्त पडिक्कल को बैकअप के तौर पर रखा है। इसी कारण पडिक्कल को अभी ऑस्ट्रेलिया में रोक लिया है। पडिक्कल यहां भारत ए की ओर से ऑस्ट्रेलिया ए के खिलाफ सीरीज खेल रहे थे। सीरीज समाप्त होने के बाद उनको छोड़कर बाकि टीम स्वदेश लौट गयी है। एक रिपोर्ट के अनुसार प्रबंधन ने पडिकल को सीनियर टीम के लिए बैकअप के रूप में रोका है। ऑस्ट्रेलिया ए के खिलाफ अनऑफिशियल हालांकि सीरीज में उनका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा था।

टूरिन में इटली के टेनिस स्टार जैनिक सिनर एटीपी फाइनल्स में जीत के बाद ट्रॉफी के साथ नजर आये।

मैक्सवेल पंजाब किंग्स के कप्तान भी रहे थे पर मेंटोंर वीरन्द्र सहवाग से मतभेद के बाद उन्हें टीम छोड दी

सहवाग से मतभेद के बाद पंजाब किंग्स से अलग हुए थे मैक्सवेल

एजेंसी ■ मुम्बई

ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर ग्लेन मैक्सवेल ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में पंजाब किंग्स के लिए खेलते हुए कई रिकॉर्ड बनाए हैं। मैक्सवेल पंजाब किंग्स के कप्तान भी रहे थे पर मेंटोंर वीरन्द्र सहवाग से मतभेद के बाद उन्हें टीम छोड दी। वह 2014 में किंग्स इलेवन पंजाब में शामिल हुए थे। उनकी टीम तब फाइनल में पहुंची थी पर वहां केकेआर से हार गयी गई। मैक्सवेल ने इस आईपीएल में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 552 रन बनाए थे। पंजाब के साथ अपने अपने सफर को याद करते हुए मैक्सवेल ने कहा कि हम उस समय अंतिम ओवर में हार गए थे। इस क्रिकेटर ने कहा कि आपका सफर कितना भी अच्छा क्यों न हो पर ट्रॉफी के बिना सब बेकार है। साल 2014 के बाद पंजाब का प्रदर्शन गिर गया और वह अंक तालिका में आखिरी स्थानों पर रही। मैक्सवेल ने इसको लेकर कहा कि तब टीम के लिए कठिन समय था और एक युवा खिलाड़ी के रूप में उनके लिए इसे स्वीकार करना मुश्किल रहा था। 2017 में मैक्सवेल की एक बार फिर पंजाब टीम में वापसी हुई। तब सहवाग टीम मेंटर बन गये थे। वहीं मैक्सवेल को कप्तानी मिली। मैक्सवेल ने कहा कि टीम बनते ही स्पष्ट हो गया था कि इसपर सहवाग का प्रभाव है। उन्होंने कोच जे अरुणकुमार के साथ मिलकर फैसले लेने की जिम्मेदारी ली, जिससे खिलाड़ियों और कोचों के बीच भ्रम पैदा हो गया। जिसका प्रभाव टीम पर पड़ा। मैक्सवेल ने कहा कि एक मुकाबले में इशांत शर्मा को आखिरी समय पर टीम में जगह दे दी गई जोकि निर्णय लेने में अव्यवस्था को दिखाता था। टीम पर सहवाग की पकड़ बढ़ती गई। जिससे उनके बीच मतभेद भी बढ़ने लगे। और निराशाजनक सीज़न के बाद मैक्सवेल और सहवाग के बीच तनाव चरम पर पहुंच गया। मैक्सवेल के अनुसार सहवाग ने सार्वजनिक रूप से उनकी आलोचना की थी जो सही नहीं था। मैक्सवेल ने साझा किया कि यह अप्रिय था, खासकर जब मुझे लगा कि हम अच्छी शर्तों पर अलग हुए हैं। उस घटना के बाद दोनों ने फिर कभी बात नहीं की और मैक्सवेल ने फ्रेंचाइजी मालिकों को सूचित किया कि अगर सहवाग जारी रहेगा तो वह चले जाएंगे।

कुसल ने दूसरे एकदिवसीय में श्रीलंका को जीत दिलायी

पल्लेकेले। कुसल मेंडिस की शानदार पारी से मेजबान श्रीलंका ने दूसरे एकदिवसीय क्रिकेट मुकाबले में न्यूजीलैंड को तीन विकेट से हरा दिया। इस मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए न्यूजीलैंड टीम 45.1 ओवर में ही 209 रनों पर आउट हो गयी। इस प्रकार श्रीलंकाई टीम को जीत के लिए 210 रनों का लक्ष्य मिला। इसके बाद लक्ष्य का श्रीलंकाई टीम ने अपने शुरुआती पांच विकेट 93 रनों के अंदर ही खो दिये पर इसके बाद कुशल ने एक छोर संभाले रखा और नाबाद 74 रन बनाकर अपनी टीम को लक्ष्य तक पहुंचा दिया। इस जीत के साथ ही मेजबान श्रीलंकाई टीम ने एकदिवसीय सीरीज में 2-0 की अजेय बढ़त हासिल कर ली। इस मैच को बारिश की बाधा के कारण घटाकर 47-47 ओवर का कर दिय गया था। इसमें पहले बल्लेबाज करते हुए कीवी टीम 47 ओवर भी नहीं खेल पाई। श्रीलंका ने उसे 45.1 ओवर में ही आउअ कर दिया। पहले बल्लेबाजी करते हुए कीवी टीम ने 98 रन पर 4 विकेट खो दिये थे पर इसके बाद मार्क चैपमैन 76 और मिचेल हेल 49 ने स्कोर 200 रन के ऊपर पहुंचाया। वहीं लक्ष्य का पीछा करने के दौरान श्रीलंकाई टीम ने जब पांच विकेट खो दिये तब कीवी टीम की जीत की उम्मीदें बनने लगीं पर कुसल ने उसके अरमानों पर पानी फेर दिया। कुसल ने 74 रन बनाकर टीम को जीत दिला दी।

भारत रत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय के पौत्र और बीएचयू के चांसलर जस्टिस गिरिधर मालवीय का सोमवार सुबह 88 साल की उम्र में निधन हो गया। जस्टिस मालवीय पिछले कुछ महीनों से बीमार चल रहे थे। उनका निधन प्रयागराज के जार्ज टाउन स्थित आवास पर हुआ।

महाकुंभ में होगा लुप्त प्राय पक्षियों का भी संगम, दिखेगा अलौकिक दृश्य

वाइल्ड लाइफ की टीम विदेशी मेहमानों की निगरानी में जुटी, दुनिया में सबसे तेज रफ्तार में उड़ने वाले पेरेग्रीन का इंतजार

एजेंसी ■ प्रयागराज

अद्भुत महाकुंभ का साक्षी बनने लुप्त प्राय इंडियन स्कीमर का 150 जोड़ा यहां आ चुका है।

संगम की रेती पर रंग बिरंगे इन मेहमानों की कलरव गंगा मइया की कल कल से मिलकर अलौकिक राग छेड़ रही है। इसी बर्ड साउंड थेरेपी के लिए देश विदेश से लोग आने लगे हैं। अभी दुनिया में सबसे तेज उड़ान वाले पेरेग्रीन फाल्कन का भी इंतजार किया जा रहा है। जापान और चीन की बुलेट ट्रेन से तेज रफ्तार वाला यह पक्षी 300 किमी प्रति घंटे की रफ्तार में हवा से बातें करता है। संगम क्षेत्र में यह अलौकिक दृश्य प्रदेश में इको टूरिज्म को बढ़ावा देने के प्रयासों को बढ़ावा दे रहा है।

वन विभाग भी इस अवसर को महाकुंभ से पूर्व बर्ड फेस्टिवल आयोजित कर सेलिब्रेट करने जा रहा है। प्रयागराज में वन विभाग के आईटी हेड आलोक कुमार पांडेय ने बताया कि महाकुंभ से पहले ही बड़ी संख्या में अप्रवासी पक्षी प्रयागराज आ रहे हैं। इनके साथ लुप्तप्राय इंडियन स्कीमर और साइबेरियन सारस भी बड़ी संख्या में हैं। इतनी बड़ी तादात में आने वाले देशी और विदेशी पक्षियों की गणना के लिए वाइल्डलाइफ की टीम लगाई गई है जो दिनरात इन पक्षियों की विशेष निगरानी कर रही है। वाइल्डलाइफ के सामुदायिक अधिकारी केपी उपाध्याय ने बताया कि दुनिया भर में लुप्त प्राय इंडियन स्कीमर करीब 150 से अधिक के जोड़ों में संगम किनारे आ चुकी हैं।

महाकुंभ की बढ़ाएंगे शोभा

महाकुंभ की शुरुआत से पहले ही इतनी बड़ी संख्या में संगम किनारे पहुंचे ये पक्षी देश-विदेश से आने वाले लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बन चुके हैं। इंडियन स्कीमर फिलहाल रेत के टीले पर सुबह शाम आपको टहलते हुए आसानी से दिख जाते हैं। यहां मां गंगा के किनारे शेड्यूल वन की इंडियन स्कीमर, साइबेरियन, ब्लैक क्रेन, सारस जैसी 90 से अधिक प्रजातियों के पक्षी फिलहाल महाकुंभ के स्वागत के लिए आ गए हैं। अभी दो साल पहले प्रयागराज में पेरेग्रीन फाल्कन को भी देखा जा चुका है जिसके महाकुंभ के दौरान पहुंचने की उम्मीद की जा रही है। यह दुनिया का सबसे तेज उड़ने वाला पक्षी है, जिसकी रफ्तार जापान और चीन की बुलेट ट्रेन से भी अधिक मानी जाती है।

दिखाई दे सकती है रॉकेट बर्ड

दुनिया में सबसे तेज गति से उड़ने वाला पक्षी पेरेग्रीन फाल्कन भी महाकुंभ के दौरान संगम तट पर देखा जा सकता है। ये बाज की ही एक प्रजाति है। इसकी उड़ान की रफ्तार 300 किमी प्रति घंटे से भी अधिक होती है। इसे रॉकेट बर्ड भी कहते हैं। यह आम तौर पर उत्तरी अमेरिका में मिलता है। इसीलिए इसको जापान और अमेरिका की बुलेट ट्रेन से भी ज्यादा तेज उड़ने वाला पक्षी माना जाता है। पक्षी वैज्ञानिकों के अनुसार वर्ष 2022 में इसे संगम के किनारे देखा गया था। माना जा रहा है कि महाकुंभ तक यह संगम की शोभा को बढ़ाएगा।

ब्रीफ न्यूज

लखनऊ के चार क्रिकेटरों की आईपीएल में लगेगी बोली

लखनऊ। राजधानी लखनऊ के चार क्रिकेटरों की आईपीएल ऑक्शन में बोली लगेगी। इसमें जीशान अंसारी (24 वर्ष), कृतज्ञ सिंह (24 वर्ष), विप्रज निगम (20 वर्ष) और नमन तिवारी (19 वर्ष) हैं। अगर सब कुछ आशा के अनुरूप रहा तो शहर के चारों युवा क्रिकेटर इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में जलवा बिखेरते दिखेंगे। नमन तिवारी को छोड़कर तीनों खिलाड़ी रणजी ट्रॉफी में यूपी का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। बीते अगस्त-सितंबर माह में शहर के अटल बिहारी वाजपेयी इकाना स्टेडियम में आयोजित यूपी टी-20 में इन खिलाड़ियों ने दमदार उपस्थिति दर्ज कराई, जिसके आधार पर चारों ने आईपीएल में खेलने के लिए मजबूत दावेदारी पेश की है। आईपीएल इतिहास में यह पहला मौका होगा, जब शहर चार खिलाड़ी दुनिया की सबसे बड़ी क्रिकेट लीग में खेलने की दावेदारी पेश करेंगे।

सपा का फार्मूला वन डिस्ट्रिक वन माफिया

वाराणसी। जब बंटे थे तो देश का विभाजन हुआ जो देश के विभाजन में हिस्सेदार थे आज वो समाजवादी पार्टी के साथ हैं। ये बातें कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने वाराणसी में कही। इन्होंने समाजवादी पार्टी पर हमला बोलते हुए कहा कि जो पीडीए कहते हैं वो बांटने की बात ही तो कहते हैं। ये समाज को बांटने की साजिश। इन्होने कहा कि सच्चाई ये है सपा पांच बार इस राज्य में आई यूपी को मटियामेट कर दिया। ये वन डिस्ट्रिक वन माफिया चलाते थे सीएम ने सही कहा है बंग्लादेश और कनाडा के भीतर क्या हो रहा है जनता देख रही है और जनता इसे गंभीरता से लेगी।

पत्नी से झगड़ा हुआ फिर तलवार उठाई और काट दिया गला

बांदा। जिले में एक व्यक्ति ने कथित तौर पर अपनी 30 साल की पत्नी की तलवार से गला काटकर हत्या कर दी। घटना मरौली गांव में हुई। थाना प्रभारी संदीप कुमार ने बताया कि दीपू सिंह (33) ने अपनी पत्नी प्रियंका पर तब हमला किया, जब वे दोनों अपने घर पर अकेले थे। कुमार के अनुसार, दीपू शराब का आदी था और कपल के बीच कुछ विवाद था। उन्होंने बताया कि हमले में पत्नी की तुरंत ही मौत हो गई और उसका पति मौके से भाग गया।घरेलू बहस में निर्मम हत्या का ये कोई पहला मामला नहीं है बल्कि आए दिन ऐसे कई मामले सामने आ रहे हैं। बादली इलाके में मामूली विवाद के बाद पति ने चाकू से गोदकर पत्नी की हत्या कर दी।

झांसी अग्निकांड: अब तक एक एफआईआर भी नहीं

12 बच्चों की मौत : जांच पर जांच... नहीं आई किसी पर आंच

बच्चों की मौत को लेकर विपक्षी दल सरकार को घेर रहे, इलेक्ट्रिकल सेफ्टी की वजह से ज्यादातर घटनाएं हो रही

सत्ता सुधार ■ झांसी

झांसी के महारानी लक्ष्मीबाई मेडिकल कॉलेज में अग्निकांड की घटना के 48 घंटे बाद भी कोई एफआईआर दर्ज नहीं कराई गई। इसके अलावा घटना को लेकर अस्पताल के किसी कर्मचारी की जवाबदेही भी तय नहीं की गई। जबकि घटना की एक जांच पूरी हो चुकी है।

अन्य जांचें जारी हैं। मेडिकल कॉलेज के एसएनसीयू वार्ड में शुक्रवार की रात भीषण आग लग गई थी। घटना में 10 बच्चों की मौके पर ही मौत हो गई थी, जबकि एक नवजात ने रविवार को दम तोड़ दिया। जबकि एक और नवजात ने सोमवार को दम तोड़ दिया। 12 नवजात की मौत हो चुकी है। इस घटना की मंडलायुक्त द्वारा जांच पूरी कर रिपोर्ट शासन को भेज दी गई है। घटना को लेकर मेडिकल के किसी कर्मचारी, अधिकारी व अन्य किसी की अब तक जवाबदेही तय नहीं की गई है। यह स्थिति तब है, जब यह मामला लखनऊ से लेकर दिल्ली तक में गूंज रहा है और विपक्षी दल इसे मुद्दा बनाए हुए हैं। नवजातों की मौत को लेकर विपक्षी दल लगातार सरकार को घेर रहे हैं। घटना की जांच के लिए शासन ने चिकित्साशिक्षा महानिदेशक की अगुवाई में एक उच्च स्तरीय कमेटी का गठन किया था। कमेटी जांच के लिए सोमवार को मेडिकल कॉलेज पहुंच गई है। टीम ने जांच शुरू कर दी है।

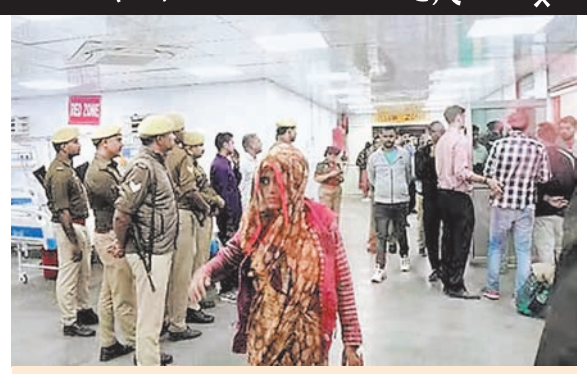

फायर ऑडिट में खामियां

मेडिकल कॉलेज में आग से बचाव के समुचित इंतजाम नहीं थे, इसकी पुष्टि फरवरी में हुई फायर ऑडिट रिपोर्ट में हुई है। इन कमियों को दूर करने के लिए कॉलेज प्रशासन ने शासन को एक करोड़ रुपये का प्रस्ताव बनाकर भेजा था। उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने मेडिकल कॉलेज का निरीक्षण करने के बाद बताया था कि फरवरी में मेडिकल कॉलेज की फायर ऑडिट हुई और जून में मॉक ड्रिल कराया गया था।

वार्ड में 49 बच्चे थे भर्ती

झांसी महारानी लक्ष्मीबाई मेडिकल कॉलेज में लगी आग की जांच के लिए शासन की टीम भी पहुंच गई है। अब सोमवार को एक और बच्चे की मौत हो गई। यह बच्चा जालौन जिले के रहने वाले विशाल की पत्नी मुस्कान का है। जन्म से गंभीर बीमारी से ग्रस्त होने पर उसे मेडिकल में भर्ती कराया गया था। घटना के समय वार्ड में 49 बच्चे भर्ती थे, जिनमें से 39 बच्चों को रेस्क्यू कर बाहर निकाला गया था।

डिप्टी सीएम ने अफसरों के साथ की बैठक

इधर, झांसी के मेडिकल कॉलेज में हुए अग्निकांड के बाद यूपी के डिप्टी सीएम व स्वास्थ्य मंत्री ब्रजेश पाठक ने सोमवार को लखनऊ में अफसरों के साथ बैठक की। इस दौरान उन्होंने अफसरों से चर्चा की। बैठक के बाद मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि हम अफसरों के साथ पुख्ता रणनीति बना रहे हैं। 19 दिसंबर 2023 को सेफ्टी ऑडिट कराने का निर्देश दिया गया था। वहीं, प्रमुख सचिव ने कहा कि टीम जांच की जा रही है। इलेक्ट्रिकल सेफ्टी की वजह से ज्यादातर घटनाएं हो रही हैं। इसे लेकर सभी जिलों को अलर्ट किया गया है।

जल गए दो करोड़ के उपकरण

झांसी मेडिकल कॉलेज की एसएनसीयू में लगी आग से करीब दो करोड़ के जीवनरक्षक उपकरण जल गए हैं। मेडिकल कॉलेज के डॉक्टरों के अनुसार एसएनसीयू में नवजात शिशुओं की हालत ज्यादा खराब होने पर ही भर्ती किया जाता है। प्राचार्य डॉ. एनएस सेंगर ने बताया कि वार्ड में बच्चों के उपचार के लिए उच्च गुणवत्ता के आठ वेंटिलेटर, बबल, सी-पैप, एचएफएनसी (हाईफ्लो नैच्युरल कैंडुला) मशीन, एचएफओ, 18 क्रेडल आदि मशीनें थीं जिनकी कीमत दो करोड़ रुपये से ज्यादा है। सभी मशीनें जल गई हैं।

तैयार किया गया 10 बेड का एसएनसीयू

झांसी अग्निकांड में राख हो गए उपकरणों के बाद अब मेडिकल कॉलेज के पीआईसीयू में ही 10 बेड का नवजात शिशु गहन चिकित्सा केंद्र स्थापित कर दिया गया है। यहां पर जन्म के बाद गंभीर स्थिति वाले नवजातों को भर्ती किया जा सकेगा। साथ ही अग्निकांड के बाद यहीं पर शिशु शिफ्ट कर दिए गए हैं। आग लगने की घटना के बाद बचाए गए नवजातों को पहले इमरजेंसी में भर्ती कराया गया था। फिर वहां से पीआईसीयू में एसएनसीयू तैयार होने के बाद शिफ्ट किया गया।

यूपी एटीएस ने 30 साल से फरार आतंकी को किया गिरफ्तार

1993 में देवबंद में किया था विस्फोट एटीएस ने बिछाया जाल

1994 में जमानत के बाद फरार हो गया था आतंकी मुस्तफा बानी

एजेंसी ■ सहारनपुर

30 साल से फरार चल रहे आतंकवादी नजीर अहमद उर्फ मुस्तफा वानी उर्फ जावेद इकबाल को एटीएस देवबंद ने जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर से गिरफ्तार किया। मुस्तफा वानी 1993 में देवबंद में हुए विस्फोट का मुख्य आरोपित था और 1994 में कोर्ट से जमानत मिलने के बाद फरार हो गया था। तब से एटीएस और स्थानीय पुलिस उसकी तलाश में जुटी हुई थी। यह गिरफ्तारी आतंकवाद के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान में एक अहम सफलता मानी जा रही है। मुस्तफा वानी ने 1993 में देवबंद के यूनियन चौराहे पर पुलिसकर्मियों पर हैंड ग्रेनेड फेंका था, जिससे दो पुलिसकर्मी और चार आम नागरिक घायल हो गए थे। इस घटना के बाद वानी पर देवबंद पुलिस ने एक बड़ा केस दर्ज किया था, लेकिन वह जमानत मिलने के बाद फरार हो गया। एटीएस की विशेष टीम उसे पकड़ने के लिए कई वर्षों से लगातार प्रयासरत थी। वानी फरार होने के बाद अपना नाम और हुलिया बदलकर अलग-अलग स्थानों पर छिपता रहा। वह सुरक्षा बलों से बचने के लिए विभिन्न स्थानों पर अपनी नई पहचान के जरिए रह रहा था। गिरफ्तारी के बाद एटीएस ने उसे देवबंद थाना पुलिस के हवाले कर दिया है। वानी की गिरफ्तारी पर सहारनपुर पुलिस ने 25 हजार का इनाम भी घोषित किया था, जिसे एटीएस ने प्राप्त किया।

वानी श्रीनगर में पकड़ाया

सहारनपुर के एसपी देहात सागर जैन ने इस गिरफ्तारी की पुष्टि करते हुए कहा कि एटीएस और देवबंद पुलिस ने संयुक्त कार्रवाई में मुस्तफा वानी को श्रीनगर से पकड़ा। वानी के खिलाफ कोर्ट ने स्थायी वारंट जारी किए थे, और उसकी गिरफ्तारी की राह में कोई रुकावट नहीं आई। आतंकवाद के खिलाफ स्थानीय पुलिस और एटीएस की कड़ी मेहनत का परिणाम सामने आया है। वर्षों तक फरार रहने के बावजूद एटीएस ने वानी को पकड़ने में सफलता हासिल की है और इस मामले को लेकर पुलिस अब आगे की कानूनी कार्रवाई में जुटी है।

सुनवाई: आरोपियों के घर बुलडोजर कार्रवाई पर हाईकोर्ट की राहत

बहराइच हिंसा केस में सरकार ने दाखिल किया जवाब

सत्ता सुधार ■ लखनऊ

यूपी में बहराइच में मूर्ति विसर्जन के दौरान हुई हिंसा के बाद जारी ध्वस्तीकरण नोटिसों पर हाईकोर्ट ने राहत दी है। जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट की लखनऊ पीठ ने अगली सुनवाई 27 नवंबर को नियत की है। मामले में राज्य सरकार ने कोर्ट से मांगा गया जवाब दाखिल कर दिया है। याची ने इसका प्रतिउत्तर भी पेश कर दिया है। सुनवाई के समय याची का प्रति उत्तर रिकॉर्ड पर नहीं था। इस पर कोर्ट ने अपने दफ्तर को इसे रिकार्ड पर रखने का आदेश दिया। हालांकि, मामले में कोर्ट ने अभी कोई अंतरिम आदेश नहीं दिया है। फिलहाल ध्वस्तीकरण नोटिस मामले में 27 नवंबर तक कथित अतिक्रमणकर्ताओं को राहत रहेगी। इससे पहले छह नवंबर को कोर्ट ने सुनवाई के दौरान राज्य सरकार को मौखिक निर्देश दिया था। सरकार फिलहाल ऐसी कोई कारवाई न करे, जो कानून सम्मत न हो। उधर, सरकारी वकीलों ने भी कानून सम्मत करवाई करने का आश्वासन दिया। कोर्ट ने मामले में राज्य सरकार को चार बिंदुओं पर जवाब दाखिल करने और याची को इन पर आपत्तियां दाखिल करने का समय दिया था। मुख्य न्यायमूर्ति अरुण भंसाली और न्यायमूर्ति जसप्रीत सिंह की खंडपीठ के समक्ष एसोसिएशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ सिविल राइट्स संस्था की जनहित याचिका सोमवार को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध थी। ध्वस्तीकरण नोटिसों को चुनौती देकर इन्हे रद्द करने के निर्देश देने का आग्रह किया गया है।

तीन लाख 15 हजार भक्तों ने किए काशी विश्वनाथ के दर्शन

लगी रहीं लंबी-लंबी कतार: भक्त बोले-हर हर महादेव

एजेंसी ■ वाराणसी

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष की द्वितीया पर श्री काशी विश्वनाथ का धाम श्रद्धालुओं से भर गया। सुबह की मंगला आरती से रात की शयन आरती तक सवा तीन लाख से ज्यादा श्रद्धालुओं ने दर्शन-पूजन किया। गेट नंबर चार और गंगा द्वार पर श्रद्धालुओं की भीड़ सबसे अधिक रही। भीड़ का आलम यह था कि विश्वनाथ गली में श्रद्धालुओं की लंबी कतार लगी रही। रविवार को मंगला आरती से पहले ही श्रद्धालु बाबा विश्वनाथ के दर्शन के लिए कतारबद्ध हो गए थे। बाबा की मंगला आरती में भी कई वीआईपी शामिल हुए। बाबा विश्वनाथ की मंगला आरती के बाद जैसे ही मंदिर के कपाट आम श्रद्धालुओं के लिए खुले तो पूरा प्रांगण हर-हर महादेव के जयघोष से गूंज उठा। कतारबद्ध होकर श्रद्धालुओं ने बाबा विश्वनाथ का दर्शन-पूजन किया। दिन चढ़ने के साथ ही श्रद्धालुओं की भीड़ भी बढ़ती गई। एक कतार बांसफाटक से आगे तो दूसरी कतार चौक थाने तक लग गई थी। दोपहर में भोग आरती के बाद श्रद्धालुओं की भारी भीड़ के कारण कुछ देर के लिए गोदौलिया से चौक तक जाम की स्थिति बन गई।

घाट की गलियां भी चोक हो गईं

वहीं, मीरघाट के रास्ते होकर गंगाद्वार की तरफ से जाने वाले रास्ते पर श्रद्धालुओं के कारण घाट की गलियां भी चोक हो गईं। देर शाम के बाद श्रद्धालुओं का दबाव कम होने के बाद स्थिति सामान्य हुई। रविवार को देव दीपावली के मुकाबले श्रद्धालुओं की भीड़ ज्यादा थी। देव दीपावली पर दो लाख 82 हजार श्रद्धालुओं ने दर्शन-पूजन किया था। मुख्य कार्यपालक अधिकारी विश्वभूषण मिश्र ने बताया कि देव दीपावली के बाद से लगातार दूसरे दिन भी दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ रही। भीड़ को देखते हुए बाबा विश्वनाथ के स्पर्श दर्शन पर रोक लगाई गई थी।

बैठक अखाड़ा परिषद का बड़ा बयान-संतों का धर्म हो जाएगा भ्रष्ट

महाकुंभ-2025 में मुसलमानों का प्रवेश हो वर्जित

एजेंसी ■ प्रयागराज

अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद अध्यक्ष रवींद्र पुरी ने कहा है कि महाकुंभ में मुसलमानों का प्रवेश वर्जित होना चाहिए। ऐसा न करने पर साधु और संतों का धर्म भ्रष्ट हो सकता है। थूक जिहाद के माध्यम से मुसलमान साधु-संन्यासियों का धर्म भ्रष्ट करने का प्रयास कर सकते हैं और खाने-पीने की चीजों में मिलावट कर सकते हैं। अखाड़ा परिषद की बैठक के बाद रवींद्र पुरी सोमवार को मीडिया से बातचीत कर रहे थे। अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष ने कहा कि क्या कोई गैर मुसलमान या हिंदू मक्का जा सकता है या वहां पर दुकान लगा सकता है। यदि नहीं तो यहां भी मुसलमानों को प्रवेश नहीं मिलना चाहिए। क्योंकि महाकुंभ सनातन धर्म का सबसे बड़ा समागम और महापर्व है।

पूरे देश से आ रहे तपस्वी

महंत रवींद्र पुरी ने कहा कि महाकुंभ में पूरे देश से संत, महात्मा और तपस्वी आ रहे हैं। प्रसाद, चाय, काफी, मिठाई या अन्य खाद्य पदार्थ में कोई ऐसा चीज मिलाई जा सकती है जिससे कि उनका धर्म भ्रष्ट हो जाए। इसका पता चलने पर विवाद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। कई प्रदेशों में इस तरह के मामले सामने आ चुके हैं और सोशल मीडिया पर इस तरह का वीडियो भी वायरल हो चुके हैं। इससे सबक लेते हुए सतर्क रहने और बैन लगाने की जरूत है। कहा कि मुसलमान ठेकेदारी करें, दूसरे सामानों का दुकान लगाएं लेकिन खाने पीने के सामानों को बेचने की अनुमति उन्हें न दी जाए।

देश-विदेश में गलत संदेश जाएगा

यहां पर माहौल बिगाड़ने के लिए गैर सनातन धर्म से ताल्लुक रखने वाले खास तौर पर मुस्लिम खाने पीने के सामानों में पेशाब या थूक मिला सकते हैं, जैसा कि कई प्रदेशों में हो चुका है। इससे सनातन धर्मावलंबियों का धर्म भ्रष्ट हो सकता है। इसका पता चलने पर साधु-संत ऐसे लोगों को मार सकते हैं, जिसका पूरे देश-विदेश में गलत संदेश जाएगा। इस तरह की स्थिति पैदा ही न हो इससे बेहतर है कि मुसलमानों को महाकुंभ में भोजन, नाश्ता, जूस या अन्य खाने पीने के सामानों का दुकान लगाने की अनुमति न दी जाए।

जनसभा में ओवैसी बोले- सपा हार मान चुकी अब जयंत को हराना

उपचुनाव: मीरापुर में सियासी दिग्गजों का जमावड़ा

एजेंसी ■ मुज

मुजफ्फरनगर में सोमवार को मीरापुर उपचुनाव को लेकर सियासी दिग्गजों का जमावड़ा लगा रहा। यहां जनसभा को संबोधित करने पहुंचे एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी मंच से जमकर गरजे। उन्होंने सपा मुखिया अखिलेश यादव पर खूब निशाना साधा तो वहीं कटेंगे तो बटेंगे वाले बयान को लेकर भी बात की। ओवैसी ने मीरापुर के ककरौली में कहा कि क्या मुख्यमंत्री झांसी में बच्चों की जान बचाने वाले याकूब के सामने बंटोगे तो कटोगे कह सकेंगे। भाजपा जहर फैलाने का काम कर रही है। महंगाई आसमान को छू रही है और मुख्यमंत्री बंटोगे तो कटोगे की बात कह रहे हैं। बीजेपी और सपा एक सिक्के के दो पहलू है। वक्फ का बिल काले कानून जैसा है। वक्फ कि संपत्ति चली गई तो कुछ नहीं बचेगा। कानून पास हुआ तो संपत्तियों पर डीएम का कब्जा हो जाएगा। उपचुनाव में सपा हार मान चुकी है, अब जयंत को हराना है। ककरौली की जनसभा में कहा कि मुजफ्फरनगर में जब दंगा हुआ तो प्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव थे। दंगा पीड़ित टेंट में रह रहे थे और सैफई में उत्सव मनाया जा रहा था। समाजवादी चुनाव हार चुकी है।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक गोपाल श्रीवास्तव, द्वारा मेसर्स डीबी कॉर्प लिमिटेड प्लॉट नं.36 इंडस्ट्रियल एरिया चनाटोरिया सागर (म.प्र.) से मुद्रित एवं तिरुपतिपुरम, अशोक विहार कॉलोनी के पीछे तीली वार्ड सागर, से प्रकाशित। स्थानीय संपादक-संजय कुमार गुप्ता*, मोबाईल न. 9424880832
सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल रहेगा। मोबाईल न. 9893126900, 9826384845, ई मेल- sattasudharbpl@gmail.com समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार। 0755-4002626, 4939910